श्रीः ।

# विज्ञान गीता ।

महाकवि केशवदासजी रचित ।

जिसमें

शिवाशिवके सम्वादमें महामोह और विवेक का युद्ध तथा स्पष्ट उदाहरणोंके द्वारा ज्ञानका निर्णय वर्णित है ।

जिसको

मुमुक्षुजनोंकेलाभार्थ

कविवर डुमरावँ निवासी नकछेदी तिवारीजीके द्वारा परिशोधित कराय ।

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई.

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रकट किया ।

भा॰ शु॰ संवत् १९५१ शके १८१६

श्रीः ।

# विज्ञानगीता ।

## महाकवि केशवदासजी रचित.

जिसमें

शिवाशिवके सम्वादमें महामोह और विवेक
का युद्ध तथा स्पष्ट उदाहरणोंके द्वारा
ज्ञानका निर्णय वर्णितहै ।

जिसको

मुमुक्षुजनोंकेलाभार्थ

खेमराज श्रीकृष्णदासने
मुम्बई
स्वकीय "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानेमें
छापकर प्रसिद्ध किया ।

श्रावण सं० १९५१ वि०

श्रीगणेशायनमः।

# अथ

# विज्ञान गीता।

## कविवर केशवदास कृत।

छप्पय–

ज्योति अनादि अनन्त अमित अद्भुत अरूप गुनि॥ परमानँद पावन प्रसिद्ध पूरण प्रकाश पुनि॥ नित्य नवीन निरीह निपट निर्वाण निरञ्जन॥ सम सर्व्वंग सर्व्वज्ञ चिन्त चिन्तत विद्वज्जन॥ वरणी न जाइ देखी सुनी नेति नेति भाषत निगम॥ ताको प्रणाम केशव करत अनुदिन करि संयम नियम॥ १॥

सवैया–सँग सोहतिहैं कमला विमला अमलामति हेतु तिहूँपुरको॥ भवभूष दुरन्तरनन्त हते दुख मोह मनोज महाजुरको॥ कहि केशव क्योंहूँ बने न निवारत जारत जोरनिहूँ उरको॥ अति प्रेमसों नित्य प्रणाम करै परमेश्वर को हरको गुरको॥ २॥

दोहा–केशव तुंगारण्य में, नदी बेतवै तीर॥
जहाँगीरपुर वहु वसै, पण्डित मण्डित भीर॥ ३॥

सवैया–ओड़छे तीर तरंगिणि बेतवै ताहि तरै नर केशव कोहै॥ अर्ज्जुनबाहु प्रवाह प्रवोधित रेवा ज्यौं राजन की रजमोहै॥ ज्योंतिजगै यमुनासी लगै जग लाल विलो-

चन पाप विपोहै ॥ सूरसुता शुभसंगम तुंग तरंग तरंगिणि गंगसी सोहै ॥ ४ ॥

नराच–तहाँ प्रकाश सो निवास मिश्र कृष्णदत्त को ॥ अशेष पंडिता गुणी सुदास विप्रभक्तको ॥ सुकाशिनाथ तस्यपुत्र विज्ञकाशिनाथ को ॥ सनाढ्य कुंभवारअंश वंश वेदव्यासको ॥ ५ ॥

दोहा–तिनके केशवदाससुत, भाषा कवि मतिमंद॥करी ज्ञानगीता प्रगट, श्रीपरमानँदकंद ॥ ६ ॥ देव देव भाषाकरैं नागनाग भाषाणि॥नरहो नरभाषा करी,गीताज्ञान प्रमाणि ॥ ॥ ७ ॥ मूढ़ लहै जो गूढमतु, अमित अनंत अगाधु ॥ भाषाकरि ताते कहों, क्षमियो बुध अपराधु ॥ ८ ॥

दण्डक–काम क्रोध लोभ मोह दंभादिक केशोराइ पाषण्ड अखण्ड झूठ जीतिबेकी रुचि जाहि ॥ पापके प्रताप ताके भोग रोग सोग जाके शोध्यो चाहै आधि व्याधि भावना अशेष दाहि ॥ जीत्यो चाहै इंद्रिगण भाँतिभाँति माया मनु लोपिकै अनेक भाव देख्यो चाहै एक ताहि ॥ जीत्यौ चाहै काल इहु देहु चाहै रह्यो गेहु सोई तौ सुनावै सुनै गुनै ज्ञान गीतिकाहि ॥ ९ ॥

दोहा–परमारथ स्वारथ दुओ, साधनकी आशक्ति ॥ पढ़ौ ज्ञानगीताहि तौ, जो चाहौ हरिभक्ति ॥१०॥ सुनो ज्ञानगीता विमति, छोड़ि देहु सब युक्ति ॥ रत्नाकर विज्ञानया मुक्तामणि की सुक्ति ॥११॥ वेद देखि ज्यों सुमृतिभव, सुमृ-

तिनि देखि पुरान ॥ देखि पुराणनि त्यौं करी, गीताज्ञानप्र-
-मान ॥ १२ ॥ सोरहसै बीते बरष, विमल सतसठा पा-
इ ॥ भई ज्ञानगीता प्रगट, सबहीको सुखदाइ ॥ १३ ॥
केशव ज्ञानसमुद्र की, मुनिजन लही न थाह ॥ मैं तामें
पैरन लग्यो, क्षमियो कविजन नाह ॥ १४ ॥ विदित ओ-
ड़छे नगरको, राजा मधुकर शाहि ॥ गहरवार काशीशर-
वि, कुल भूषण यश जाहि ॥ १५ ॥

विजय ॥ देव कुदेवनिके चरणोदक बोरचो सबै कलिको कुलमानी ॥ दारिद दुःख बहाइ दये दिन दीरघ दान कृपानके पानी ॥ लोकहिमें परलोक रची धरिदेह विदेहनि की रजधानी ॥ राजा मधूकर शाहि से और न रानी न और गणेशदे रानी ॥ १६ ॥ वापी बघेलको राज सुखायगो तोंबरक्षुद्र पठानी नठानी ॥ केशव तौर तरंगिनि पोखरि सूखि गई सिगरी बहु बानी ॥ शाहि अकब्बर अंकउदे मिटि मेघ महीपतिकी रजधानी ॥ उजागर सागर ज्यों मधुसाहिकी तेग बढ़्यो दिनहीं दिन पानी ॥ १७ ॥

दोहा ॥ दोऊ दीन पुकारहीं, जगमें जयकी कीर्त्ति ॥ कृष्णदत्त मिश्रहिदई, जिन पुराणकी वृत्ति ॥ १८ ॥ तिनके विरसिंहदेव सुत, प्रगट भयो रणरुद्र ॥ राजश्री जिन माथिलई, समर अनेक समुद्र ॥ १९ ॥

विजय ॥ जौन ज्यों पुंज पँवार पुवारसे तोंवर तूलके तूल उड़ाए ॥ सिंह ज्यों बाघ ज्यों कच्छप बाहु हते गज

ज्यों युवराज ढहाए ॥ केशवदास प्रकाश अगस्त्य ज्यों शोक अलोक समुद्र सुखाए ॥ वीरनरेशके खड्ग खुमानके विक्रम व्याल अनेक बिलाए ॥ २० ॥

दोहा ॥ वीरसिंह नृपकी भुजा, केशव यद्यपि तूल ॥ एक शाहिको शूलसी, एक शाहको फूल ॥ २१ ॥

दण्डक ॥ दानिनमें वलिसे विराजमान जिनिपाँहि भागिबेकोहै गतित विक्रम तनकसे ॥ सेवत जगत प्रमुदितनिकी मंडलीमें देखियत केशोदास सौनकशनकसे॥ जोधनिमें भरत भगीरथ सुरथ पृथु विक्रममें विक्रम नरेशके वनकसे ॥ राजा मधुकर शाह सुत राजा वीरसिंह राजनिकी मण्डलीमें राजत जनकसे ॥ २२ ॥

दोहा–द्विजन दिए सुखदानविनु, दानवेश निःकाम ॥ अभयदान देतुनखलक, निपरात्रिया रसकाम ॥ २३ ॥ कुलवल विक्रम दान वश, यश गुण गनत अलेष ॥ चतुर पंचषट्सहस मुख, कहि न जाइ सविशेष ॥ २४ ॥ भूषण सूरज वंशको, दूषण कलिको मानु ॥ दास एक द्विजजातिको, सबहीको प्रभु जानु ॥ २५ ॥

दंडक–केशोराइ राजा वीरसिंहहीके नामहिते अरि गजराजनिके मद मुरुझातहैं ॥ सजल जलद ऐसे दूरिते विलोकियत परदल दिलवल दलकेशे पातहैं ॥ भैरोंकेसे भूत भट जग घट प्रतिभट घट घट देखे वल विक्रम विलातहैं ॥ पीरी पीरी पेखत पताका पीरे होत मुख कारी कारी ढालें देखे कोरेई ह्वै जातहैं ॥ २६ ॥

सोरठा—एक समय नृपनाथ, सभामध्य बैठे सुमति ॥ बूझी उत्तम गाथ, कवि नृप केशवदाससे ॥ २७ ॥

नृपवीरसिंह उवाच ॥ कुण्डलिया—गंगादिक तीरथ जिते, गोदानादिकदान ॥ सुनी यथामति देवकी, महिमा वेद पुरान ॥ महिमा वेद पुराण सबै बहु भाँति बखानत ॥ यथाशक्ति सब करत सहितश्रद्धा गुणगानत ॥ यथाशक्ति सब करत भक्ति हरि मन वच अंगा ॥ चित्त न तजत विकार न्हात नर यद्यपि गंगा ॥ २८ ॥

केशव ॥ दोहा—वीर नरेश धनेश तुम, मोहिं जु बूझी गाथ ॥ सोई श्रीशिवको शिवा, बूझीही नृपनाथ ॥ २९ ॥

श्रीशिवउवाच ॥ तारकछन्द—सुनि शैलसुता सब धर्म्मते साँचे ॥ बहु वेद पुराणनिके रसराँचे ॥ मद क्रोध मनोज महातमछण्डे ॥ जबहीं करियै तबहीं फलु मण्डे ॥ ३० ॥

श्रीपार्वत्युवाच—सुनियै सुरनायक नायकभर्त्ता ॥ तुमही कर्तापरिपालकहर्त्ता ॥ कहियै किहिभाँति विकार नशावै ॥ जिव जीवतहीं परमानँदपावै ॥ ३१ ॥

श्रीशिव दोहा—जब विवेक हति मोहको, होई प्रबोध सँयुक्त ॥ तबहीं जानो जीवको, जगमें जीवनमुक्त ॥ ३२ ॥

श्रीपार्वत्युवाच ॥ तोमर—तुम सर्व्वदा सर्व्वज्ञ ॥ नर कहा जानहिं अज्ञ ॥ कहँ होत प्रगट प्रबोध ॥ प्रभु देहु जीव निसोधु ॥ ३३ ॥

श्रीशिव–सुनि प्रिये प्रेमनिधान, तुम विज्ञ विविध विधान ॥ वाराणशी सुप्रमान ॥ वहहै प्रबोध निधान ॥ ३४ ॥

वीरसिंह–दोहा ॥ केशव हमहिं विवेकको, महामोहको युद्ध ॥ वरणि सुनावहु होइ ज्यों, जीव हमारो शुद्ध ॥ ३५ ॥

इति श्रीचिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायांश्रीशिव पार्व्वत्युप्रश्नवर्णनंनामप्रथमःप्रभावः ॥ १ ॥

---

दोहा ॥ विशद द्वितीयप्रकाशमें, यह वर्णिवो प्रकाश ॥ कलह काम रतिको रुचिर,मंत्रविनोद विलास ॥ १ ॥ महादेवकी बात सब, कही सुनी कलिकाल ॥ केशवदास प्रकाशवश, उपजे शूल विशाल ॥ २ ॥ बात कही कलिकाल सब, कलह चल्यो उठि धाम ॥ महामोह पै वीचहीं, आवत देख्यो काम ॥ ३ ॥

सवैया–भूषण फूलनिके अँग अंग शरासन फूलनिको अंग सोहै ॥ पंकज चारु विलोचन चूमत मोहमयी मदिरा रुचि रोहै ॥ बाहुलता रति कण्ठ विराजत केशव रूपको रूपक जोहै ॥ सुन्दरश्याम स्वरूपसने जगमोहन ज्यों जगके मन मोहै ॥ ४ ॥

दोहा–कलह कह्यो कलिको कह्यो, करि प्रणाम अवदात ॥ काशी उदौ प्रबोधको, सुनियतुहै मन तात ॥ ५ ॥

काम–हीरछंद ॥ देव दनुज सिद्ध मनुज संयम व्रत धारहीं ॥ वेदविहित धर्म सकल करि करि मनहारहीं ॥ मो-

हिं निकट तोहिं प्रगट बंधु अरु विरोधको ॥ शुद्ध सदय उदय हृदय होइ क्यों प्रबोधको ॥ ६ ॥

रति ॥ दोहा–प्राणनाथ सुनि प्रेमको, जग जन कहत अनेक ॥ महामोह नृपनाथको, सुनियत बड़ो विवेक ॥ ७॥

काम ॥ भुजंगप्रयात–सजौं फूलकेहैं धनुर्ब्बाण मेरे ॥ करों शोधिकै जीव संसार चेरे ॥ गनैको बली वीर वज्री विकारी ॥ भए वश्य शूली हली चक्रधारी ॥ ८ ॥

रति ॥ दोहा–सब विधि यद्यपि सर्वदा, सुनियत पिय यह गाथ ॥ बहुसहाय संपन्न अरि, शंकनीयहै नाथ ॥ ९ ॥

काम ॥ विजय–शील बिलात सबै सुमिरे अवलोकत छूटत धीरज भारो ॥ हासहि केशवदास उदास सबै व्रत संयम नेम निहारो ॥ भाषण ज्ञान विज्ञान छिपे क्षितिको वपुरा सो विवेक विचारो ॥ या सिगरे जग जीतनको युवती मय अद्भुत अस्त्र हमारो ॥ १० ॥

रति॥ दोहा–संतत मोह विवेक को,सुनियतु एकै वंश॥ वंश कहा गजगामिनी, एकै पिता प्रशंश ॥ ११ ॥

काम ॥ रूपमालाछन्द–ईश माय विलोकि के उपजाइयो मन पूत ॥ सुंदरी तिहि द्वै करी तिहि ते त्रिलोक अभूत ॥ एक नाम निवृत्ति है जग एक प्रवृति सुजान ॥ वंश द्वै ताते भयो यह लोक मानि प्रमान ॥ १२ ॥

योगवाशिष्ठयथा श्लोक–चित्तंचेतोमनोमाया प्राकृतश्चेतनामपि ॥ परस्मात्कारणादेव मनःप्रथमसुच्यते ॥ १३॥

दोहा–महामोह दे आदि हम, जाए जगत प्रवृत्ति ॥
सुमुखि विवेकहि आदि दै,प्रगटत भई निवृत्ति ॥ १४ ॥

रति ॥ दोधक–जौं कुल एकरु एकपिता ज्यौं ॥तौ अति प्रतिम प्रेम निशायों ॥ आपुस माँझ सहोदर साँचे ॥ क्यों तुम वीर विरोधनि राँचे ॥ १५ ॥

काम ॥ वैर विमातनि में चलि आयो ॥ आजु नयो हमहीं न उपायो॥ देव अदेव बड़े अरु बारे ॥ जूझत पन्नग पक्षि विचारे ॥ १६ ॥ मातु पितै सबही हम भावैं ॥ वै कलिमध्य प्रवेश न पावैं ॥ है उनसों जग काजु न काहू ॥ तातें वै चाहत मारयो पिताहू ॥ १७ ॥

रति ॥ दोहा–ऐसेही पिय कहत हौ, कै पायो कछुभेद ॥
करिहै कौन उपाइ करि, तुव कुलको उच्छेद ॥ १८ ॥

काम–एक मंत्र अति गूढ़है, मोसों कहिये कन्त ॥
कहिये कैसे त्रियनिसों, दारुणकर्म दुरन्त ॥ १९ ॥

रति ॥ सोरठा–यद्यपि ऐसी बात, तदपि कहो पिय करि कृपा ॥ महाराज मनजात, तुम सर्वग सर्वज्ञ हौ ॥२०॥

काम ॥ रूपमालाछन्द–भामिनी भव भावना तिहि भूलि चित्त न राँचु ॥ किं प्रवृत्तिनिको गनै वह झूँठ होइ किसाँचु ॥ रति किंदशा वह किंच दन्ति कहौहै एकहि अंश ॥ मृत्युमूरति राक्षसी इक होइगी ममवंश ॥ २१ ॥

रति॥नगस्वरूपिणीछन्द-प्रसिद्ध पापचारिणी॥अशेष वंश हारिणी॥विवेक सम्मता भई॥ किधों असम्मता मई ॥२२॥

काम ॥ दोहा—करै विनाश जु औरको, ताको नित्य विनाश॥केशवदास प्रकाश जग, ज्यौं यदुवंश विनाश॥२३॥

केशव ॥ दोहा—काम कह्यो तब कलहसों, दिल्ली नगरी जाइ ॥ दंभहि दे उपदेश तब, देखहि प्रभुको पांइ ॥ २४ ॥

इति श्रीचिदानन्दमग्नायांविज्ञानगीतायां कलह रतिकाम-सम्वादवर्णनंनामद्वितीयः प्रभावः ॥ २ ॥

---

दोहा—या तीसरे प्रकाश में, दीह दंभ आकारु ॥ अहंकार अरु दंभ को,कहिबो मिलनविचारु ॥ १ ॥ दंभ विलोक्यो कलह जो, दिल्लीनगरी जाइ ॥ वंचतु जग जैसे फिरतु मोपै वर्णि न जाय ॥ २ ॥

मरहट्टा—काम कुतूहल में विलसै निशवार बधू मनमानहरे॥प्रात अन्हाइ बनाइ दै टीकनि उज्ज्वल अम्बर अंग धरे॥ ऐसे तपोतप ऐसे जपोजप ऐसे पढ़ो श्रुति शारुशरे ॥ ऐसो योग जयो ऐसे यज्ञ भयो बहु लोगनिको उपदेश करे ॥३॥

दोहा ॥ कलह कह्यो कलिको कह्यो, सबै दंभसोंजाइ ॥ दंभ तबहिं नृपनाथ सों, जाइ कह्यो अकुलाइ॥४॥कलह गए तबवे गही,बासरकेआरंभ॥कालिन्दी सरिताहि को, उतरत देख्यो दंभ॥५॥जरत मनो अभिमान ते, ग्रसत मनो संसार ॥ निन्दत है त्रैलोक को,हँसत विबुध परिवार ॥ ६ ॥

कामरूपमालाछन्द ॥ कबहूँ न सुन्यो कहूँ गुरुको कह्यो उपदेशु ॥ अज्ञ यज्ञ न भेद जानत धर्म्म कर्म्म न लेशु ॥ स्नान दान सयान संयम योग याग सँयोग ॥ ईशता तनु

गूढ़ जानत मूढ़ माथुर लोग ॥ ७ ॥ वेद भेद कछू न जानत घोष करत कराल ॥ अर्थ को न समर्थ पाठ पढ़ै मनो शुकबाल ॥ मेखला मृग चर्म्म संयुत अछत माल विशाल ॥ शीशपै बहुबार धारण भस्म अंगन डाल ॥ ठौर ठौर विराजहीं मठपाल युक्त कुतर्क ॥ घोष एक कहा रहो जा संगते बहु नर्क ॥ ८ ॥

दोहा–शूद्रनिसों मुद्रित करै, उर उदार भुज दण्ड ॥ शीश कर्ण कटि पानि कुश, दंभ परचोव प्रचण्ड ॥ ९ ॥

केशव ॥ दोधक–दंभहि देखिगयो जब नीरे ॥ हूं कृत सों बरज्यो मतिवीरे ॥

शिष्य–दूरि रहो द्विज धीरज धारो ॥ पाइँ पखारि इहाँ पशु धारो ॥ १० ॥

दंभउवाच ॥ दोहा–जानतहों दिल्ली पुरी, तुरुक बसत सब ठाँइ ॥ अतिथिनि को दीजतु न यह, आसन अर्घ सुभाइ ॥ ११ ॥

शिष्य ॥ तारकछन्द–कुल शील न कोविद जानियै जाको ॥ कहि क्योंकरि अर्च्चन आवत ताको ॥ सुधि मूढ़ सयान सुन्यो सबुतेरचो ॥ तुम काननहूँ न सुन्यो यश मेरचो ॥ १२ ॥

सरस्वतीछन्द–मायापुरी इक पावनी जग गौड़ देश प्रसिद्ध ॥ माता पिता मम धर्म संयुत लोक लोक प्रसिद्ध ॥ जाए सुपुत्र अनेक मैं तिनमहिं सुविज्ञहि युक्त ॥ विश्वंभरायल देव दक्षिण जानि जीवन मुक्त ॥ १३ ॥

दोहा—पाँयपखारि यहीं भयो, अहंकार अनुकूल ॥ बैठि दूरि द्विज जनि छुवो, गुरु को आसन मूल ॥ १४ ॥

सोरठा—परसि तुम्हारो गात, पथिक विलोकि प्रस्वेद कण ॥ जगस्वामीको गात, ज्यों न छुवो त्यों बैठिये ॥ १५ ॥

दोहा—प्रभु को करत प्रणाम जब, देव देव मुनि भाल ॥ छ्वै न सकत आसन क्षिती, मुकुट मणिन की माल ॥ १६ ॥

दंभउवाच ॥ सवैया—एक समै हम सत्यपुरी हि गए अवलोकन पाप प्रनाशन ॥ ब्रह्मसभामहँराइ उठी कहि केशव केवल पाप विनाशन ॥ देव सहाइक लोक विनाइक बैठिबेको हम ल्याइकै आसन ॥पावन बावनके पग को थल मोहिं बताइ दयो कमलासन ॥ १७ ॥

अहंकार॥विजय—काम न कामकी सुंदरताई पुरंदर की प्रभुता कहि को है ॥ बुद्धि के गंधु गणेश मै नाहिने को कुरखेत की बृद्धि हि टो है ॥ पीतकके तनतेजुरती कन बात मै पातक सों बरुसोहै॥ केतिक शुद्धि है गंगमें केशव सिद्धि महेश की मोहित मोहै ॥ १८ ॥

दोहा—दंभ लोभ हँसि हँसि गहे, अहंकारके पाँइ ॥ अहंकार आशिष दई, शोभन सुखद सुभाइ ॥ १९ ॥

अहंकार॥ दोहा—पुत्र अनृत युत कुशल हौ, बीत्यो काल अपार॥प्रभु प्रसाद ते कुशल है, अब मेरो परिवार२०॥

अहंकार॥ दोधक—कारज कौन इहाँ प्रभु आए ॥ पुत्र

सुनो हम काम पठाए ॥ द्योसकु ह्याँ रहियै अब ताते ॥ आवत हैं प्रभु देवसभा ते ॥ २१ ॥

अहंकार ॥ तारक–किहि कारण आवत हैं सुधिपाई ॥ सुविवेक कथा न सुनो दुखदाई ॥ कहि पुत्र विवेक कथा वह कैसी ॥ कहिबे कि नहीं कहि मेरी सों तैसी ॥ २२ ॥

दंभ–सरस्वतीछन्द ॥ वाराणशी सुनियै बढ़्यो बहुधा विवेक विचार॥विज्ञान को तिनते कहैं सब होइगो अवतार॥ सोई प्रवृत्ति अनेक वंश विनाश हेत सुभाउ ॥ ताके अशे-ष विलोपु कारज आइहै इहि गाउँ ॥ २३ ॥

अहंकार ॥ सवैया–भागीरथी जहँ ऐसिहै केशव साधुन के जहँ पुंज लसैं रे ॥ सन्तत एक विवेक सो वेद विचारन सों जहँ जीउ कसैं रे ॥ तारक मंत्रके दाइक लाइक आपु जहाँ जगदीश बसैं रे ॥ साधन शुद्ध समाधि जहाँ तहँ कैसे प्रबोध उदोत नसैं रे ॥ २४ ॥

दंभ ॥ सवैया–शोक गिरावत है अति क्रोध गुमान गहैं कहि आवै न हाँ जू ॥ लोभ लए दश हूँ दिश डोलत है अपमान प्रहार तहाँ जू ॥ झूठकी ईंठइ नर्क के नीरधि बूड़त ना अवलम्ब जहाँजू ॥ काम करैं बहु भाँति फजीहति शोधनि को अवकाश कहाँ जू ॥ २५ ॥

दोहा–को बरजै प्रभु को प्रगट, बरजे होइ अनर्थ ॥ बोध उदैके लोपको, एकै पेट समर्थ ॥ २६ ॥

कवित्त–केशव क्यों हूँ भरयो न परै अरु जोर भरे

भय की अधिकाई ॥ रीतत तौरि तयो न घरी कहुँ रीति गये अति आरतताई ॥ रीतो भलो न भरो भलो कैसहुँ रीते भरे विनु कैसे रहाई ॥ पाइयै क्यों परमेश्वरकी गति पेटनकी गति जानि न जाई ॥ २७ ॥

सवैया—पेटनि पेटनि हीं भटक्यो बहु पेटनि की पदवी ननक्योंजू॥पेटतें पेटलियो निकस्यो फिरके पुनि पेटही सों अटक्योजू ॥ पेटको चेरो सबै जग काहूके पेटन पेट समात तक्यो जू ॥ पेटके पंथन पावहु केशव पेटहि पोषत पेट पक्योजू ॥ २८ ॥

दोहा—तृषा बड़ी बड़वानली, क्षुधा तिमिंगिल क्षुद्र ॥ ऐसो को निकसै ज्ञुपरि, उदर उदार समुद्र ॥२९॥ मन वच कर्म्मजु कपटतजि, सेइ रहे नर कोइ ॥ केशव तीरथ वासको, ताहीको फलु होइ ॥ ३० ॥

अगस्त्यसंहितायां यथा श्लोक—यस्यहस्तौचपादौच मनश्चैवसुसंयतं॥विद्यातपश्चकीर्त्तिश्च सतीर्थफलमश्नुते ३१॥

इति श्रीचिदानन्दमग्ना विज्ञानगीतायां अहंकार दंभ सम्वाद वर्णनंनामतृतीयःप्रभावः ॥ ३ ॥

---

दोहा—महामोह को वर्णिबो, चौथे मांझ प्रयानु ॥१॥सागर सरिता वर्षसुर, सातो द्वीप प्रमानु ॥ महामोह विहरत हुते, पर्वत लोकालोक ॥ कलह विलोके जाइ तहँ, ब्रह्मदोषयुत शोक ॥ २ ॥

तोमरछंद–कलह की सुनि बात ॥ १ ॥ उठि चले मन के तात॥वहु उठे दुंदुभि बाजि ॥ तहँ विविध सेना साजि ॥ ३ ॥

चामरछंद–धर्म कर्म शर्म के सुशर्म यज्ञ दोष वन्त ॥ तात मात भ्रात दोष दीन दोष जे अनंत ॥ मित्र दोष मंत्रि दोष मंत्र दोष के जुनाथ ॥ देवदोष ब्रह्मदोष लेचले अनेक साथ ॥ ४ ॥

दोहा–महामोह अति कोहकै, दोषनि के अवनीप ॥ कीनो प्रथम मिलानु महि, मोहन पुष्कर द्वीप ॥ ५ ॥

चामरछन्द–चारिलाख योजन प्रमाण मान नाखिये ॥ शुद्धनीरको जहां प्रसिद्ध सिंधु भाषिये ॥ ब्रह्म रूपको जहाँ अशेष जंतु सेवहीं ॥ मान तत्त्वको गिरीश खंड द्वै विराजहीं ॥ ६ ॥

मल्लिका छन्द–योजन प्रमाण दीश ॥ द्वीपलक्ष है बतीश ॥ सातखण्ड हैं सुदेश ॥ सातऊ नदी सुवेश ॥ ७ ॥

दोहा–एकसुधुम्नानी कहै, और मनोजव जानु ॥ चित्ररेफहै तीसरो, चौथो गणि पवमानु ॥ ८ ॥ पंचम जानि पुरोजवहि, छठो विमल वहु रूप ॥ विश्व धातु है सात जो, यह खंडनि को रूप ॥ ९ ॥ उपसृष्टि अपराजिता, आयुर्दा अनघासु ॥ निज धृति नदी सहस्र धृति, पंच पदी सु प्रकाशु ॥ १० ॥ सब जन शाका द्वीप को, प्राणायामनि साधि ॥ वायुरूप जगदीश को, सेवत सहित समाधि ॥ ११ ॥ केशव शाकादीप को, समुझै सकल सुजानि ॥ सागर क्षीर समुद्र तहँ, श्रीपति को सुखदानि ॥ १२ ॥ उचक्यो शाका

दीपते महा मोह अकुलाइ॥ मेल्यो क्रौंचहिं दीप जहँ, दधि सागर सुखदाइ॥ १३॥ जलरूपी जगदीशको, सेवत सकल सुजान॥ केशव योजन जानि सो, सोरह लाख प्रमान॥ १४॥ मेघपृष्ठि प्राविष्टय पुनि, प्राणायाम सुधाम॥ लोहितानु तहँ शोभियै, खण्ड वनस्पति नाम॥ १५॥ शुक्ला, अभया, अज्ञका; अरु पवित्रवति नाम॥ तीर्थवती अरु रूपवति, अमृतौघा सुखधाम॥ १६॥

तोमरछन्द—कुशदीप में लिय जाइ॥ घृतके समुद्रहि पाइ॥ तहँ अग्निरूप अशोक॥ जगदीश पूजत लोक॥१७॥

दोहा—सत्यव्रत शुचि भक्ति भट, रुचिव केशव दान॥ नाभि गुप्त ममदेव तहँ, सातो होत प्रमान॥ १८॥ रस कुल्या मंत्रावली, मधुकुल्या श्रुतिबिंद॥ घृतकुल्या शुचि गामिनी, नदि सहिता मृत बिंद॥ १९॥ आठलाखयोजन सबै, कुशद्वीप सुखदाइ॥ सो तजि शाल्मलि दीपमैं, मेल्यो जग दुखदाइ॥ २०॥

चामर—चारिलाखयोजन प्रमाण दीप जानियै॥ मध्व को समुद्र देखि देखि सुःख मानियै॥ सात खण्ड सातहीं तरंगिनी बहैंजहीं॥ सोमरूप ईश को अशेष जंतु सेवहीं॥ २१॥

दोहा—पारिभाद्र सो मनस अरु, अविज्ञात सुरवर्ष॥ रमणक अप्याजन सहित, देउ सुरोवन हर्ष॥ २२॥ सिनीवाली रजनी कुहू, मंदा राका जानु॥ सरस्वती अरु अनुमती, सातो नदी बखानु॥२३॥

नाराचछन्द—लक्षदोइ योजन पलक्ष दीप जानियै ॥ तरंगिणी समेत सात सातखण्ड मानियै ॥ दिनेश रूपदेव को अशेषजंतु सेवहीं ॥ नृदेव देव शत्रु मोहि आनि मेलि जोवहीं ॥ २४ ॥

दोहा—सातक्षेमसमुद्र शिव, जय यश वर्णि प्रमान ॥ अमृत अभय इहि नाम युत, सातो खण्ड, प्रमान ॥ २५ ॥ अरुना नमना संभवा, वत्सरता अवदात ॥ सावित्री अरुसुप्रभा, सुरसा सरिता सात॥२६॥ रस सागर अवलोकियो, महा मोह तिहिठौर ॥ केशवदास विलास जहँ, करत देव शिरमौर ॥ २७ ॥ आयो जम्बूद्वीपमै, महा मोह रण रुद्र ॥ योजन लक्षप्रमाण तहँ, देख्यो क्षार समुद्र ॥ २८ ॥

मधुछन्द—है नव खण्ड विराजत जाके ॥ मानहुँ सुंदर रूपक ताके ॥ एक इलावृत खंड कहावै ॥ मंदरते अतिशोभहिंपावै ॥ २९ ॥ ताते चली सरिता बहु मोदा ॥ नाम कहावति है अरुणोदा ॥ चारि तहाँशुभ बाग विराजैं ॥ नित्य नए फल फूलनि साजैं ॥ ३० ॥

दोहा—चित्ररथ अतिचारु तहँ, वैभ्राजकु इहि नाम ॥ और सर्वतोभद्र पुनि, नन्दनसब सुखधाम ॥ ३१ ॥

सुन्दरीछन्द—भूत लहैं शिवके वन को जहँ ॥ पारबती पति केलि करैं तहँ ॥ भूलि जो कोऊ तहाँ जनु आवै ॥ सो तबहीं तरुणीपद पावै ॥ ३२ ॥

दोहा–भद्राश्वनाम धर्मसुत, सोभद्राश्वक खण्ड ॥ हयग्रींव जगदीशको, सेवत जीव अखण्ड ॥ ३३ ॥

हरिगीतिकाछन्द–हरि वर्ष खण्ड नृसिंहको प्रहलाद सेवत साधु ॥ शुभ केतमाल रमारमेशहिं काम कर्म करालु ॥ शुभता हिरण्मय खण्ड मण्डित यत्र कूरम वेष ॥ पितृनाथ सेवत अर्जमा, मन काय वाक विशेष ॥ ३४ ॥

दोहा–मत्स्यरूप भगवंतको, सेवत बुद्धि अखण्ड ॥ मनसा वाचा कर्मणा, मनु नृप रम्यक खण्ड ॥ ३५ ॥ महामोह की पुरुष लखि, भाग्यो सेन सँयुक्त ॥ केशवदासप्रकाश मुख, हँसे देव मुनि मुक्त ॥ ३६ ॥

रूपमालाछंद–आदिब्रह्म अनन्त नित्य अमेय श्रीरघुवीर ॥ सावधान अशेष भावनिसंग लक्ष्मण धीर ॥ शुद्ध बुद्धि प्रबोध युक्त विदेहया अतिसाधु ॥ सर्वदा हनुमंत सेवत नित्य प्रेम अगाधु ॥ ३७ ॥

दोहा–भरतखंडमें आनिकै, कीनो मोह मिलान ॥ नारायण को भजन तहँ, नारद बुद्धिनिधान ॥ ३८ ॥ आयो तब पाषण्ड पुर, देश अशेषनि जीति ॥ कीनो तहाँ मिलान कछु, बासर बाढ़ी प्रीति ॥ ३९ ॥

सवैया–काम कुमार से नन्दकुमार की केलि थली जहँ नित्य नई है ॥ वानकी पावन तातन लागत पापिनिहूं कहँ मुक्ति भई है ॥ पुष्प शरासन हा घरही बरही रति

कीरति जीति लई है ॥ पुष्प शरासन श्रीमथुराभव भान भवा गुण भोर भई है ॥ ४० ॥

इति श्रीचिदानन्दमग्नायां विज्ञानगीतायां सप्त द्वीपवर्णनं नामचतुर्थप्रभावः ॥ ४ ॥

---

दोहा–पाँचें प्रगट प्रभाव में, कहिबो मिथ्या मंत्र ॥ संतत मिथ्या दृष्टि सों, महामोह को तंत्र ॥ १ ॥

महामोहउवाच ॥ कुण्डलिया–देही न्यारो देहते, कहत सयाने लोग ॥ दुसह दुःख ह्याँ देखि पर, लोक करहिं गे भोग ॥ लोक करहिंगे भोग योग संयम व्रत साधें ॥ भूले जहँ तहँ भ्रमत सकल शोभा सुखबाँधें ॥ भूले जहँ तहँ भ्रमत होत तन सों न सनेही ॥ जो झूठो है देह ततो अति झूठो देही ॥ २ ॥

मधु–तीरथवासी यहै सब जानै ॥ देह ते देहि को भिन्न बखानै ॥ देहको देखत ज्यों सब कोऊ ॥ त्यों किन देही को देखत सोऊ ॥ ३ ॥ साँचो जो जीव सदा अविकारी ॥ क्यों वह होत पुमान ते नारी ॥ जो नर नारी समान कै जानै ॥ तौ क्यों परनारि को दोष न मानै ॥ ४ ॥ जौं तम देही अवर्ण कै लेखौ ॥ देह धरे बहु वर्णनि देखौ ॥ देही को मानत हो अविनाशी ॥ पातकी होत क्यों देह विनाशी ॥ ५ ॥ जौं तुम देह अनित्य बखानो ॥ नित्य निरंजन देही को मानो ॥ आपनी बात जनावहु काहू ॥ काहे को गंगहि हाड़ ले जाहू ॥ ६ ॥

भुजंगप्रयात छन्द—वहै शास्त्र ताते सदा सत्य लेखो ॥ प्रभा सिद्धिता मध्य प्रत्यक्ष देखो ॥ धरातेज बातान्बु है तत्त्व चारचो ॥ सदा इष्टतो अर्थ काम्ये विचारचो ॥ ७ ॥ वहै लोक तो लोक है मुक्त विद्यै ॥ सदा चर्य चर्व्वाक ते औरु निन्द्ये ॥ विलोपो जहाँ धर्म धर्म्माधिकारी ॥ विलोपो सदा वेद विद्या विचारी ॥ ८ ॥

दोहा—देखि सबै पाषण्ड पुर, अपनी सिगरी सृष्टि ॥ रावर माँझ गए जहाँ, रानी मिथ्या दृष्टि ॥ ९ ॥

भुजंगप्रयात—दुराशा जहाँ तृष्णिका देह धारें ॥ दुहूँ ओर दोऊ भले चौंर ढारें ॥ बड़ी आरसी चारु चिन्ता दिखावैं ॥ गुमानी धरे पान निन्दा खवावैं ॥ १० ॥ पिपासा क्षुधा क्षुद्र बीना बजावैं ॥ अलच्छी अलज्जी दुओ गीत गावैं ॥ लिये अन्न शंका असाभानि राचैं ॥ नए नृत्य नाना असंतुष्ट नाचैं ॥ ११ ॥

दोहा--अँचवाती मदिरा अरुचि, कुमतिन कथा विधान॥हिंसासो हँसिजाति सुनि, रतिके के वचन पिछान॥१२॥

राजा ॥ अनकूल—आय कछू देखति दुचिताई ॥ लोकनि मैं यद्यपि प्रभुताई ॥ शासन मेरो सबै जग पारै ॥ एक विवेक सुमोमन सारै ॥ १३ ॥ कौन भाँति वह जीतन पाऊँ ॥ मंत्र देहि चित ताहि लगाऊँ ॥ बूझि बूझि देखे हम मंत्री ॥ पुत्र मित्रजन सोदर तंत्री ॥ १४ ॥

रानी ॥ तोमर—सुनि राज राज बिचारु ॥ वह शत्रु दीहनि-

हारु ॥ सहसा न दीजै दांड ॥ यह राजनीति प्रभाउ ॥ १५ ॥

भुजंगप्रयात–जु वाराणशी मै जिते जीव देखो ॥ सुका-हू न शङ्कै महासाधु लेखो ॥ जुताको तजो नाम जी मोहिं लाजा ॥ सुबंदे सबै लोक लोकेश राजा ॥ १६ ॥

दोहा–गंगा अरु वाराणशी, महादेव तिहि ठौर ॥ पांउ न धरिये पंथ तिहि, सुनो रसिक शिरमौर ॥ १७ ॥

राजोवाच ॥ भुजङ्गप्रयात–कहा कामिनी तैं कही बात मोसों ॥ छमी प्रेम नातें कहों बात तोसों ॥ वहै ग्राम होतौ सुलेही रह्योहों ॥ सदा सर्वदा लोक लोकेशहोहों ॥ १८ ॥ तहाँ लोग मेरे रहैं वेषधारी ॥ जटी दण्ड मुण्डी यती ब्रह्मचारी ॥ पढ़ैं शास्त्रको वेदविद्या विरोधी ॥ महाखण्ड पाषण्ड धर्म्मीपरोधी ॥ १९ ॥

विजय–मारत राह उछाहनीसों पुर दाहत माह अन्हात उचारैं ॥ वारविलासिनि सों मिलि पीवत मद्य अनोदिकके प्रतिपारैं ॥ चोरी करैं बिभिचार करैं पुनि केशव वस्तु विचारि विचारैं ॥ जो निशि वासर काशीपुरी महँ मेरेई लोग अनेक विहारैं ॥ २० ॥

रानी ॥ तोटकछन्द–यह बात सुनी जबहीं तबहीं ॥ हँसि बोलि उठी सु सुनी सबहीं॥जिनि भूलहु भर्म मृषानि अवै ॥ हमपै सुनिये पुर धर्म्म सबै ॥ २१ ॥ इक यज्ञ यजैं तपसानि करैं॥इकश्रीहरि श्रीहरि नामररैं॥इक वेद विचारनि चित्त हरैं ॥ इक न्हान विधाननि पाप तरैं ॥ २२ ॥

इक नीर अहारनि वायु धरें ॥ इक साधि समाधि न आधि हरें ॥ इक शुद्ध सदा भगवंत भये ॥ जगजीवन मुक्त शरीर सये ॥ २३ ॥

सुंदरीछन्द–सुंदरिकी यह बात सुनी जब ॥ रोष करयो कलिनाथ कछूतब ॥ जानत नाहिं न मोबल तू शठ ॥ मैं जग वश्य करौं हठही हठ ॥ २४ ॥

इतिश्री विज्ञानगीतायां चिदानंदमग्नायां मिथ्यादृष्टि महामोह मंत्रवर्णनं नाम पंचमप्रभावः ॥ ५ ॥

---

दोहा–छठे माँझ तीरथ नदी, महा मोह दल भाउ ॥ गंगा शिव वाराणशी, मणिकर्णिका प्रभाउ ॥ १ ॥

राजोवाच ॥ दोहा–मैं जितने तीरथ लए, तितने कहों बखानि ॥ त्यों लैहौं वाराणशी सुनु, सुंदरि सुखदानि ॥ २॥ माता पुर मायापुरी, महाकाल अघहर्ण ॥ मलिकाअर्ज्जुन मैं लियो, मिश्रकुमाहि गोकर्ण ॥ ३ ॥ महिटंतरु माहि केशरी, चंडीसुर केदार ॥ कारिनूकुनख वश करयो, कुरुषेत कपर्दुअपार ॥ ४ ॥ काहिल कोलापुर लयो, कालिंजर पलु एक ॥ काँवरु कन्यनिकी पुरी, कार्त्तिकेय करि टेक ॥ ५ ॥ गया गयापुर गोमती, गोदावरॉ विशेषि ॥ विश्वनाथ अरु विश्वजित, ब्रह्मावर्त्तहि लेखि ॥ ६ ॥ विरूपाक्ष त्र्यम्बक लयो कुशावर्त्त अनयाश ॥ जयन नृसिंह पुरी लई, नागेश्वरी प्रकाश॥७॥अवधपुरी पुर योगिनी, जालंधर सुनुबाल ॥ मान

सरोवर मानिनी, जगन्नाथ सविशाल ॥ ८ ॥ बदरीवर द्वा-
रावती, अमरावती प्रमान ॥ जम्बूक्राश्रम मैं लयो,
तव कुसुनहिं सुजान ॥ ९ ॥ सोमनाथ त्रिरंत है, आल
नाथ एकंग ॥ हरिक्षेत्र नैमिष सदा, अंशतीशु चित्रंग
॥ १० ॥ प्रगट प्रभासु सुरेनुका, हर्म्य जापु उज्जैनि ॥
शंकर पूरनि पुष्करु, अरु प्रयाग मृगनैनि ॥ ११ ॥
वृंदावन मथुरा लई, कान्तिका कहँजीति ॥ को बपुरी वारा-
णशी, जाकी मानति भीति ॥ १२ ॥ करतोया चर्म्मानिला,
चर्मन्वती सुनि चारु ॥ वप्रद्धन्त मंदाकिनी, विदिशा कृष्णा
चारु ॥ १३ ॥ चित्रोत्पला पिशाचिका, बषचा वध्या जानि ॥
तपसा सेनी मंजुला, शुक्तिमती उरआनि ॥ १४ ॥ लूती ता-
पी अंगुली, अभया हिरन दशान ॥ लिखिधावतीसुबाहिनी
बिमला बेना जान ॥ १५ ॥ उत्पलावती इच्छुला, भेमरथी
शुभचारु ॥ वैतरणी अरु शुक्तिमा, वैलासिनी निहारु ॥
॥ १६ ॥ मंदवाहिनी मंदगा, कावेरीहि बखानि ॥ त्रिदिवा-
ताम्रपन्निका, कुमुदवतीहि सुमानु ॥ १७ ॥ कृतमाला का-
लांगुली, बंशकरारि विकाहि ॥ महेन्द्राल तपती सर्वशा
पुन्याको चितचाहि ॥ १८ ॥

भुजंगप्रयातछन्द–शिवाधूतपापा शतद्रू विपासा॥वितस्ता
पयस्वी सदा कर्मनासा॥गणो गण्डकी कौशिकीचन्द्रभ्राता॥
बड़ीसिंधु ऐरावती पारिजाता ॥ १९ ॥ महीसिंधु गोदावरी

गोमतीसी॥ इलाबाहु दापामणी देवकीसी॥ कुमारीकृपाँ पाप पुंजै नसावै॥ कलौ वेत्रवतीं सुगंगा कहावै॥ २०॥

नाराचछन्द–अशेषशर्मदा विशेष जीति नर्मदा लई॥ जग प्रभास कीशुना कृतांतसोदरी जई॥ सरस्वती पतिव्रता चिन्हाउजोर आपने॥ लईजुजन्हु एकहीं चुरू अँचैसु को गने॥ २१॥

दोहा–पावन सरिता सबलई, भरतखण्डकी बाम॥ औरो नदी अपारको, वरणै तिनके नाम॥ २२॥

तोटकछंद–बहु दान अनाथनिदे जु डरै॥ द्विज गाइनि के दिन पांइ परै॥ परनारि विलोकि हिये हहरै॥ कहिमोसों क्यों दीन विवेकु लरै॥ २३॥

दोहा–मेरेकुल के सर्वदा प्रोहित हैं पाखण्ड॥ जाको चाहत सर्वदा, इहि सिगरे ब्रह्मण्ड॥ २४॥

मधुछन्द–नित्य तपीनि जपीनि जुभावै॥ जापक पूजक सों मनुलावै॥ तंत्रनि मंत्रनि के उर सोहै॥ जोधनि बोधनिके मनमोहै॥ २५॥ शान्तनि रातनि लै उर धारै॥ भागिचलै हरि भक्त विचारै॥ जाहि डरैं रसभाव शमानो॥ को यह एकु विवेकु अयानो॥ २६॥ देदुखरोग बड़ो सुतजाको॥ बंदिपरे सिगरे जगताको॥ आनँद रूप विरूपकरे हैं॥ चित्त अनेक विवेक टरे हैं॥ २७ बंधु विरोधु बड़ो मम मंत्री॥ वश्य करै सिगरेजन यंत्री॥ बानर वालि बली जिहिं मारयो॥ रावणको सिगरो कुल

जारयो ॥ २८ ॥ प्रेम डरै हियमै सुनि जाको ॥ एक विवेक कहा रिपुताको ॥ वर्त्तत झूठ प्रधान हमारे ॥ लोक चतुर्दश जाकहँ हारे ॥ २९ ॥ जाइ जहाँ तहँ देश नशावै ॥ नित्य नरेशनि भीख मगावैं ॥ सत्य डराव हिए अति भारो ॥ को बपुरा सुविवेक विचारो ॥ ३० ॥ क्रोध बड़ो दलपत्ति है मेरे ॥ जो जिय मांझ वसै सबकेरे ॥ अस्त्र धरे अपमान हमारे ॥ देवनिके पति रंक कै डारै ॥ ३१ ॥

दोहा—अग्रेसर कलिकहत है, अपने चित्त विचार ॥ दुरद विनोदनको जहाँ, है केहरि अनुहार ॥ ३२ ॥

मधुच्छंद—राखत लोभ भँडार भरेई ॥ जौ लगि काज कहा न करेई ॥ मातु पिता सुत सोदरछोड़ै ॥ कौनपै शत्रुन अंचल ओड़ै ॥ ३३ ॥ शोक दरिद्र अहंकृत देखो ॥ आलस रोग भले भट लेखो ॥ है भ्रम भेद वशीठ सयाने ॥ प्राकृत काम न भेद बखाने ॥ ३४ ॥ काम महा इक सोदर मेरे ॥ युवती निव जीति करयो जग चेरे ॥ या जग में जन रंगन रांचे ॥ गोविंद गोपिन के सँग नाँचे ॥ ३५ ॥ है व्यभिचारु बड़ो सुत जाको ॥ इंद्र भयो भगवंत भो ताको ॥ पुत्र कलंक भलो तिहि जायो ॥ सोमको शीशु सिंहासन पायो ॥ ३६ ॥ नामकृतघ्न पिता त्रिय तेरो ॥ ता कहँ जानि सदा गुरु मेरो ॥ हारि रही वसुधा सब जेती ॥ एक विवेक कथा कहि केती ॥ ३७ ॥

रूपमालाछन्द--स्वामि बात विश्वास घातक मित्र दो-

षनि देषि ॥ राजदोष कृतघ्नके सुनि मंत्र दोष विशेषि ॥ आस पास सदा रहैं मम सुन्दरी सुनि धीर ॥ को विवेक अनेकधाकरि डारिहैं तबबीर ॥ ३८ ॥ ब्रह्मदोष महाबली सुतते जन्यो बलि बण्ड ॥ क्षत्रहीन वसुन्धरा बाधा करी नवखण्ड ॥ संहऱ्योयदुवंश सो जिहिं बांधियो सुरनाथ ॥ रुद्र जानत हैं प्रतापहि को विवेकु अनाथ ॥ ३९ ॥

दोहा—एक एक जग सँहऱ्यो, पुनि सिगरे एकत्र ॥ मोसों प्रभुता को करै, शंकर सहित कलत्र ॥ ४० ॥

तारकछंद—जब नृप मंत्र करचो रस भीनो ॥ सुनि त्रिय मौन गही दुखदीनो ॥

राजोवाच—अबहीं नहिं मौन गहो तुम रानी ॥ सुखमें नहिं दुःखनि देहु सयानी ॥ ४१ ॥

रानी—हम जाति नारि मति मूढ़ सही ॥ हरुवाई सुबात बनाइ कही ॥ पिय मंत्रनि मंत्रिनि सों कहियै ॥ सुखमें दुख देहनि क्यों दहियै ॥ ४२ ॥

राजोवाच—कछु मोसहुँ तोसहुँ अंतर नाहीं॥कहि मंत्र दुऱ्यो किहि बूझन जाहीं॥ हितकी हितसों दुख देन कहे जो ॥ यश सों मिलिकै सब काज नसे तो ॥ ४३ ॥

रानी ॥ सरस्वतीछंद—गंगानहीं नदी कहैं निज आदि ब्रह्म अरूप ॥ संसार तारन कों रच्यो अवतार है द्रवरूप ॥ विद्या विना तपसा बिना बिनु विष्णु भक्ति विधान ॥ ब्रह्माणडभेदत ब्रह्मघातक पातकी इक न्हान ॥ ४४ ॥

राजोवाच ॥ मधुछन्द–वामन को चरणोदक गंगा ॥ निर्गुण होत क्यों सागर संगा ॥ चित्त विचारि सुलोचनि भाषो ॥ ह्वै गजगामिनि पर्व्वत नाखो ॥ ४५ ॥

दोहा–जन्हु अँचै करि काढ़ियो, बाहिर जंघा फारि ॥ क्यों अपवित्र न मानियो, मुनिगणयोंपै बारि ॥ ४६ ॥

रानी ॥ मधु–वामन के पद को पिय पानी ॥ जो तुम भागीरथी भव मानी ॥ पांइ जहाँ बलिराज पखारे ॥ ते जल क्यों न त्रिलोक सिधारे ॥ ४७ ॥ वामन को चरणोदकै ऐसो ॥ माधव माधव वर्तंतु कैसो ॥ ताते सबै जग झूठहि जानो ॥ साँचि सदाशिव गंगहि मानो ॥ ४८ ॥ ( बृहन्नारदीय पुराणे–यथा, श्लोक ॥ तस्माच्छृणुध्वंविप्रेन्द्रा गंगाया महिमोत्तमा ॥ ब्रह्म विष्णु शिवैश्चापि पारं गन्तुं न शक्यते ॥ ४९ ॥

दोहा–इक विवेक सतसंग जहँ, अरुगंगा तटवासु ॥ सपने हूँ पिय होइ नहिं, तुम पै ताको नासु ॥ ५० ॥

मधु-रुद्रसमुद्र सदा तपसा के॥देव अदेव सबै जन जाके॥इंद्रहु की प्रभुता हरि लेहीं ॥ चौदहलोक घरीक में देहीं॥५१ ॥

रूपमालाछंद–बहु सिद्धि शुद्धसमेत सेवत रोम रोम प्रबोध ॥ पल एक मध्य अनन्त केशव फोरि डारहिं क्रोध ॥ छिन्न की समाधि विकल्प कल्प अनल्प होत वितीत ॥ इहि भाँति सों बहुधा पितामह विष्णुगावत गीत ॥ ५२ ॥

दोहा–तिनके शरणविवेकु है, कैसे जीतहु कन्त ॥ जब जरि जैहो काम ज्यों, तब समुझोगे अंत ॥ ५३ ॥ सिगरे

तीरथ सबपुरी, जितने मुनिगण देव ॥ सब सेवत वाराणशी अपने अपने भेव ॥ ५४ ॥

सरस्वतीछंद—वाराणशी अरु विन्दु माधव विश्वनाथ बखानु ॥ भागीरथी मणिकर्णिका यह दिव्यपंचकु जानु ॥ वैकुंठ भूतल मध्य अद्भुत भाँति नित्य प्रकाश ॥ संसार नाश हि करत हैं तिनको न कबहूँ नाश ॥ ५५ ॥

राजो० ॥ दोहा—कहि देवी मणिकर्णिका, नाम भयो केहिभेव ॥ काशी मै केहि देवता, प्रगट करी केहि देव ॥५६॥

रानी ॥ रूपमाला छंद—वाराणशी मै विष्णु एक समै करचो तप आनि ॥ जैसोकियो अत्युग्र सो हम पै न जात बखानि ॥ तिनके तपोवल शंभु को शिर कंपियो भुवपाल ॥ भूमिगिरि प्रियकर्ण ते मणिकर्णिका तिहिकाल ॥ ५७ ॥

चामरछन्द—माँगिये महानुभाव चित्त वृत्ति मैं लही ॥ शंभु जू प्रसन्न ह्वै सुवात विष्णु सों कही ॥ ॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ राज देहु जू सुमोहिं लोक लोक को अबै ॥ करो अजेय मोहिं सर्व भाँति शक्ति दे सबै ॥५८॥

दोहा—अंतरजामी होउ हों, लक्ष्मी को पति आशु॥ एवमस्तु हर हँसि कह्यो, पूरण होइ प्रकाशु ॥५९॥ खोदि लई मणिकर्णिका, भूमि चक्र की धोर॥सो थल भरचो प्रस्वेद जल, भयो हरन अघ घोर॥६०॥ तीरथमें तीरथ भयो, तादिन ते तेहि ठौर॥नाम भयो मणिकर्णिका, देइसबै सुखगौर ॥६१॥

तारक—वरणे अपने सिगरे तुमयोधा ॥ उनके हम पै

सुनिये बुधि बोधा ॥ जबहीं पिय वस्तु विचारहि देखो ॥ सिगरो दल राज को होइ अलेखो ॥ ६२ ॥ तुम भूले जे द्विज दोष भरोसे ॥ जननी न कहूँ सुतकेवल कोसे ॥ द्विज दोष जहाँ सुसमूल नशेजू ॥ द्विज दोष बिना न कहूँ विनशेजू ॥ ६३ ॥ अपनो थल ज्यों प्रभु पावक दाहै ॥ अनु संगति कारक हो हठि चाहै ॥ द्विज दोष भए पिय वंशतुम्हारे ॥ वल कौन विवेक चमूहि विदारे ॥ ६४ ॥

दोहा—जोही शोक विरोध सब, कलह कलुष उर आनि ॥ स्वामि दोषदै आदि सब, दोष एकही बानि ॥ ६५ ॥

राजोवाच ॥ हरिलीला छन्द—नारिन को यह बूझत बात जाइ ॥ सो अज्ञान फल खाइ अघाइ ॥ बात सुने मरन की अतिही डेराइ ॥ सब सांचे मरे मरि स्वर्ग जाइ ॥ ६६ ॥

सवैया—लोक विलोक मैं जाग विराग मै पाठ मै आलस बास बसाऊं ॥ एक विवेक कहा बपुरा गुण ज्ञान गुरूनि के गर्व्व घटाऊं ॥ हों अपने विविचार विचार अचार विचार अपार बहाऊं ॥ धीरज धूरि मिलै कहि केशव धर्म के धामनि धूरि जमाऊं ॥ ६७ ॥

दोहा—करी प्रतिज्ञा राज जब, मन क्रम वचन प्रमान ॥ मंत्र बतावति तरुनि तब, दुखसुख जानि समान ॥ ६८ ॥

रानी ॥ तारकछंद—सुनिये त्रिय को पिय के दुख ते दुख ॥ सब जानत हैं पिय के सुखते सुख ॥ तिहिते हित बात कहों सु करो अब ॥ हठ छाड़हु जू मनके मनते सब ॥ ६९ ॥

दोहा—ज्यों तुमहीं सारत सबै, त्यों वै श्रद्धहिलीन ॥ जो उनको श्रद्धा तजै, तौ केशव वलहीन ॥ ७० ॥ श्रद्धा छल वल राज तुम, धरि पाखंडहि देहु ॥ तौ उनको साधन विटप, फलन फलहि करि तेहु ॥ ७१ ॥

राजोवाच॥गीतिकाछन्द—त्रिय साधु साधु भली कही यह बात मोसन आजु ॥ तुव तात मोहिं दियोहुतो तिहुँ लोक को जब राजु ॥ तब ठौर ठौर करी सबै बहु भाँति दासनि भक्ति ॥ सुनि दैन मै तिनको कही जगदीश की सब शक्ति ॥ ७२ ॥ शुचि दंभ को लखि लोभको निधि रोग को गणि वृद्धि ॥ गुनि गर्व को गरिमा दई कलहेंदई सब सिद्धि ॥ विभिचार को रुचि नित्यही अपलोक को दइ प्रीति ॥ महिमा दई महामोह को सब ब्रह्मदोषनि जीति ॥ ७३ ॥

दोहा—सुनु सुंदरि पाषंड को, श्रद्धा देहों आजु ॥ तव विवेक को जीति कै, काशी करिहौं राजु ॥ ७४ ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां चिदानन्दमग्नायां मिथ्यादृष्टि महामोह सम्बादवर्णनं नामषष्ठ प्रभावः ॥ ६ ॥

---

दोहा—चार्वाक अरु शिष्य को, सातैं मै सम्बाद ॥ विनती सब कलिकाल की, उपजै सुनत विषाद ॥ १ ॥ कह्यो भैरवी बोलिकै, महामोह सुखपाइ ॥ श्रद्धागहि पाखण्ड को छलवल दीजै आइ ॥ २ ॥ महामोह आए सभा, असत संग के साथ ॥ चार्वाक वैठे जहाँ, करत शिष्य सों गाथ ॥ ३ ॥

चार्वाक उवाच ॥ दोधकछंद–देखतुहै कछु शिष्य सयाने ॥ भूलत हैं मुनि वेद पयाने ॥ लाज बई जग खेत जमै जो ॥ होम करैं परलोक फलै तो ॥ ४ ॥

शिष्यउवाच–साँचो जो है जग खैबोरु पीबो ॥ तौ यह झूठ तपोबल पैबो ॥ मूढ़ दुराश के मोदकुखाहीं ॥ तपसा मिसु देखत नर्कहिं जाहीं ॥ ५ ॥

सवैया–हास विलास विलासनिसों मिलि लोचन लोल विलोकन रूरे ॥ भाँतिनि भाँतिनि के परिरंभन निर्भय रागविरागनि पूरे ॥ नाग लता दल रंग रँगे अधरामृत पान कहासुखसूरे ॥ केशवदासकहा व्रत संयम संपति माँझ विपत्तिनकूरे ॥ ६ ॥

दोहा–तीरथ बासी यह कहत, तजत त्रियनके साथ ॥ कलुषनि मिश्रित विषय सुख, त्यागनीय है नाथ ॥ ७ ॥

चार्वाक उवाच ॥ दोहा–वै सिगरे मतिमूढ़ हैं,अमल जलज मणि डारि॥सीपिनके संग्रह करत, केशवराइ निहारि ॥ ८ ॥

दण्डक–माता जिमि पोषति पिता ज्यों प्रतिपाल करै प्रभु जिमि शासन करत हेरि हियसों ॥ भैया ज्यौं करै सहाइ देतहै सखा ज्यों सुख गुरुह्वै सिखावै सिष हेतु जोरि जियसों ॥ दासी ज्यौं टहलकरै देवी ज्यौं प्रसन्नह्वै सुधारै परलोक नातो नाहीं काहू वियसों ॥ छकेहै अयान मद क्षितिके छनकक्षुद्र औरसों सनेह करैं छांड़ि ऐसी तियसों ॥ ९ ॥

दोहा–महामोह तब हँसिगहे, चार्वाकके पाँइ ॥ चार्वाक आशिष दई, शोभन सुखद सुभाइ ॥ १० ॥

चार्वाकउवाच–कलियुग करत प्रणाम प्रभु, अवलोको विषहर्ण ॥ धनते जन सब कालकारि, देखत प्रभु को चर्ण ॥ ११ ॥

कलियुग उवाच ॥ रूपमालाछंद–शूद्र ज्यों सब रहत हैं द्विज धर्म कर्म कराल ॥ नारि जारानि लीन भर्त्तनि छाँड़िके इहि काल ॥ दंभ सों नर करत पूजन न्हान दान विधान ॥ विष्णु छाँड़त शक्ति भूषण पूजनीय प्रमान ॥ १२ ॥

सवैया--ब्राह्मण बेचत वेदनिको सुमलेच्छमहीप की सेव करैं जू ॥ क्षत्रिय छाँड़त हैं परजा अपराध विना द्विज वृत्ति हरैं जू ॥ छाँड़िदयो क्रय विक्रय वैश्यनि क्षत्रि न ज्यों हथियार धरैंजू ॥ पूजत शूद्र शिला धनु चोरति चित्त में राजनिको न डरैंजू ॥ १३ ॥

दोहा--विष्णु भक्ति जग में करी, यद्यपि विरल प्रचार ॥ तदपि शान्ति श्रद्धा सखी, तजति न प्रेम प्रकार ॥ १४ ॥

मोह ॥ दोहा–श्रद्धा हम पाषण्ड को, दई कलह के तात ॥ शान्ती बपुरी मरैगी, श्रवण सुनतही बात ॥ १५ ॥

कलि ॥ रूपमाला छंद–वाजि वारन बाहने सुत सुंदरी सुखदाइ ॥ क्षेत्र ग्राम पुरीनि सुख धन देश द्वीप बसाइ ॥ भूमिलोक विलोकि पावन ब्रह्मलोकहि पाइ ॥ लोभ होतन ऐनिरनूर शान्ति होति नराइ ॥ १६ ॥

मोह ॥ सवैया—कौन गनै इनि लोकन रीति विलोकि विलोकि जहाजनि बोरे ॥ लाज विशाल लता लपटी तन धीरज सत्य तमालनि तोरे ॥ वंचकता अपमान अयान अ-लाभ भुजंग भयानक तृष्णा॥ पाटु बढो कहुँ घाट न केशव क्यौं तरिजाइ तरंगिनि तृष्णा ॥ १७ ॥

लोभ--भूलतहै कुल धर्म सबै तवहीं जबहीं वह आनि ग्र-सैजू ॥ केशव वेद पुराणनि कौन सुनै समुझै न त्रसै न हँसै जू ॥ देवनि ते नरदेवनि ते सुत्रिया वर बार न ज्यों बिलसै-जू॥यंत्रन मंत्रन मूरि गनै जग योवन काम पिशाच बसैजू १८।

दोहा—ताते शान्ती की कथा, कहै सुकिन्नर लोक ॥ जोर मूढ़ कह गूढ़ है, मरिहै श्रद्धा शोक ॥ १९ ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां चिदानंदमग्नायां चार्वाक महा मोहकलिदंभ मंत्र वर्णनं नामसप्तमप्रभावः ॥ ७ ॥

---

दोहा—शान्ती करुणाको कह्यौ, आठे माँझ विषाद ॥ पाषण्डिन्हको वर्णिबो, श्रद्धा रहित विवाद ॥ १ ॥ परंपरा सिगरी पुरी, पूरि रही दुखदात ॥ शान्ती के श्रवणनि परी कैसे हूँ यह बात ॥ २ ॥ गंगा काछनि बरतिहीं, पूजत साधु अपार॥ पाई कपिला गाइसी, पट्टु पषण्ड चंडार ॥ ३ ॥

शान्ति ॥ रूपमाला—मो विना न अन्हाति जेंवति करति नाहिं न पान ॥ नेकु के बिछुरे भटू घट में न राखति प्रान॥

चेतिका करुणा रची सब छांड़ि और उपाइ॥ क्यों जियों जननी विना मरि हूँ मिलै जो आइ ॥ ४ ॥ नैन नीरनि भरि कहै करुणा सखी यह बात॥ मोहिं जीवत क्यों मरै सुनि मंत्र अब अवदात॥ योग राग विराग के थल सूरनंदिनि तीर॥ मुनिन आश्रम ठौर ठौर विलोकियै धरिधीर ५॥

करुणा ॥ दोहा—सपनेहूँपाषंडके, श्रद्धा परै न हाथ॥ शान्ति विधी प्रतिकूल भे, कहा न सुनियै गाथ ॥ ६ ॥

रूपमालाछंद—रघुनाथ की तरुणी हरी दशकंध अंधलवार॥ अरु जो दई दुरयोधनै गहि द्रौपदी करतार ॥ निजज्ञासि जो कपटी न कर त्यो श्रद्धा ऊपरि जाइ॥ सुनियै न कहा विलोकियै बहु काल जीवन पाइ ॥ ७ ॥

दोहा—ताते पुनिहूँ देखियै, नीके कै अब जाइ॥ जहाँ बसत कलिकाल अब, पाषण्डानि को राइ ॥ ८ ॥

करुणा ॥ रूपमाला—यह कौन आवत है सखी मल पंक अंकित अंग॥ शिरकेश लुंचित नग्न हाथ शिषीशिखण्ड सुरंग॥ यह नर्क को कोउ जीवहै जिनि याहि देखि डेराहि॥ निज जानियै यह श्रावका अति दूरिते तजि ताहि ॥ ९ ॥

श्रावकोवाच ॥ दोहा—देह गेह नव द्वार में, दीप समान लसंत॥ मुक्तिहु ते अति देत सुख, सेवहु श्री अरहंत॥१०॥

रूपमालाछंद—मिष्ठ भोजन वीटिका मृगनाभ मै घनसार॥ अंग शुभ्र सुगंध संयुत सेव श्री सुकुमार॥ कन्यका भ-

गिनी वधू मिलि जो रमै दिन राति ॥ चित्त मलिन न कीजई गुरु पूजियै इहि भाँति ॥ ११ ॥

करुणोवाच ॥ नगस्वरूपिणीछंद–तमाल तूल तुंगहै ॥ पिसंग चीर अंगहै ॥ शचूड़ मुण्ड मुण्डिये ॥ सखी सुको विलोकियै ॥ १२ ॥

शान्त्युवाच ॥ दोहा–बुद्धागम यह जानियै, सजनी भिक्षुक रूप॥सुनि लीजै कछु कहत है, पुस्तक हस्त विरूप ॥१३॥

भिक्षुक ॥ रूपमालाछंद–हम दिव्य दृष्टि विलोकहीं सुख भुक्ति मुक्ति समान ॥ जग मध्य है यति सिद्धि शुद्ध सुनो सुशिष्य प्रमान ॥ कबहूं न रोकहु भिक्षुकै रमणीनि सों रम मान॥ निज चित्त कोमल ईरषा तजि दूरि ताहि सुजान ॥ कहि कौनको उपदेश है सर्वज्ञ सिद्धिहि जानु ॥ सर्वज्ञ बुद्ध कहा कहै बहुग्रंथ ग्रंथनि मानु ॥

श्रावक–अब तोहिं है सर्वज्ञता कछु बातही महँ मूढ़ ॥ हमहुँ है सर्वज्ञता मद दास तो कुल गूढ़ ॥ १४ ॥

दोहा–छोंड़िशासना बौधकी, अरहंत न की मानि ॥ सुरता छाँड़ि पिशाचिता, काहे को करि बानि ॥ १५ ॥ तन मन जीवन जाइलों, लोक विलोक विलास ॥ ज्यों बाहर के दीप पै, सदन न होत प्रकास ॥ १६ ॥

नलिनीछंद–लिये नृकपाल नृदेह कराल ॥ करे नर मुंडनि की उरमाल ॥ पिये नर श्रोन मिल्यो मदिरासो ॥ कपालि कु देखिये भीमप्रभासों ॥ १७ ॥

श्रावक ॥ दोहा—कपाली कहो विभत्सवपु, कैसे तेरे धर्म ॥ पूजत हौ किहि देवको, करि करि कैसे कर्म ॥ १८ ॥

कपाली ॥ सोरठा—केवल अंगनियोग, देखो हों जगदीश को ॥ सुनो सयाने लोग, जगते भिन्न अभिन्न है ॥ १९ ॥

चंचरी—वेद मिश्रित मांस होमत अग्नि में बहु भाँति सों ॥ शुद्ध ब्रह्म कपाल शोणित को पियो दिन रातिसों ॥ विप्रबालक जालले बलि देतहों न हिए लजों ॥ देवसिद्ध प्रसिद्ध कन्यनि सों रमों भव को भजों ॥ २० ॥

केशव ॥ दोहा—शान्ती करुणा भजि चली, कान मूँदिकै हाथ ॥ संन्यासी इक देखियो, शिष्यनि लीने साथ ॥ २१ ॥

रूपमालाछंद—कोपीन मण्डित दण्डसों नख काँख दीरघ बार ॥ मालाक्ष शोभित हस्त पुस्तक करत वस्तु विचार ॥ संसारको बहुधाँ विरोध कुचित्त शोधकजानि ॥ ठाढ़ी भई तहँ शान्ति सो करुणा सखी सुख मानि ॥ २२ ॥

दोहा—इहि विधि संयम नियमसों, सोंए प्रभुके पाइ ॥ हमहूँ दीजै सिद्धि कछु, शोभन सुखद सुभाइ ॥ २३ ॥

संन्यासी ॥ रूपमालाछंद—सीखौ सबै मिलि धातुकर्मनि द्रव्य बाढ़तु जाइ ॥ आकर्षणादि उचट मारण वशीकरण उपाइ ॥ देहों अदृष्ट तिनैन अंजन अग्नि बंधननीर ॥ शिक्षा कहों परकायमध्य प्रवेशकी धरि धीर ॥ २४ ॥

दोहा—कान मूँदि वह ताजिगई, जी धरि दीह विषाद ॥ शूद्र जहाँ त्रिय वेष धरि, ताको सुनो विवाद ॥ २५ ॥

ऋषि ॥ हीरछन्द—कौन करम कौन धरम कौन सजत काम ॥ राधा वजूटी भषतमनितपररतिनाम ॥ ज्ञासि तिथिहि छाँड़ि करत भोजन न अचेत ॥ जासि न परसाद कननि पूजत हरिहेत ॥ २६ ॥

नारीवेष ॥ दोहा—ज्ञासि तजे परिहरे नर, पावत कहा प्रसाद ॥ श्यामवंदनिहि भागु हों, लावत छोड़ि विषाद ॥२७॥

चामरछंद ॥ कौन वेद मध्य देव श्याम वंदनीकही ॥ वेदको प्रमाण पूज हों न मानिहों सही ॥ राधिका कुमारि काहि नित्य श्याम वंदही ॥ तत्र कुण्ड मृत्तिका सु श्याम वंदनी सही ॥ २८ ॥

नारीवेष ॥ दोहा—जो तू राधाकुण्डकी, माटी मानतु इ-ष्ट ॥ तौ तू मेरो शिष्यहै, देखे वस्तु अदृष्ट ॥ २९ ॥

शूद्र उवाच ॥ दोहा—पीछेह्वैहों शिष्य हों, पहिले सुनो विचार ॥ कौन हेतुते, तू करचो नारीको शृंगार ॥ ३० ॥

नारीवेष ॥ तोमरछंद—तप जाप मंत्र अयज्ञ ॥ मत में तजे गुणि अज्ञ ॥ बहु पाइ जे जेहि शर्म्म, ॥ यह मैं धरचो भषि धर्म्म ॥ ३१ ॥

तारकछंद—पतिनी प्रिय तोहि किधों पति भावै ॥ इहई व्रतु तो पति को उपजावै ॥ नर देह तजे मरि होइ सुनारी ॥ तब होइ भले पतिको अधिकारी ॥ ३२ ॥

नारीवेष ॥ दोहा—हो ह्वै होइहि देहहीं, नरते सुंदरि ना-रि ॥ राधा जू की ह्वै सखी, मिलिहों श्याम निहारि ॥३३॥

शूद्र ॥ तारकछंद–यह जानत हों अतिही यडकायो ॥ काहि जीवतको नर नारि कहायो ॥ वह साधन कौन मिलै जिहि राधा ॥ हम हूँ उपजी जिय साध अगाधा ॥ ३४ ॥

नारीवेष–अब तोसों कहों जिनि काहु सुनावै॥सुनि जाहि सुने उर और न आवै ॥ तीरथ दान सबै व्रत छाँड़े ॥ सो इहि साधन सो हित माँड़े ॥ वेदको भेद सु व्यासहिं पायो ॥ याहि ते नाहिं पुरणानि गायो ॥ कोनाहिं भागनिसों तुम जान्यो ॥ जानिकै अद्भुत मंत्र बखान्यो ॥ ३५ ॥

सरस्वतीछंद–एक अद्भुत मंत्र तामें ताहि साधतु कोइ॥ जापैं त्रिकोटि जपै सुमंत्रहि नारियो तब होइ ॥ नारि ह्वै तब राधिका कृत कुण्ड माँझ अन्हाइ ॥ राधिका सखि ह्वै मिली तब श्यामसुंदर पाइ ॥ ३६ ॥

दोहा–कान मूदि यह सुनतहीं, भागी कहि कहि त्राहि ॥ श्रद्धाके आशाबँधी, देखति है उर दाहि ॥ ३७ ॥

करुणा ॥ विजय–चंद्रमुखीनि में चारु चकोर कि चन्द चकोरनि मै रुचिरो है ॥ लोचन लोल कपोलनि मध्य विलोकत यों उपमा कहँयो है ॥ सुंदरता सरसीनि में मानहु मीन मनोजनिके मनु मोहै ॥ माणिक सों मणि मंडल में कहि को यह बाल वधूनि में सोहै ॥ ३८ ॥

सती॥दोहा-नित्यविहारनि को मढ़ी,त्रिय गण देखि सिहाति॥एक पियति चरणोदकनि, एक उसारनि खाति ॥ ३९॥ पुत्री दक्षिण राजकी, आई तजि कुल तंत्र ॥ देउ कृपा करि

याहि प्रभु, नित्य विहारी मंत्र ॥ ४० ॥ सेवेगी तुमको सदन, छोंडि जु सबै विकल्प ॥ तन धन मन को प्रथमही, करवाये संकल्प ॥ ४१ ॥ सिखए मंदिर माँझ लै, मोहन मंत्र विधान॥उन दीनी गुरु दक्षिणा, सधर अधर मधुपान ॥४२॥

शांति ॥ तारक—इनको कबहूं न विलोकन कीजै ॥ अरु यों करियै तौ निरै पग दीजै ॥ विपदा महँ आनि भजो दुख कीजै ॥ बूड़ि नदी मरियै विष पीजै ॥ ४३ ॥

दोहा— इहि विधि पाखण्डीनि के, थलनि विलोकि प्रकाश ॥ वृंदा देवी पहँ गई, बूझन केशवदास ॥ ४४ ॥ जब लागी देहै तजन, वाणी भई अकाश ॥ सुखसों श्रद्धा मिलन अब, ह्वै है केशवदास ॥४५॥ पूजा शालग्राम की, करि षोड़श उपचार ॥ वंदन आठो अंगते, करति हुती तिहि काल ॥ ४६ ॥

इति श्रीचिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां पाषण्ड धर्म वर्णनोनाम अष्टमप्रभावः ॥ ८ ॥

---

दोहा—नवे माँझ श्रद्धा मिलन, हिय विवेक वैराग ॥ राज धर्म वर्णन सबै, उद्यम कथा सभाग ॥ १ ॥ वृंदा देवी हँसि मिली, श्रद्धहिं कंठ लगाइ ॥ कुशल प्रश्न बूझी सबै, कहि केशव सुखपाइ ॥ २ ॥ मथुरा वृंदावन सबै, ढूँढ्यो देवि अशेषु॥ कबहुँ न श्रद्धा देखियै, चित विचार करि देखु ॥३॥

श्रद्धा ॥ सरस्वतीछन्द–असी हुती हों भैरवी लइ विष्णु भक्ति छुड़ाइ ॥ ताको मिलो तुम जाइ जी सुख पाइ दुःख नशाइ ॥ दौरि दुऔ सुनि मात गातनि की भली कुशलात ॥ सु विलोकि दुरिते पंथ में आवत उर अवदात॥४॥

तारक–निज आजु जिये कुल केशव कोऊ ॥ अति काँपति गात निरोवति दोऊ॥ अकुलाइ मिली अति आतुर भारी ॥ चितवै चहुँधा विन जीव विहारी ॥ ५ ॥

श्रद्धा॥ दोहा–महा भयानक भैरवी, देखी सुनी न जाति॥ देखति हों दशहूँ दिशा, मेरो चित्त चवाति ॥ ६ ॥

शान्ति–विष्णु भक्तिको संगपल, तजतु नेह तो मात ॥ पठई हुती विवेकसों, कहन गूढ़की वात ॥ ७ ॥ शान्ति श्रीहरिभक्ति पै, गई सुनतहीं वात॥ करुणाजू श्रद्धा गई, जहँ विवेक नर तात ॥ ८ ॥

रूपमालाछंद–वाग राग रमे विराजत जह्नुनंदिनि कूल ॥ यत्र तत्र अनेक रंगनि शोभियै फल फूल ॥ बुद्धिके सँग शोभियै तहँ राज राज विवेक ॥ रेणुका मय शुद्ध आसन चित्तमें प्रभु एक ॥ ९ ॥

गीतिका–गुण गानमान विधानसो कल्यान दान सयान सो॥अनुराग याग विराग भाग सँयोग भोग प्रमाण सो ॥ सुख शील सत्य सँतोष शुद्धस्वरूप आनंद हाससो ॥ तप तेज जाप प्रताप संयम नेम प्रेम हुलास सो ॥ १० ॥

दोहा–धीर धारिणी ज्ञान शम, दम सुभाव आचार ॥ ब-ल विक्रम शुभ आदि दै, सकल धर्म परिवार ॥ ११ ॥

रूपमालाछंद–बुद्धिकी सजनी क्षमा शुचि सिद्धि कीर-ति प्रीति ॥ वृद्धि सुंदरता सदा शुचि माधुरीयुत जीति ॥ धी-रता अवधारणा तपसा प्रभा अति उक्ति ॥ वर्णता अवधा-नता सुसमाधि संततयुक्ति ॥ १२ ॥

दोहा–राजधर्म सतसंगयुत, शोभतहै सुखदाइ ॥ श्रद्धा करुणा युतगई, दई आशिषा जाइ ॥ १३ ॥

स्वागता–राज राज उठि पांइनि लागे ॥ राज धर्म सत-संग सभागे ॥ राज पत्नि उठि कंठ लगाई ॥ सिद्धि वृद्धि प-ग धोवन धाई ॥ १४ ॥

दोहा–प्रथम प्रश्न कुशलातकहि, तब बूझी नृप नाथ ॥ करुणायुत श्रद्धागई, कहन आपनी गाथ ॥ १५ ॥

श्रद्धा–ग्रसीहुती हों भैरवी, महामोहके हेतु ॥ विष्णु भ-क्ति हों छीनिली, पठई राज निकेतु ॥ १६ ॥ शासन श्रीहरि भक्तिजू, दई कृपा करि एहु ॥ लीजेजू शिर मानिके, कीजै नहिं संदेहु ॥ १७ ॥

विजय–कामके काम अकाम करो अब बेगि अकामनि आनि अरोजू ॥ मोहके मोहको लोभके लोभको क्रोधके क्रोधको नाश करोजू ॥ कीजै प्रवृत्ति निवृत्ति प्रवृत्ति के पंथ निवृत्ति के पांइ धरोजू ॥ आपने बापको आपने हाथ-कै जीवहि जीवनमुक्त करो जू ॥ १८ ॥

राजोवाच ॥ दोहा—शासन श्रीहरिभक्तिको, सबको सदा प्रमान ॥ सुनि श्रद्धा इहि भाँति के, हम को कठिन विधान ॥ १९ ॥

रूपमालाछंद—तात मात विमात सोदर बंधु वर्ग अशेष॥कौन भाँतिनि हों हतों सग संगहें सुविशेष॥ पापके अपलोक के वनितानि दै बहु शोक ॥ कोप दै बहु भाँति शोकनि घालि लोक विलोक ॥ २० ॥

सतसंग—राज राज भली कही यह बात नित्य प्रमान ॥ मित्र कौन जु शत्रुको जग आपु रूप समान ॥ सर्व्वदा सब भाँति बहु करि एक आनँद शक्ति ॥ और बात न मानिए मन छोड़ि श्रीहरि भक्ति ॥ २१ ॥

राजधर्म ॥ दोहा—राजा ह्वै प्रभु जिनि कहो, तपसी कीसी बात ॥ सिंह जियत क्यों मृगनि सों,नातौ मानै तात ॥ २२ ॥ दान दया मति शूरता, सत्य प्रजा प्रतिपाल ॥ दण्डनीति ए धर्म हैं, राजनिके सब काल ॥ २३ ॥

रूपमाला छंद—दान दीयत विज्ञ को अति अज्ञ कौ बशमीत ॥ दीनको द्विजवर्ण को बहु भूख भूषित भीत॥दीन देखि दयाकरै अति अज्ञ को भुवपाल ॥ गाइको त्रिय जाति को द्विज जातिको सबकाल ॥ २४ ॥

दोहा—धरणी को धन धर्म को, सत्य शील संतान ॥ नृप अपने उद्धार को, सदा रहत मतिमान ॥ २५ ॥

रूपमाला छन्द–शूरता रण शत्रु को मन इंद्रियादिक जानि ॥ सत्य काय मनो वचादिक संपदा विपदानि ॥ चोर ते बटपार ते व्यभिचार ते सबकाल ॥ ईतिते ठगलोग ते जुप्रजानि को प्रतिपाल ॥ २६ ॥

दोहा–सखा सहोदर पुत्र सम, गुरुहू को अपराधु ॥ क्षमे न राजा विप्रहूँ, वनिता विहरत साधु ॥ २७ ॥

दोधकछंद–संतत भोगनिनैरस जाके ॥ राजन सेवक पाप प्रजाके ॥ ताते महीपति दण्ड सँचारे ॥ दण्ड विना नर धर्म न धारे ॥ २८ ॥

दोहा–कै तुम तजो कहाइवो, राजा आजु विवेक ॥ महामोह को दण्डकै, दीजै भाँति अनेक ॥ २९ ॥

राजा–यद्यपि ऐसोई सदा आदि अंत है राजु ॥ तदपि आपने वंश को, कैसे मारों आजु ॥ ३० ॥

राजधर्म ॥ दोधक–होहठ ऐसो युधिष्ठिर कीनो, ॥ लोग रहे कहि क्यों हनदीनो ॥ अंत खिसाइकै युद्ध सँचारे ॥ घर मांझ ते नारि समेत निकारे ॥ ३१ ॥

दोहा--बंधु नाश अर्ज्जुन कियो, श्रीहरि के उपदेश ॥ तिनहीं अघ मोचन कह्यो, होइहि चारे देश ॥ ३२ ॥

राजधर्म ॥ स्वागता–पाप मारि प्रभु धर्म सँचारो ॥ लोक लोक यश को न पसारो ॥ ३३ ॥

विवेक ॥ बाप सों युद्ध कहो किनि कीनो ॥ आजु चल्यो

यह धर्म नवीनो ॥ एक पुरातन बात सुनावो ॥ मोहके मोह ते मोहिं छुड़ावो ॥ ३४ ॥

राजधर्म ॥ दोहा--रामचद्र जगचंद सों, कीन्हो हो संग्राम ॥ रामचद्र के सुतनि जब, बाजि गह्यो गुणग्राम ॥ ३५ ॥

विवेक ॥ तोटकछंद ॥ अनजानतहीं उन रोष धरे ॥ पहिचानि पिता तब पांइ परे ॥ हम जानि पिता रण क्यों हनिये ॥ यह धर्म कथा कहु क्यों गुनिये ॥ ३६ ॥

राजधर्म ॥ दोधक—यद्यपि हैं अति धर्म प्रवीने ॥ युद्ध मरुत्त पिता कहँ कीने ॥ अर्ज्जुन के सुत अर्ज्जुनही को ॥ शीश हत्यो रणमें अतिनीको ॥ ३७ ॥ राजनि केवल राज के काजै ॥ मारत केशव काहु न लाजै ॥ कै अति प्रेम पिता समुझावो ॥ मोह के मोह ते मोहिं छुड़ावो ॥३८॥

दोहा—ब्रह्म दोष युत मारने, कहा तातकहँ मात ॥ जौं न मारियै राज तौ, नर्क परहु सुनि तात ॥ ३९ ॥ सिगरे जम्बूद्वीप में, पूरि रह्यो परिवार ॥ राजा सिगरे तंत्रको, राम नाम है सार ॥ ४० ॥

उद्यम॥दोहा—बोलि लयो उपकार कहँ,गहि उद्यमको हाथ॥ राज सभा में आइ कै, बैठे तब नरनाथ ॥ ४१ ॥ याचक पूजक योग युत,पण्डित मण्डित धर्म ॥ वरणे आनि विवेक सों, महामोह के कर्म ॥ ४२ ॥

राजधर्म ॥ विजय—भूलत जीव चिदानंद ब्रह्म समुद्र के स्वादहि सूँघत नाहीं ॥ पीवे न वेद पुराण पुकारि

पुकारि पिवावत है बहुधाहीं ॥ झूठे विषै विष सागर तुंग तरंगिनि पीवतहीं न अघाहीं ॥ मज्जत है उन मज्जुत केशवदास बिलास विनोद बृथाहीं ॥ ४३ ॥

दण्डक–जैसे चढ़े बाल सब काठ के तुरंगपर तिनके सकल गुण आपुही में आनेंहैं ॥ जैसे अति बालिकावे खेलति पुतरि अति पुत्र पौत्रादि मिलि विषय वितानेंहैं ॥ आपनो जो भूलि जात लाज साज कुल कर्म जाति कर्म कादिक नहीं सो मनमाने हैं ॥ ऐसे जड़ जीव सब जानत हो केशौदास आपनी सचाई जग सांचोई कै जाने हैं ॥ ४४ ॥

सवैया–अंध ज्यों अंधनि साथ निरंध कुवां परिहूं न हिए पछितानो ॥ बंधुकै मानत बंधन हारिनि दीने विषै विष खात मिठानो ॥ केशव आपने दासनि को फिरि दास भयो भवयद्यापिरानो ॥ भूलि गई प्रभुता लग्यो जीवहि बंदिपरे भले बंदि अघानो ॥ ४५ ॥

राजधर्म ॥ मदिरा– रूप रचे यहि लोकहि केशव चेत को आपु प्रवेश करचो ॥ चेतु भले गुन हेतु भये सुख दुःख सुतो सबही है कुरचो ॥ तिनके कहि के चल भोगनि को सुरनर्कनिरें पद पैंड धरचो ॥ इहि भाँति रच्यो जग झूठ महा सुकहा जगदीशके हाथ परचो ॥ ४६ ॥

राजा ॥ दोहा–उद्यम कीजै आजु ते, वह उद्यम अकुलाइ ॥ जीति शत्रु जन कहँ मिलो, देखो प्रभु के पाँइ ॥ ४७ ॥

उद्यम ॥ गज वाजी सम्बर घने, ठाढ़े हैं दरबार ॥

योधायोधा युद्ध को, गहे हाथ हथियार ॥ ४८ ॥ उनके राजा काम है, सब योधनिको सार ॥ ताको राज प्रयोग ये एकै वस्तु विचार ॥ ४९ ॥

वस्तु विचार ॥ सवैया–वासरहूँ निशिनो दरबार बसै मल धार रहै न घरीको ॥ सूरति शूकरिकीसी सलोम कहा वरणों थलकाम थरी को ॥ शूकरसे विषयी जन ताहि महा सुख पावत अंक धरी को ॥ मारो कहा अब मार मर्‍यो कहु ठाकुर कामनिरै नगरी को ॥ ५० ॥

राजा ॥ दोहा–को कहिये कहि कुशल मति, क्रोध जीतिबे जोग ॥ ताको राज प्रयोगिये अब एकै संतोष ॥ ५१ ॥

संतोष ॥ सवैया–निर्मल नीर नदीनि के पान बनी फल मूल भखो तमपोषे ॥ सेज शिलान पलास के डासन डासिके केशव काज सँतोषे ॥ जो मिलि बुद्धि विलासिनि सों निशिवासर राम के नामहिं घोषे ॥ राज तुम्हारे प्रताप कृशानु दशा इहि लोक समुद्रनि सोषे ॥ ५२ ॥

दोहा–परत्रिय जननी जानिये, परधन सुख विष तूल ॥ लोभ कहा सब मोह दल, जरि जैहैं यहि शूल ॥ ५३ ॥ अपने दल बल समुझियै, रे भट आलस छोड़ि ॥ प्रभु की तुम पाषण्ड पुर, फेरो प्रतिदिन डोंड़ि ॥ ५४ ॥

इतिश्रीचिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां विवेक राज धर्म उद्यम मंत्रवर्णनं नाम नवमप्रभावः ॥ ९ ॥

दोहा—केशव दशम प्रभाव में, श्लेषक कवित विलास ॥ वर्णन के मिसु प्रगटहीं, वरषा शरद प्रकाश ॥ १ ॥

तोटक—तापुर में यह बात ॥ डोंड़ी बजी अधरात ॥ आयसुदेत विवेक ॥ ब्रह्म धरो चित एक ॥ २ ॥

सोरठा—महामोह यहि बात, कीनो कोप विवेक पर ॥ कूंच बड़ेहीं प्रात, करि काशी सनमुख चल्यो ॥ ३ ॥

चार्वाक ॥ दोहा—कूंच न कीजै राज अब, आयो वरषा काल ॥ शरदहि आवतहीं वरद, करो विवेक विहाल ॥ ४ ॥

विजय—लोग लगे सिगरे अपमारग पोच भलो बुरो जानि न जाई ॥ चंचल हस्तिन को सुखदा अचला विपदामिनि को दुखदाई ॥ हंस कलानिधि शूरप्रभा हत खंडशिखंडनि की अधिकाई ॥ केशव पावस काल किधों अविवेक महीपति की ठकुराई ॥ ५ ॥ ज्वाल जगै कि चलै चपला नभधूम घनो की घनो घनघूरो ॥ खेचरलोगनिके अँशुवा जल बूँद किधों वरनो मति शूरो ॥ केकी कहै इह कीकई केशव गौ जरि जोर जवासो समूरो ॥ भागहुरे विरहीजन भागहु पावस कालकी पावक पूरो ॥ ६ ॥ घनघोर किधों भट पुञ्जनिपै तरवार कढ़ी तड़िता दुति भीनी ॥ गहि शक्र शरासन केशव जोति समूहनिकी पदवी बहुलीनी ॥ कमला तजि पद्मिनि बूड़ि मरी धरनी कहँ चंदवधू गहि दीनी ॥ बरषा हरषीकि बजाइ निशान पुरंदर सूरज को रिस कीनी ॥ ॥ ७ ॥ मिलि मेलेहिं गात सुअंबरनील रह्यो लगि बात सुनो

गजगामिनि ॥ जलधार बहै बहु नैननि ते न रहे केहि केशव वासर यामिनि ॥ कबहूँ कबहूँ कछु बात कहैं दमकै द्युति दन्तनिकी जनु दामिनि ॥ पिय पीय रटे मिसु चातकके वरषा हरषी कि वियोगिनि कामिनि ॥ ८ ॥

सवैया—कोप कर्यो द्विजराजसों केशव कोविद चित्त चरित्रनि लोपति ॥ साधनहू अपमारग लावति दूरि करै सतमारगकी गति ॥ चोरनिको बिभिचारिनिको निशिचारनिको उपजावतिहै रति ॥ बातक चातकते समुझे वरषा हरषी कि वियोगिनि की मति ॥ ९ ॥ दूषतिहै परपंकज श्रीगति हंसनिकी न तऊ सुखदाई ॥ अंबर ओट किये मुख चंदहि छूटि छपै छन भान छपाई ॥ सोहतिहै जलजावली केशव पीन पयोधरमें दुखदाई ॥ मारग भूलती देखतहीं अभिसारिणि सी वरषा बनिआई ॥ १० ॥ भव कारण जीवन देति भली विधि भूलिहुतो न भई हित हीनी ॥ द्विजराजकी नेकहुँ कानि करी नहिं तीनिहुँ लोकनि कीरति लीन्ही ॥ परिताप हरे सब भूतलके रविके कुलको पदवी बहु दीनी ॥ कहि केशव चातक मोर ररैं वरषा हरषीकी सती रिसकीनी ॥ ११ ॥ इति वर्षा वर्णनम् ॥

अथ शरद ॥ दोहा—बीति गई वरषा सबै, आई शरद सुजाति ॥ केशव वासर शोभसी, बीती कारी राति ॥ १२ ॥

दंडक—छूटि गयो प्रजनि चलीबो अपमारगको आपने आपने सतमारग समीतिहैं ॥ सोहति परमहंस सुर

सभ कलानिधि गाइ द्विज देवतानि पूजिबेकी प्रीतिहै ॥ पावै न प्रवेश बिभिचारी निशिचारी चोर धामनि धामनि रामदेवजू की गीतिहै ॥ केशौदास सबहीके हृदय कमल फूले शोभित शरद कीधों आछी राजनीति है ॥ १३ ॥ वन्दे नरदेव देव केशव परमहंस राजे द्विजराज वपु पावन प्रबलहै ॥ अवनि अकाशहूं प्रकाशमान केशौराइ दिशि दिशि देश देश इच्छतु सकलहै ॥ पितर प्रयाण करैं दूषण सकल हरैं मन वच काइ भव भूषण अमल है ॥ ठौर ठौर वरणत कवि शिरमौर और शरद प्रकाश किधों गंगा जू को जलहै ॥ १४ ॥ जहाँ तहाँ दुर्गापाठ पठत प्रवीण द्विज धाम धाम धूम धर मलिन अकाशसो ॥ राज राज सिंहासन सँयुत चँवर छत्र बाजत निशान गजगाजत हुलास सो ॥ ठौर ठौर ज्वालामुखी दीसे दीपमालिकासी शोभित शृंगार हार कुसुम सुवाससो ॥ केशौदास आसपास लसत परमहंस देवी को सदन किधों शरद प्रकाश सो ॥ १५ ॥ केशव जगत ईश कमला समेत तहाँ जागे ज्योति जल थल विमल विलास सो ॥ वंदतहैं भूतनाथ भाँति भाँति विधियुत देखियतु देतु दीप अघ ओघ नाश सो ॥ दिशिदिशि सुमन सफूले हैं प्रभाव जाके वरण वरण बहु विशद हुलास सो ॥ जाहि जग लोचन विलोकि सुख पावै क्षीर सागर उजागर की शरद प्रकाशसो ॥ १६ ॥ चँवकि चिकुर चारु चन्द्रमुखी चन्द्रिका

सुचन्दन चढ़ायो साधु मन वच काइकी ॥ कृशकटि केहरि कमलदल पदकर खंजननयन कुंद दन्त सुखदाइ की ॥ आछेतनु गंगा जल सहित शृंगार हार केशौदास हंसगति सुंदर सुभाइ की ॥ बीतेनिशि बरषाके आईहै जगावनको शरदकी शोभा वृन्द दासी रघुराइकी ॥ १७ ॥

इति श्रीचिदानन्दमग्नायां विज्ञानगीतायां वर्षा शरद वर्णनोनाम दशमःप्रभावः ॥ १० ॥

---

दोहा–महामोह नरनाथ तब, कूच कर्‌यो अकुलाइ ॥ शोभन शरदहि पाइ बहु, दुन्दुभि दीह बजाइ ॥ १ ॥

भुजंगप्रयात–चले मत्तमातंग भृङ्गावली सों ॥ चले वाजि कुद्दनृ चिंतावली सों ॥ चले स्यन्दनस्थाययोधाप्रवीने ॥ चले पुंज पैदा धनुर्बाण लीने ॥ २ ॥

चामर छंद ॥ रथ राजि साजि बजाइ दुंदुभि कोहसों करि साजु ॥ बिंदुमाधव को चल्यो दल भूमिको अधिराजु ॥ उठि धूरि भूरि चली अकाशहुँ शोभिजे जुअशेष ॥ जनु सोधु देन चली पुरंदर को धरा सुविशेष ॥ ३ ॥ वाराणशी अति दूरि ते अवलोकियो मन पूत ॥ ऊँचे अवासनि उच्च सोहाति हैं पताक विधूत ॥ शोभाविलास विलोकि केशवराइ यों मतिहोति ॥ वैकुंठ मारग जात मुक्तनिकी नवै ज्यों जोति ॥ ४ ॥

मदिरा ॥ गंग अन्हाइ के ईशहि पूजत फूलनिसों तन

फूलि गनो ॥ आनँद भूलि कै भौंरनि के मिसु गावतहैं बड़ भाग मनो ॥ बाहु लतानि उठाइ कै नाचत केशव राँचत हीत घनो ॥ बागनि शीतल मंद सुगंध समीर लसै हरि भक्त मनो ॥ ५ ॥

दोहा–पार देखि वाराणशी, डेरा कीनो बार ॥ महामोह नरपाल तब, दल रोकियो अपार ॥ ६ ॥

भुजंगप्रयात ॥ प्रबोधो दया एक वाराणशीहै ॥ सखीसी सदासंग गंगालसीहै ॥ रुके जो महामोह ले भूमि अच्छा ॥ महादेव मानो रची रामरच्छा ॥ ७ ॥

दोहा–महामोह पठए तहाँ, भ्रम अरु भेद वसीठ ॥ शोभित हुते विवेक जहँ, परम धर्म के ईठ ॥ ८ ॥

रूपमाला छंद–देखियो शिवकी पुरी शिवरूपही सुखदानि ॥ शेष पै न अशेष आनन जाइ वेष बखानि ॥ न्हात सन्त अनंत वेष तरंगिणीयुत तीर ॥ एक पूजत देवता इक ध्यान धारणधीर ॥ ९ ॥ एक मंडित मण्डली महँ करतवेद विचार॥एक नाम रटैं पढ़ैं श्रुति शुद्ध सारणसार ॥ एक दंड धरे कमंडलु एक खंडितचीर ॥ एक संयम नियमदादिक एक साधि समीर ॥ एकहैं अनुरक्त कर्मनि एक नित्य विरक्त ॥ विन्दुमाधव केउ माधवके कहावत भक्त ॥ १० ॥

तोटक छंद–अति भूवपुरी सम मानि तबै ॥ इन भाँतिनसों अवलोकि सबै॥नृपनायकके दरबार गए ॥ गुदरे तब भीतर बोलि लए ॥ ११ ॥

दोहा—उद्यम युत सतसंगयुत, देखि विवेक अखेद ॥
करि प्रणाम अति दूरिहिं, बैठे भ्रम अरु भेद ॥ १२ ॥

भ्रम ॥ स्वागता—महामोह महिमंडल लीनो ॥ तुमहिं राज यह आयसु दीनो ॥ तजो आजु शिवकी रजधानी । जाइ रहो जहँ श्रीविधि वानी ॥ १३ ॥

भेद—हिय होई जासों कछु नेहु ॥ हमहिं आजु श्रद्धा गहिदेहु ॥ महाराज तुमको पहिरावै ॥ गहो पाइ उठि जो घर आवै ॥ १४ ॥

सोरठा—महाराज मन तात, महामोह की बात सुनि ॥
धीरज उर अवदात, पठए उत्तर देन तब ॥ १५ ॥

दोहा—धीरज गये जु तिहि सभा, जहाँ पापकी गाथ ॥
महामोह बैठे तहाँ, असतसंगके साथ ॥ १६ ॥

धैर्यउवाच—शासना दई विवेक राज राज है कृपाल ॥ छोड़ि देहु जीव को रिता करे महा विहाल ॥ दूरिकै सबै विचारु भाजि जाहु सिंधु पार ॥ जौ न जाहु विष्णु भक्ति अग्नि तेज होउ छार ॥ १७ ॥

दोहा—कोप करचो यह बात सुनि, गहो गहो जनि जाइ॥ वीर धीर धरि दीह दुख, गयो गयंद ढहाइ ॥ १८ ॥ शोर भयो दुहुँओर तब, उतरे गंगा पार ॥ गए विन्दुमाधव निकट, श्रीविवेक तिहि बार॥ १९ ॥ शस्त्र छोरि करजोरि तब, विनती करी विवेक॥ मनसा वाचा कर्मना, केशव भाँति अनेक २०॥

विवेक ॥ भुजंगप्रयात—महादेव है जू महादेव धारे ॥

महादेव ह्वै कै महीदेव पारे ॥ महामोह काटे लिये नाम आधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्री विंदुमाधो ॥ २१॥ धरा धार धारी निराधार धारी ॥ सदा ब्रह्मचारी व्रत स्त्री विहारी ॥ भये सर्व्व विद्या भये नाम आधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्री विंदुमाधो ॥ २२ ॥ अरूपी चिदानंद जोतिप्रकाशी ॥ विरूपी जगद्रूप चिद्रूपवाशी ॥ कृपा के करो मुक्ति गीधो अगाधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्रीविंदुमाधो ॥ २३ ॥ अनंगी अनंगादि ज्योतिप्रकाशी॥अनंताभिधेयं अनंताधि वाशी॥महादेवहू की प्रवाधा निवाधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्री विंदु माधो ॥ २४ ॥अमेयं प्रवर्ज्जी अनाद्यन्तरन्ता ॥अशेषप्रहारी दशग्रीव हन्ता ॥ अलच्छीनिलच्छीनिकी सिद्धि साधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्रीविंदुमाधो ॥ २५ ॥ त्रिदेवः त्रिकालः त्रयीवेद कर्त्ता ॥ त्रिश्रोता कृती सूत्रयी लोकभर्त्ता ॥ कृपाकै कृपापात्र कीनेनिषाधो ॥ प्रवोधो उदो देहि श्री विन्दु माधो ॥ २६ ॥ तपी तिव्र तापी तपस्याधिकारी ॥ परब्रह्म जूब्रह्मदोष प्रहारी ॥ किए पार संसार व्याधो निषाधो॥प्रवोधो उदो देहि श्री विंदुमाधो ॥ २७ ॥ अधर्मी उधारो तिहूँ लोक गामी ॥ रची नित्य वाराणशी राजधानी ॥ हरो पीर मेरी रमाधो उमाधो॥प्रवोधो उदो देहि श्रीविंदुमाधो ॥२८॥

विंदुमाधव–विवेकाग्र ह्वै विज्ञ विज्ञप्ति कीनी ॥ सुनी विंदुमाधो सबै मानि लीनी ॥ कृपाकै कह्यो मांगियै विन्दु माधो ॥ प्रबोधो उदो देहि श्रीविन्दुमाधो ॥ २९ ॥

विवेकउवाच–सुनो ईश यास्तोत्र को जो सुनैगो ॥ पढ़ावै पढैगो गुनावै गुनैगो ॥ सबै संपदा सिद्धि ताको करोजू ॥ सदामित्र ज्यों शत्रुताको हरो जू ॥ ३० ॥

श्रीविंदुमाधव ॥ दोहा–होइ प्रबोध उदै हिये, तेरे केशव राइ॥याहि पढ़ै अति प्रीतिसों, सो वैकुंठहि जाइ॥३१॥ विदा-विन्दुमाधवदई, तवहीं वार विचार॥ गए विवेक विशेष मति विश्वनाथ दरबार ॥ ३२ ॥

चामर ॥ पापके कलाप मारि तापके प्रताप तारि ॥ शोग रोग भोगको अयोग दुःखदोषदारि ॥ जानके विमान भंजि गंजि मूढ़ गूढ़ गाथ ॥ राखिलेहु राखि लेहु राखिलेहु विश्वनाथ ॥ ३३ ॥ धर्म्म ते विधर्म ते अधर्मधर्मते विचारि ॥ भेद ते विभेद ते अभेद के प्रकाशकारि ॥ कालते अकाल ते विकालते त्रिकाल नाथ ॥ राखि लेहु राखि लेहु राखि लेहु विश्वनाथ ॥ ३४ ॥ शर्म्म ते अशर्म्मते सुनो अशेष शर्म्मदानि ॥ भूखते पियासते संताप तोष ते बखानि ॥ वृद्धि ते समृद्धि ते प्रसिद्ध ते प्रसिद्ध नाथ॥ राखिलेहु राखिलेहु राखिलेहु विश्वनाथ ॥ ३५ ॥ मर्णते सुजन्म ते कुजन्म ते सदा सनेह ॥ तात मात मोहते विमोहते महाविदेह ॥ लोकते अलोकते त्रिलोकते त्रिलोकनाथ ॥ राखिलेहु राखिलेहु राखिलेहु विश्वनाथ ॥ ३६ ॥ मित्र दोष मंत्र दोष राज दोष ते कृपालु ॥ देवदोष विष्णुदोष ब्रह्मदोष

ते दयालु॥वेद दोष ते अनाथ दोषते अदोषनाथ॥ राखिलेहु राखिलेहु राखिलेहु विश्वनाथ ॥ ३७ ॥

विश्वनाथ ॥ दोहा—राखिलेउँ तोकों सदा, सबते केशवराइ ॥ याहि पढ़े प्रति बासराहि, सो सबहीं सुखपाइ ॥३८॥ पाइ प्रबोध उदो हिये, विश्वनाथ ये हर्षि ॥ गंगा जूको जाइ पुनि, करे प्रणाम महर्षि ॥ ३९ ॥

भुजंगप्रयात—शिरश्चन्द्रकी चन्द्रिका चारु हाशे ॥ महापातकी ध्वांतधामप्रणाशे ॥ फणी दुग्धभावे अनंगारि अंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४० ॥ धरा मध्य ब्रह्माण्ड को भेदि आई ॥ जगज्जीव उद्धार को वेद गाई ॥ मही निर्गुनै स्वप्रकाशे विहंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४१ ॥ तजे देह देही पयो मध्य न्हाहीं ॥ ततो भेदि कै न्याइ ब्रह्माण्ड जाहीं ॥ भवच्छेदिकै तिब्र तुंगे तरंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४२ ॥ चले निश्चले निर्मले निर्विकारे ॥ असंसार संसार मध्येकसारे ॥ अमेय प्रभावै अनन्ते अनंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४३॥ सदा सर्व दोषादि संसोष कारे ॥ महामोह मातंग अंग प्रहारे ॥ चिदानन्द भावेधि शान्ते सुरंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४४ ॥ धरा लोक पाताल स्वर्ग प्रकाशे ॥ मनो वाक कायाज कर्म प्रणाशे ॥ जगन्मातु भावे सदा शुद्ध अंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४५ ॥ सुने स्वप्नहू में विलोके स्मरेहू ॥ क्षिए होत निष्काम नामे रहेहू ॥ करे

अच्छवेस्नान प्रत्यक्ष अंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४६ ॥ गिराधौ रमाधो उमाधो अनन्ना ॥ स्मरे देवि तो नाम ब्रह्मांडरत्ना ॥ कहे राइ केशौ विवेक प्रसंगे ॥ नमो देवि गंगे नमो देवि गंगे ॥ ४७ ॥

श्रीगंगोवाच ॥ दोहा—सर्व भाव तु सर्वदा, पावन केशव राइ ॥ यह अष्टक नितप्रति पढ़ै, सो नित गंगान्हाइ ॥ गंगा जू हि प्रणाम करि, केशव उतरे पार ॥ जात विवेकहि कटक में, दुंदुभि बजे अपार ॥ ४८ ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां चितानंदमग्नायां श्रीविंदु
माधव विश्वनाथ गंगास्तुति वर्णनंनाम
एकादशःप्रभावः ॥ ११ ॥

दोहा—युद्ध वर्णिवो द्वादशें, महामोह की हारि ॥ केशव राइ विवेक को, जय वर्णिवो विचारि ॥ १ ॥

रूपमालाछंद—हयहींस गर्जि गयंद घोष रथीनिके तेहि काल ॥ बहुभेवरुंज मृदंग तुंग बजी बड़ी करनाल ॥ बहुढोल दुंदुभि लोल राजत विरुद वंदि प्रकाश ॥ तहँ धूरि भूरि उठी दशोंदिशि पूरियौ सुअकाश ॥ २ ॥

दोहा—महामोह तब कोह करि, पठए दूत प्रचंड ॥ धर्म कर्मयुत युद्ध को, पट्ठ पाखंड अखंड ॥ ३ ॥ तब विवेक प्रति युद्धको, आगम सुनत नसेत ॥ पठई तहाँ सरस्वती, सन्मुख सशर निकेत ॥ ४ ॥

रूपमाला छंद–शिर धर्म शास्त्र मुखेन्दु सुन्दर वेद लोचन तीनि ॥ हरिभक्ति को महिमा हृदयहनि केत वादिकवीनि ॥ सांख्य बाहुकनाद भाषित भाष्य न्याय सुनाद ॥ रणशोभमान सरस्वती जनु अंबिका अविषाद ॥ ५ ॥ सो गदादिक भागिगे सबहू न मागध इंग ॥ सिंधुपार गये तिएक अनेक बंग कलिंग ॥ पामरादि दिगम्बरादि कपालकादि अशेष ॥ मारए अरु मार बार गए तिनीचनि भेष ॥ ६ ॥

दोहा–निंदक एकादशिनि के, मध्यदेशमेंवार ॥ अरु पाखण्ड धर्म सब, गए सिंधुके पार ॥ ७ ॥ जब आयो रण लोभ तब, आयो दीरघदान ॥ देखन लागे देवगण, बल विक्रम परिमान ॥ ८ ॥

दानउवाच ॥ सवैया–स्योवसुदेउ सबै पशु केशव रोमन सूतनि पाट जटे पट ॥ भोजन भाजन भूषण देहरे काटह कोटिन याचक शंकट ॥ पुत्रनि देहु कलत्रनि देहुरे प्राणनिदेहुरे देहु लगीरट ॥ लोकनि को भय लोपि विलोकिये दीह दरारनि दारिद के घट ॥ ९ ॥

दोहा–आए क्रोध विरोध सब, कीने क्रोध अपार ॥ सहनशील संयुक्त तहँ, आए वस्तु विचार ॥ १० ॥

वस्तुविचार ॥ सवैया–मारिये काहेको क्यों मरै केशव ऐसो उपाउ न जी जनिएरे ॥ एकते रूप अनेक भए सब वेद पुराणनिमें सुनिएरे ॥ थावर हूं चर हूं जलहूं थल देखि

ए सूरति आपनि एरे॥ क्रोध विरोध भए भ्रम भेद सो काम कहा बपुरा गुनिएरे॥ ११॥

दोहा–पुण्य पाप सुख दुख जुरे, आलस उद्यम तत्र॥ गर्व प्रणयनय मान मन, कलह काम एकत्र॥ १२॥ योग वियोग सुयोग सों, बहु वियोग अरु भोग॥ राग विराग धिराग सो, काटिनरोग अरोग॥ १३॥ अनाचार आचार अरु, सदाचार विभिचार॥ सत्य असत्यनि आदिदै, नित्यानित्य प्रहार॥ १४॥ महामोह तब झुकि उठे, लखि सतसंग विवेक॥ भरहराइ भट भगि चले, कहा अनेकरु एक॥ ॥ १५॥ तुमुल शब्द दुहुँदिश भयो, भूतल हल्यो अकाश॥ देव अदेवनि जानियो, भयो विवेक विनाश॥ १६॥ ब्रह्मदोष तब आपने, वंशहन्यो करिकोह॥ जाइ पिताके पेट में, भागि चल्यो महामोह॥ १७॥

रूपमाला–रण जीति खेत बजाइ दुंदुभि जीउलै सुख पाइ॥ करिगंग को हरको रमापति को प्रणाम बनाइ॥ बहु दै द्विजातिनि दान वंदिनिसों पढ़ाइ सुगीत॥ तब राज राज विवेक मंदिर में गए सँग मीत॥ १८॥

दोहा–जय को करि अविवेक अरु, दै शिर तिलक प्रभाउ॥ कही बात सतसंग प्रभु, अरिको करो उपाउ॥ १९॥

रूपमालाछंद–शत्रु को अरु अग्नि को रणको बँचे अवशेषु॥ होइ दीरघ दुःखदायक तुच्छकै जानिलेषु॥ नी-

ति भाषत वेद है नृपधर्म शास्त्र पुराण ॥ हों निवेदन ताहि ते किय विज्ञ जानि सुजान ॥ २० ॥

राजोवाच ॥ दोहा—भली कही यह बात तैं, अब मोसों समुझाइ ॥ कहो जाइ हरि भक्ति सों,करै विनाश उपाइ॥२१॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां चिदानंदमग्नायां विवेक जय वर्णनोनाम द्वादशःप्रभावः ॥ १२ ॥

---

दोहा—मनहिं आनि समुझाई हैं, गिरा गूढ़ मति साधि ॥ माया दरशन करहिंगे,तेरह में ऋषिगाधि ॥ १ ॥

रूपमालाछन्द—भीम भाँति विलोकियै रणभूमि भूअतिअंत ॥ श्रोणकी सरिता दुरन्त अनन्तरूप सुनन्त ॥ यत्र तत्र धुजा परे पट दीह देहनि भूप ॥ टूटि टूटि परे मनो बहुवात वृक्ष अनूप ॥२॥ पुंज कुंजर शुभ्र स्यन्दन शोभियै अतिशूर ॥ ठेलि ठेलि चले गिरीशनि पेलि शोणितपूर ॥ ग्राह तुंग तरंग कच्छप चारुचमर विशाल ॥ चक्रसे रथ चक्र पैरत गृद्ध वृद्ध मराल ॥ ३ ॥

हरिलीला छन्द—हा काम हा तनय क्रोध विरोध लोभ॥ हा ब्रह्म दोष नृपदोष कृतघ्न क्षोभ ॥ मोको परी विपति को न छड़ाइ लेइ ॥ कासोंकहों वचन कौन बचाइ देइ ॥ ४ ॥

संकल्पउवाच ॥ दोहा—महाराज समुझो हिये, कछू न कीजै शोक ॥ चिरंजीव प्रभु चाहियै, कालिह होइगो लोक॥ ॥ ५ ॥ पठइ दई हरि भक्ति तहँ, सरस्वती बड़भाग ॥ उपदेशन मनमूढ़को, उपजावन वैराग ॥ ६ ॥

रूपमाला छन्द–पुत्र मित्र कलत्र के तजि वत्स दुःसह सोग॥ कौनके भट कौन की दुहिता मृषा सब लोग॥होत कल्पसतायु देव तऊ सबै नशिजात ॥ संसारकी गति जानि कै अब कौनको पछितात ॥ ७ ॥

दोहा–एक ब्रह्म साँचो सदा, झूठो यह संसार॥कौन लोभ मद कामको, को सुत मित्र विचार ॥ ८ ॥ तुम्हैं गए तजि वार बहु, तुमहुँ तजे बहुबार॥तिनलगि सोच कहा करो, रे बावरे गँवार ॥ ९ ॥

मनउवाच–शोक विदूषित उरासि अब, नहिं विवेक अवकाश॥ केवल प्रेम प्रकाश को, समुझतु मोह विलाश॥१०॥

सरस्वती॥नाराचछंद– हिये विना परेसु को जु प्रेम वृक्ष लाइयै ॥ मनोभिलाष लाख नीर सींचि कै बचाइयै ॥ अकालकाल अग्निदोषपाइ कै सहूँ जरै॥ त्रिलोककै अशेष शोक फूल फूलिकै फरै ॥ ११ ॥

मनउवाच॥ दोहा–यह इक बातभली भई,श्रीभगवतीकृपाल ॥दीनो दरशन आनि अब, तुम हमको इहिकाल॥१२॥

सरस्वती ॥ दोहा–होनहार जग बात कछु, ह्वैही रहै निदान ॥ब्रह्माहू मेटन लगै, तउ न मिटै परवान ॥ १३ ॥

मन ॥ दोहा–देवी कहियै कौन विधि, मेरो मरिबो होइ॥ जाइ मिलौं लोभादिकनि, इहाँ मरै को रोइ ॥ १४ ॥

देव्युवाच–यह जग जैसे धूरिकण, दीहवाच सब होइ ॥ को जाने उड़िजातकहँ, मरे न मिलई कोइ ॥ १५ ॥

मनउवाच–काहेते प्रभुता बढ़ति, दिन दिन होति प्रकाश ॥ देवी कहियै करि कृपा, किहिते होत विनाश॥१६॥

 देव्युवाच–आयुर्बल कुलशोभ श्री, प्रभुतादिक तरु जान ॥ ब्रह्मभक्ति जल शक्तिते, बाढ़त है दिनमान ॥ १७॥ नित्यशात तू सत्य यह, मानो मन अवदात ॥ ब्रह्मदोष के अग्नि कण, सब समूल जरिजात ॥ १८ ॥

रूपमाला छंद–ब्रह्मदोष प्रवृत्तिके कुल आनि भो-अवतार ॥ पत्रपुष्प समूल कारण वंश भो सब छार ॥ ब्रह्म भक्ति निवृत्तिके कुल कल्प वेलि समान ॥ ताप ताप प्रभावके बल बढ़तु है दिन मान ॥ १९ ॥

दोहा–ब्रह्मदोष जिनके हिये, उपजत क्यों हूँ आनि ॥ तिनके कुलके नाशमन, मनते नियत बखानि ॥ २० ॥ पातकको नहिं जानहीं, सपने हूँ सब साधु ॥ दोषन से संसर्ग के, जिहि जाको आराधु ॥ २१ ॥

मनउवाच–देहु कृपा करि भगवती, मोकहँ सो उपदेश॥ जिहि ममता मिटि जाइ सब, उपजत जामे क्लेश ॥ २२ ॥

रूपमाला छंद–आपुते उपजे कहो मम गोत एक सुजान॥ एक पुत्र बखानिये अरु एक जूक प्रमान ॥ पोखियै सुत क्यों तजौं सब जूक जाति अखेद ॥ शोचनीय अशोचनीय न मूढ़मानत भेद ॥ २३ ॥

दोहा–मन पुत्रादिक जो सबै, यद्यपि जगत अनित्त ॥ तिनबिन और कछू न अब, आवे मेरे चित्त ॥ २४ ॥

सरस्वती–मोहमनी माया वशी, औरन मनमें आइ ॥ ताके संभ्रम विभ्रमनि, भ्रमे न महि अकुलाइ ॥ २५ ॥ जे जगमें जन मत्त हैं, तिनके केशवअंत ॥सबही सबको सर्वदा, माया परम दुरन्त ॥ २६ ॥

मन–मायाको संक्षेप सों, कहियै कछू विलास ॥ जानि युक्त क्रम छाड़ियै, उपजै चित्त उदास ॥ २७ ॥

सरस्वती ॥ दोधक–संसृति नाम कहावति माया ॥ जानहु ताकहँ मोहकी जाया ॥ संभ्रम विभ्रम संतति जाकी ॥ स्वप्न समान कथा सब ताकी ॥ २८ ॥

दोहा–ताकी परम विचित्रता, जानि परै कछु तोहिं ॥ सोइ कथा अब सब कहों, जो बूझी है मोहिं ॥ २९ ॥

दोधक–भूतल मालव देश वसेजू ॥ तामहँ ब्राह्मण गाधि बसेजू ॥ सोदर सुंदरि बंधु तजे जू ॥ बोधको कानन जाइ सजे जू ॥ ३० ॥ सुंदर स्वच्छ सरोवर देख्यो ॥ शीतल साधु तपोमय लेख्यो ॥ तामहँ पैठि तपोव्रत लीनो ॥ सोतहँ यक्ष जलै घर कीनो ॥ ३१ ॥

दोहा–ताके धीरज देखिकै, ह्वै कृपालु भगवंत ॥ देख्यो गाधि अगाधिमति, दरशन दयो अनंत ॥ ३२ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ सुंदरी छंद–बाहर आवहु विप्र तजो जल॥ आनि तपोजलको गहिजै फल ॥ माँगहु जो जियमाँझ रह्यो बसि ॥ आनि लहो भगवंत कह्यो हँसि ॥ ३३ ॥

गाधिरुवाच ॥ रूपमाला छंद–विश्वके हिय पद्म के अलि सर्वदा सर्वज्ञ॥सर्वदा सबके हितू तुमको न जानत अज्ञ ॥ दीन देखि दया करी प्रभु नित्य दीनदयाल ॥ देहु जू वर एक मोकहँ विश्वके प्रतिपाल ॥ ३४ ॥

दोहा–अद्भुत माया रावरी, महामोह तम मित्र ॥ देख्यो चाहत हौं कछू, ताको जगतचरित्र ॥ ३५ ॥

सरस्वती छंद–एवमेव हरि हँसि कह्यो, पीछे भए अदृष्ट॥ तादिनते ताके भई, हरि माया अति इष्ट ॥ ३६ ॥

सुंदरी–एक द्योस जल मध्य रह्यो जव ॥ कै सिगरी विधि ध्यानकरयो तव॥आपुहिं आपनही घरहीघर ॥डीठि गिरयोगतप्राण परयोधर ॥३७॥ रोवत बंधु अशेष बढ्यौ दुख ॥ चुंबति गोद लिए जननी मुख॥लैगये लोग सवै सरितातट॥वारि दयो लगि रोवनकी रट ॥३८॥ जाइ चंडाल को पुत्रभयो मुनि॥व्याहकरयो पितु मातु बड़ो गुनि॥क्रीड़तु है वन वीथिनि मै किल ॥ ज्यों संग काक विलोकिय कोकिल ॥ ३९ ॥ लैतरुणी तरुणे अनुरागनि ॥खेलत डोलत बाग तड़ागनि॥ फूलनिमें दोउ फूले फिरैं तन ॥ ज्यों अलिनी अलिसाथ रमै वन ॥ ४० ॥

दोहा–एकदिना त्रिय पुत्र ले, गई पिताके गेह ॥ तब ताकेशव वंश को, काल वश्य भइ देह ॥ ४१ ॥

रूपमालाछंद–छाँड़िगो जबहूं न मंडल तात मात वियोग ॥ कीर मण्डल त्यों चल्यो मुनि पुण्य काल सँयोग॥

कालके वश राज भो तिहि देशको तिहिकाल ॥ लेगए गहि ताहि भूप भयो सुबुद्धि विशाल ॥ ४२ ॥ छत्र चामर शीश दे भये मंत्रि मित्र संयुक्त ॥ पाइ घोड़े मत्त दन्ती दुःखते भये मुक्त ॥ संगले बहुसुंदरी वन वाग जाइ तड़ाग ॥ नृत्य गीत कवित्व नाटक रंग राग सभाग ॥ ४३ ॥

सवैया–अक्षकुमार सो यक्षसुतानिमें ऐननिमें कर शाइलसोहै ॥ राशिभिवेशिनि सोसुमलाल मुनैअनि में कल कोकिलसोहै ॥ केशवराइ तजे अलिनी मलिनी अलिसो मलिनीनिमें सोहै ॥ काम कुमारसो कीर महीपति राजकुमारिनिके सँगसोहै ॥ ४४ ॥

दोहा–संग चले ता नृपति भव, कीर देशको जाइ ॥ आठ वरस लगि राजकिय, शत्रु अनेक नशाइ ॥ ४५ ॥ एक दिवस ता श्वपचकी, तरुणी पुत्र समेत ॥ जाति हुती घर आपने, उतरी वाग निकेत ॥ ४६ ॥

सुंदरी–भूप गयो तरुणी सँग ले सब ॥ भेंटभई तरुणी युत सो तब ॥ पुत्र त्रिया पहिचानि लगे उर ॥ रोइ उठी तरुणी तब आतुर ॥ ४७ ॥

दोहा–रानिन मंत्रिन मित्रजन, जान्यो जाति चंडारु ॥ सुंदरि सुतले संग घर, आयो नृप मतिचारु ॥ ४८ ॥ रानिन अपनी शुद्धलगि, कीनो अग्निप्रवेश ॥ पीछे मंत्री मित्र जन, दुखित भयो सब देश ॥ ४९ ॥ ताके पीछे श्वपचहूँ, कीन्हीं मनमें लाज ॥ जरयो अग्निमें आपुहीं, छोड़ि सबै सुखसाज ५० ॥

तारकछंद–यहि बीध प्रबुद्धि सुगाधि भयोजू ॥ भ्रम भार विचार न चित्त छयोजू ॥ अब जीवत हों किधों ईशमरयोहों ॥ गहि लेइको मोहिं प्रवाह परयोहों ॥ ९१ ॥

दोहा– जलते निकस्यो आश्रमहिं, गाधि गयो अकुलाइ ॥ संभ्रम चित्त न छाँड़ई, बहुत रह्यो समुझाइ ॥ ९२ ॥ अतिथि एकदिन गाधिके, आयो बुद्धि अगाधि ॥ विधिसों आसन अर्घ्य दै, दूरिकरी मगआधि ॥ ९३ ॥

सुंदरीछंद–मूल नए फलफूल धरे सब ॥ भोजनकै द्विज भृत्त भए जब ॥ बूझतगाधि तिन्हैं बुधि धारन ॥ दुर्बल विप्र कहो किहि कारन ॥ ९४ ॥

विप्रउवाच ॥ रूपमालाछंद–भूमि लोकनि में भलो इक कीर देश सुदेश ॥ भोग योग समृद्धि लोगनि दुःखको नहिं लेश ॥ मास एक बसे तहँ हम पूज्यमान सुबुद्धि ॥ गूढ़ मूढ़ चंडार भो नृप वर्ष अष्ट कुबुद्धि ॥ ९५ ॥ जाति जानि परी खिस्याइ तज्यो सबै तिहिं राजु ॥ अग्निमध्यप्रविष्टभो सुख मंत्रि मित्र समाजु ॥ सुंदरी सिगरी तजी द्विज एक बुद्धिअगाधु ॥ देखिकै तिनको भए सब दुःख दुःखितसाधु ॥ ९६ ॥ संसर्ग दोष निवारिवे कहँ क्षिप्र जाइ प्रयाग ॥ स्नान दान अनेकधा तप साधियो बड़भाग ॥ भक्षु ह्यां हम भक्षियो मन इच्छि कै सुख पाइ ॥ दुःख दुर्बल ह्वैगए यह बात वर्णि न जाइ ॥ ९७ ॥

तारक–विप्रमहामुनिकी सुनि वानी ॥ बात सबै तिन

सत्य कै मानी ॥ अद्भुत भाँति भई दुचिताई ॥ काहु पै क्यों हूं कही नहिं जाई ॥ ५८ ॥ अपनी गति देखन को उठि धायो ॥ तबहूँ नकै मंडल विप्र बुलायो ॥ जाइ चंडारके मंदिर देख्यो ॥ वृतंत सुन्यो सब सांचु कै लेख्यो ॥ ५९ ॥ हूँन ते कीरक देश गयोजू ॥ बात सुने सब तुल्य भयोजू ॥ देखि चल्यो फिरि विप्र सशंक्यो ॥ बीच चँडार के पुत्र विलोक्यो ॥ ६० ॥ देखत दौरि सुकंठ लग्यो जू ॥ विप्र बन्याइ छुड़ाइ भयो जू ॥ रोवत पीछे पुकारत आवै ॥ तात तजो जनि टेरि सुनावै ॥ ६१ ॥ खेलत हो तहँ राज अहेरो ॥ सो सुनि आरत शब्द घनेरो॥ब्राह्मण भागत जात विलोक्यो॥ दौरि कै राजकै लोगनि रोक्यो ॥ ६२ ॥ एकहि ठौर करे जन दोऊ ॥ पूछन बात लगे सबकोऊ ॥

राजोवाच ॥ ब्राह्मण तूकहि काहिते भाग्यो ॥ पीछे तुबालक काहे ते लाग्यो ॥ ६३ ॥

बालक—दीनदयालु पिता यह मेरो ॥ मो कहँ देहु कृपाकरि हेरो ॥

ब्राह्मण ॥ हौंद्विज मालव देश रहोंजू ॥ काननमें व्रत जाल वहों जू ॥ ६४ ॥ को यह राज नहों पहिचानो ॥ काहेते बापु कहै सो न जानो ॥ जाति चंडार सुविप्रन होई ॥ हूँनेक जानतहै सब कोई ॥ ६५ ॥ बांधि दुहूँन तहाँ पहुँचायो ॥ कैदुहुँ देशके बोलि पठायो ॥ ६६ ॥

दोहा—भामिनि ब्राह्मण के कहे, जाति चंडार चंडार॥राजा

वेगि बोलाइयो, दुहुँजनको परिवार ॥ ६७ ॥ राजा दोऊ राखियो, न्यारे न्यारे ठौर ॥ भाँति भाँति करि बूझियो, ऐकै कहैं न और ॥ ६८ ॥

दोधकछंद—बंधु दुहूँ जनके जब आए ॥ बोलि लिए तब दोउ दिखाए ॥ विप्र वशिष्ठते विप्र बखाने ॥ वेष चंडार चंडारहि माने ॥ ६९ ॥

दोहा—मालववासी मुनि कहे, कीर देश चंडार ॥ राजा थाके न्याउ करि, होइ नहीं निरधार ॥ ७० ॥ द्विजको गाधि न थापहीं, थापहिं जाति चँडार ॥ झूठो द्विज साँचो श्वपच राजा कर्‌यो विचार ॥ ७१ ॥ डारो याहि कराह में, तप्ततेल जब होइ ॥ जौं न जरै तौ विप्रहै, जरै चँडार सुहोइ ॥ ७२ ॥

कीरदेश्युवाच ॥ जरिहौं नाहिं कराहमैं, कीजै राज विचार ॥ याको कर्म दुरन्तहै, अति चेटकी चंडार ॥ ७३ ॥

रूपमालाछंद—कीर देश नृपाल भो इहिं भोग कीन अपार ॥ आइ बालक बागमें पहिचानियो तिहिंवार ॥ राज लोग जर्‌यो सबै इहऊ जर्‌यो मतिचार ॥ आनिधों द्विज चेटकी यह शुद्ध बुद्ध चंडार ॥ ७४ ॥

गाधिरुवाच—राज राजन हों जर्‌यों नहिं मर्‌योहों तिहिकाल ॥ हों चंडार न चेटकी सुनि भूप बुद्धि विशाल ॥ अपलोक भाजन लोक में अबहों भयौं जिहिं पाप ॥ चित्तमें यहऊ न जानत देउँ कौनहि शाप ॥ ७५ ॥

दोहा–पुरखा गत को विप्रहों, जानत नहीं विकार ॥
हूँन कीर के कहतहैं, नृप चेटकी चंडार ॥ ७६ ॥

रूपमालाछंद ॥ हाथ पाइँनि एक काटत नाक कान-
नि एक ॥ आंखि काढ़त एक डारत प्राण लेत अनेक ॥
वृद्ध बालक ज्वान जे जन जानियै नर नारि ॥ मारु मारु रटैं
पढ़ैं सब भाँति भाँतिनि गारि ॥ ७७ ॥

दोधकछंद–मूड़िशिखा उपवीत उतारौ ॥ गादह जाइ
चढ़ाइ सँवारौ ॥ पाइनि नील करौ मुखकारौ ॥ पर्वत ऊपर
ते धर डारौ ॥ ७८ ॥ मुंडनईश शिखा जब जानी ॥ आइ
अकाश भई नभवानी ॥ भूतल भूप न भूलहु कोई ॥ब्राह्मण
गाधि चंडार न होई ॥ ७९ ॥ वाणी अकाश सुने भ्रम भा-
ग्यो ॥ राजहिं को ऋषि ब्राह्मण लाग्यो॥आशिष दै वन गाधि
गएजू ॥ सबै भ्रम चित्तके दूरि भये जू ॥ ८० ॥

दोहा–गाधि करचो तप जाइ कै, अवनि अनंत अगाधु॥
प्रगट भए भगवंत तहँ, सुन्दर श्री सुख साधु ॥ ८१ ॥

गाधिरुवाच–कौन पुण्य प्रिय दरश दिय, श्वपच कियो
किहि पाप ॥ मोसों वेगि कहो मिटै, जाते सब परिताप॥८२

श्रीभगवानुवाच–गाधि अगाधि पुनीत तुम, चित्त करो
भ्रमनाश॥माया दरशन तुम कह्यो, ताके सबै विलास॥८३॥
पुत्र कलत्रनि आदि दै, झूठो सब संसार॥जाको देखै स्वप्न
सो,सांचो ब्रह्मविचार ॥ ८४ ॥ जन्म मरण तेरो मृषा, श्वपच

कीर नृप वेष ॥ झूठो सिगरो नाउ है, माया कर्म अलेख ॥ ॥ ८५ ॥ ताते तुम भ्रम छाँड़िकै, होहु ब्रह्म सों लीन ॥ यह कहि अन्तर्ध्यान तब, भए भगवंत प्रवीन ॥ ८६ ॥ संभ्रम छाँड़ि अशेष तब, साधी शुद्ध समाधि ॥ जीवनमुक्त भयो फिरै, जग में ब्राह्मण गाधि ॥ ८७ ॥ जैसो गाधि चरित्र सब यह मन मया विलास ॥ ताते माया को तजो, भजिये नित्य प्रकास ॥ ८८ ॥

इति श्रीमिश्रकेशवदास विरचितायां चिदानंदम ग्नायां विज्ञानगीतायां गाधिमाया विलोकनं नाम त्रयोदशःप्रभावः ॥ १३ ॥

---

उपजे गो पांचौ दहे, मनके अंग विराग ॥ व्यास पुत्र शुकदेव को, सुनि चरित्र जग जाग ॥ १ ॥ माया को समुझो सबै, देवी मृषा विलास ॥ एको नहिं चितलाइये, मन क्रम वचन प्रकास ॥ २ ॥

देव्युवाच ॥ दण्डक—सबको समान असमान मानियै प्रमान अति न प्रमान जग जा कहँ करत है ॥ स्वारथहूँ देइ परमारथहूँ देइ देइ स्वारथहूँ औगुणनि गुणनि गहतहै ॥ सांचो झूठे ईठ कहूं डीठेतहूं डीठतु न अजरु जरनि जरचो अमर मरतहै ॥ हरि सों लगाउ होइ मानससो केशौराइ मानससो लाये मन मानस जरतहै ॥ ३ ॥

केशव ॥ दोहा ॥ लागि गयो यह वचन मन, भूले कुल अनुराग ॥ कह्यो गिराको गूढमत, उपजि परचो वैराग ॥ ४ ॥

वैराग लक्षण ॥ कुण्डलिया—देही अविनाशी सदा, देह विनाश विचार ॥ केशवदास प्रकाश वश, घटत बढ़त नहिं वार ॥ घटत बढ़त नहिं वार वार मति बूझि देखि सब ॥ वेद पुराण अनंत साधु भगवन्त सिद्धि अब ॥ वेद पुराण अनन्त कहत जो ब्रह्म सनेही ॥ यों छाड़त नहिं सन्त देह ज्यों छाड़त देही ॥ ५ ॥

दण्डक—अनहीं ठिक को ठगु जानै न कुठौर ठौर ताही पै ठगावै ठेलि जाहि को ठगतुहै ॥ याको तौ डरानि डरु डगण डगत पलु डरके डगनि डारि डोंड़ी ज्यों डगतुहै ॥ ऐसे वसवास ते उदास होहिं केशौदास कसन भगतु कहि काहेको खगतुहै ॥ झूठौ हैरे झूठो जग राम की दोहाई काहू सांचे को बनायो ताते सांचो सो लगतुहै ॥ ६ ॥

सवैया— भूरहुँ भूरि नदीनि के पूरनि नावनि में बहुतै वनि वैसे ॥ केशवराइ अकाश के मेह बड़े ववूराणि में तृण जैसे ॥ हाटनि बाटनि जात वरातनि लोग सबै बिछुरे मिलि ऐसे ॥ लोभकहा अरु मोह कहा जग योग वियोग कुटुंबके तैसे ॥ ७ ॥

सुंदरीछंद--काहूँ करचो शव ते चल यौवन ॥ छाड़न चाहतु है यह मोतन ॥ जानि सबै गुण शील सुभाइनि ॥ सज्जन को अति दुर्जन गाइनि ॥ ८ ॥

दोहा--पल शोणित पंचालिका,मल संकलित्त विशेष॥ योवनमें तासों रमत, भ्रमर लतानि विशेष॥ ९॥ देवी कहि वैराग यो, सांची है यह बात॥ तदपि तुम्हें आश्रम विना, रहनो नाहीं तात॥१०॥घरनी विन घर जो रहै, छाँड़ै धर्म अधर्म॥ वनिता तजि जो जाइ बन,बन के निःफलकर्म॥११॥

रूपमाला–है निवृत्ति पतिव्रता नियमादि पुत्र समेत॥ योबराज विवेक को मिलि देहु देह निकेत॥ वेद सिद्धि सगर्भ हेतु पतिव्रता शुभ वाद॥ जाइ है सुप्रबोध पुत्रहि विष्णु भक्ति प्रसाद॥ १२॥

मन॥ दोहा–उर प्रवृत्ति की वासना, सुनियै देवि सुभाउ॥ अब न लेत सखि स्वप्नहूँ, मुख निवृत्ति को नाउँ॥ १३॥ अहंकार की होति जब, वारिद अवलि प्रवृत्ति॥ जामें तृष्णा मंजरी, क्यों सूखति भवचित्ति॥ १४॥

सुंदरीछंद–चंचलता सब को उठि धावति॥ आदरहीन नहीं फल पावति॥ जो कुल जाति अशुद्ध बखानहुँ॥ लाज विहीन तौ तृष्णहिं जानहुँ॥ १५॥

समानिकाछंद॥ लीन चित्तहू करै॥ फूल सों नहीं डरै॥ शूरअंश ज्यों सजै॥ प्रात फेरि पंकजै॥ १६॥ देविहों कहा करौं॥ चित्तमें महा डरौं॥ जग्गमै न सुःख है॥ यत्र तत्र दुःखहै॥ १७॥

सवैया–गर्भ मिलैइरहै मलमें जग आवत कोटिक कष्ट सहैजू॥ को कहै पीर न बोलि परै बहु रोग निकेतन ता-

प रहेजू ॥ खेलत मात पिता न डरै गुरुगेहनिमें गुरु दण्ड दहेजू ॥ दीरघ लोचनि देवि सुनो अब बाल दशा दिन दुःखनहेजू ॥ १८ ॥

दोधकछंद-जौं मन में मति की मलिनाई ॥ होति हिये चित को चपलाई ॥ काहू गणै न सुवर्ग भरी यों ॥ आवति है वरषा सरिता ज्यों ॥ १९ ॥

सवैया-काम प्रताप के ताप तपे तनु केशव क्रोध विरोध सनेजू ॥ जारेतु चारु चिताई विपत्तिमें संपति गर्वन काहू गनेजू ॥ लोभते देश विदेश भ्रम्यो भव संभ्रम विभ्रम कौन भने जू ॥ मित्र अमित्र ते पुत्र कलत्र ते योवनमें दिन दुःख घनेजू ॥ २० ॥

दोहा-जहाँ भामिनी भोग तहँ, भामिनि बिनु का भोग॥ भामिनिछूटेजग छुटे, जगछूटे सुखजोग ॥ २१ ॥ जितने थिर चिरजीव जग, अध ऊरधके लोक ॥ अजर अमर अज अमित जन, कवलित कालसशोक ॥ २२ ॥

सवैया-शेषमई कवरी रसना नल कुण्डल सूरज सोमासँचेजू ॥ मेषल ब्रह्मकपालनिकी पद नूपुर रुद्र कमाल रँचेजू ॥ पंकजविष्णु कपालनि की वनमालन केशव काहू बचेजू ॥ हस्तक भेद दशोंदिशि दीसत ऊरधहूं अध मीचु नँचे जू ॥ २३ ॥

दोहा-देवीसो उपदेश दे, जनम मरण मिटि जाइ॥ कालहि को जो काल कर, ताहि रहों मिलिजाइ ॥ २४ ॥ व्यास

पुत्र शुकदेव सम, सुखदा मति सुगँभीर ॥ व्यासपुत्रकी यह दशा, कहि माता मतिधीर ॥ २५ ॥

सरस्वती ॥ दोधक–एक समै शुक चित्त विचारे ॥ बाढ़ो विराग बढ़ो ज्यों तिहारे ॥ आपुनहीं अपनी मतिजानो ॥स-त्यस्वरूप हियेमहिं आनो ॥ २६ ॥

दोहा–तब ताके विश्वासको, बूझे शुक पितुव्यास॥ उप-जतहै जग कौनते, कहा विलात प्रकास ॥ २७ ॥

दोधकछंद–व्यास सबै शुक आशय पायो ॥ भूपति सा-धु विदेह बतायो ॥ वै तुमको सुत उत्तरुदैहैं ॥ पूछहु जाइ महासुख पैहैं ॥ २८ ॥

तोटकछंद–तबही सुविदेह के गेह गए ॥ नृप द्वार तबै थिर होत भए ॥ तब द्वारपहीं नृप सों गुदरे ॥ शुकदेव अबै दरबार खरे ॥ २९ ॥

सुंदरीछंद–उत्तर राज कछू न दयो जब ॥ ठाढेहि बासर सात भए तब ॥ रावर में नृप बोलि लिये गुनि ॥ ठाढ़ किये परदा तटलै मुनि ॥ ३० ॥ सात वितीति भए जब बासर ॥ जाइ किये तब आँगन में थर ॥ बासरसात तहीं सुबिहाने ॥ साधु विदेह महीपति जाने ॥ ३१ ॥ सुंदरि आइ सुगंधनि लीने ॥ योवन जोर स्वरूप नवीने॥मज्जन कै तिन्ह न्हान कराए ॥ अंग अनेक सुगंध चढ़ाए ॥ ३२ ॥ भोज-नतौ बहु भाँति जिवाए ॥ दर्प्पन पान खवाय दिखाए ॥ वस्त्र नवीन सबै पहिराए ॥ सुंदर साधु स्वरूप सुहाए ॥ ३३ ॥

रूपमालाछंद-नाचि गाइ बजाइ बीननि हाव भाव ब-ताव ॥ मंदहास बिलाससों परिरंभनादि प्रभाव ॥ कै थकीं सब भाँति भाँति रहस्य लीनि बनाइ ॥ शुद्धहोतु न चित्त जों बहु बल्लरी तरुपाइ ॥ ३४ ॥

दोहा-बहु तैं निन्दाकै थकीं, चित्त एकही रूप ॥ सुख दुख चित्त न पाइए, पाँइपरे तबभूप ॥ ३५ ॥

विदेह ॥ तारकछंद-कहिये जु कछू मुनि जालगिआए ॥ अपने हम पूरब पुण्यनि पाए ॥ किहिते उपजै जगराज बखानो ॥ अरु क्यों बिनशै किहि माँझ समानो ॥ ३६ ॥

दोहा-सोवह कैसे पाइयै, बूझन आयो तोहिं ॥ भूल्यो जहँ तहँ भ्रमतहों, पार लगावहु मोहिं ॥ ३७ ॥

विदेह ॥ दोहा-पायो हुतो जुपाइबे, सुनियै श्रीशुकदेव ॥ यह सुनि मुनि मारग लगे, सुखपायो नरदेव ॥ ३८ ॥ जाइ मेरुके शिखरपर, पूरण साधि समाधि ॥ धरी धीर सब धर्म तजि, परब्रह्म आराधि ॥ ३९ ॥ बरष अनेक सहस्र तहँ एक भाँति भव भूप ॥ क्रम क्रम दीपक ज्योति ज्यों, मिलै आपने रूप ॥ ४० ॥

देव्युवाच-तैसैतुमहूँ समुझिमन, दुख सुख मानि समान॥ तजि संकल्प विकल्प सब, पौरुष बात प्रमान ॥ ४१ ॥

मन-जित लै जैहै वासना, तित तित ह्वैहैलीन ॥ पौरुष बपुरा क्योंकरै, जीव बापुरा दीन ॥ ४२ ॥

देव्यु–दुविध वासना होति है, शुभ अरु अशुभ प्रमान ॥ अशुभै शुभकरि मानियै, निराधार मन जान ॥ ४३ ॥

एक काल ब्रह्मा सभा, बैठेहें मतिधीर ॥ मैं बूझी जग जीव की, क्यों हरि हो प्रभु पीर ॥४४ ॥ मुक्ति पुरी दरबार के चारि चतुर प्रतिहार ॥ साधुनके शुभ सङ्ग अरु, समसंतोष विचार ॥ ४५ ॥

वसुकला–तिनमें जग एकहु जो अपनावै ॥ सुखही प्रभु द्वार प्रवेशहि पावै ॥ ४६ ॥

दोहा–जो इनको संग्रह करै मन वच छांड़नि छाँड़ि॥मिलै आपने रूपको, सकल वासना खाँड़ि ॥ ४७ ॥ मेरे घर धन पुत्र त्रिय, यह बंधन मनमान ॥ दृश्यादृश्य सुब्रह्महै, यहै मुक्ति जियजान ॥ ४८ ॥ जाते उपज्यो ताहि मिलि, अनल ज्वाल परिमान ॥ यह कहि भई सरस्वती, केवल अंतर्ध्यान ॥४९॥ देवीके उपदेश यों, शुद्धभयो मननाथ ॥ शुद्धभए कैसीभई, नृपविवेककी गाथ ॥ ५० ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां चिदानंदमग्नायां मनशान्ति वर्णनोनामचतुर्दशःप्रभावः ॥ १४ ॥

---

पंचदशें मनशुद्धता, जीव विवेक विचार॥ परमदेव पूजा सबै, कहियो चार विचार ॥१॥ शुद्ध भयो मन जानि जब, देवीके उपदेश ॥ महापुरुषकी दृष्टितब, परयोसुकामसुवेश ॥ २ ॥ पाँइनि लागे परन जब, प्रभुके आपु नरेश ॥ प्रभु वरज्यो हो शिष्य तुम, गुरु कीजे उपदेश ॥ ३ ॥

विवेक॥ वार वार जिहि होत है, जन्म मरन सो देह॥ मनसा वाचा कर्मणा, तासों करै सनेह॥ ४॥

जीव॥ याही देह सुनो सुमति, ज्यों पावे विन सुःख॥ शोक हिये उपदेश ज्यों मृत्यु न परसैं दुःख॥ ५॥

विवेक॥ दोहा—हृदय वृक्ष सों वासना, लता न लपटति जाहि॥ राग दोष फल ना फलै, मृत्यु न मारै ताहि॥६॥ उरसि विवेक समुद्र को, डसै न वाड़व कोपु॥ ताको तन को मृत्युपै, होइ न कबहूं लोपु॥७॥ परमानंद पियूष के, कणको पावे स्वाद॥ ताके तनुकोमृत्यु पै, दयो न जाइ बिषाद॥८॥ क्रम क्रम साधै देहइहि, केशवप्राणायाम॥ कुंभक पूरक रेचकनि, तौ पूजै मन काम॥ ९॥

जीव—कहो सृष्टि यह कौन है, होत कौन में लीन॥ पुण्य पाप को फल कहो, देत सुकौन प्रवीन॥ १०॥

विवेक॥ रूपमालाछंद—तम तेज सत्त्व अनंतु अव चाहंतु है जु अमेय॥ सर्वशक्ति समेत अद्भुत है प्रमान अभेय॥ नित्यवस्तु विचार पूरण सर्व भाव अदृष्ट॥ पुंश नारि न जानियै सुनि सर्व भाव अदृष्ट॥ ११॥

दोहा--ताके अद्भुत भाव ते, भए सरूप अपार॥ विष्णु आँनि परमानु लै, उपजत लगी न वार॥१२॥ रक्षक कीने विष्णु विधि, करता हर हरतार॥ दण्डधरन सबको रचे, धर्मराज मति चारु॥ १३॥ अवलोकत रवि शशि फिरत, निशि दिन धर्माधर्म॥ इहि विधि केशव समुझिवे, सबलोकनिके कर्म॥ १४॥

जीव ॥ सबहीं को जी समान है, ताके जीव स्वरूप ॥ घटि बढ़ि तेज विलोकियतु, सबके केशव भूप ॥ १५ ॥

विवेक ॥ जिहि जैसी जा देवकी, पूजाकरी प्रमान ॥ ताके तैसे तेज बल विक्रम भए सुजान ॥ १६ ॥

जीव ॥ धरि धरि क्यों अवतार प्रभु, मारत अपने रूप ॥ सिखवत शासन भंग ते, ज्यों पितु सुत को भूप ॥ १७ ॥

विवेक ॥ उपजत ज्यों चित रूपते, जीवन तिहि विधि जात ॥ रविते उपजत अंशु ज्यों, रविही माँझ समात ॥ १८ ॥ उपजत माया संगते, जीव होत बहुरूप ॥ उत्तम मध्यम अधम सब, सुनि लीजै भवभूप ॥ १९ ॥

सुंदरी–उत्तमते प्रभुशासन संमत ॥ है जगसों न कहूं कहूं रत ॥ कौनहुँ एक प्रसाद ते भूपति ॥ होतुहै शासन भंग महामति ॥ २० ॥ आपुहिं आपुनि क्यों करि दण्डहि ॥ कारज साधतहैं तिहखंडहि ॥ औरहु आपने पंथ लगावै ॥ ते सब मध्यम जीव कहावै ॥ २१ ॥ होत जे जीव कछू मन केवश ॥ भूलतहैं अपने प्रभुके यश ॥ पीडियै आधिनि व्याधिनि के जब ॥ बूझत वेद पुराणन को तब ॥ २२ ॥ दान नदै व्रत संयम कै तप ॥ संगत जेंवत साधतहैं जप ॥ जन्म गए बहु ज्ञाननि पावत ॥ ते जग जीवनमुक्त कहावत ॥ २३ ॥ जिनको न कछू अपने प्रभुकी सुधि ॥ बहु भाँति बढ़ावतहैं मनकी बुधि ॥ सुनिहूँ सुनि वेद पुराणनिके मत ॥ होततऊ बहु पापनिसों रत ॥ २४ ॥

दोहा—ते अतिअधम बखानियै, जीव अनेक प्रकार॥सदासु योनि कुयोनिमें,भ्रमत रहै संसार ॥२५॥ उत्तम मध्यम अधम अति, जीवते केशवदास ॥ अपने अपने औसरें, जैए प्रभुके पास ॥ २६ ॥ ज्यों रस रूप सुगंधमय, पुष्पसदा सुखराउ॥ पुष्प न जानत जानिये, ताको तनिक प्रभाउ ॥२७॥ त्यों सब जीव चिदंशमय, वर्णत जीवन मुक्त ॥ भूलि जात प्रभुता सबै, महामोह संयुक्त ॥२८॥ महामोह सँग जीव यों, मोहहि माँझ समात॥लोहलिप्त ज्यों कनककण,लोहाई ह्वै जात॥२९॥

वीरसिंह—जीव मोहमय लोभमय, कनकते कौन प्रकार ॥ मिलिहै कबहूँ आपने, रूपहि तजि जे जार ॥ ३० ॥

केशव—जों क्योंहूँ चित संत की, उपजै कृपा तरंग॥ तिनहीं को तौ जानियो, पारस बोध प्रसंग ॥३१॥ और भाँति क्योंहूँ नहीं, नरकनिते उद्धार ॥ राज चक्र चूड़ेश सुनि,जानो जगदु प्यार ॥ ३२ ॥

विवेक—रूपमालाछंद—एक काल गए तपस्यहि श्रीवशिष्ठ ऋषीश ॥ देव देव जहाँ बसे हिमवन्त आपुनईश ॥ जाइकै तपसा रची तहँ बीति गो बहु काल ॥ पार्व्वतीपति आपु आए ह्वै कृपालु दयाल ॥ ३३ ॥

श्रीशिव ॥ दोहा—साधु वशिष्ठ सुनिष्ठ मति, ब्रह्मा सुनु ऋषिराज॥माँगि महामति चेतिचित, तपकीनो जिहि काज ३४

वशिष्ठ ॥ भुजंगप्रयात—सुनो देव देवेश देवादि भर्त्ता ॥

प्रभापूर्ण संसारके दुःख हर्त्ता॥कहो देव पूजा करों ईशकैसे॥ सिखावो सुमोसों महादेव तैसे॥ ३५॥

श्रीशिव॥दोहा–केशव छूटे जगत ते, कीजै जाकी सेव॥ सोई देव बताइयै, महादेव जगदेव॥ ३६॥

दंडक–ऋषि ऋषिराजवृद्ध केशव प्रसिद्ध सिद्ध लोकलोक पाल सब कोऊ न प्रबल है॥ वरुण कुवेर यम अनिल अनल जल रवि शशि सुरपति जाको दीने बलहै ॥ कौन सों कहत देव कौनकी सिखावो सेव जार को वासना मूल मलिन धवल है॥शेख धरु नागधरु नागमुख ब्रह्म विष्णु इनको कलेवरु तौ कालको कवरु है॥ ३७॥

वशिष्ठ॥ भुजंगप्रयात–सुनो ईश तावत् कहों देवको है॥ सदासर्व संपूजिबे योग जोहै॥ कृपाकै कहो हों कहा देव जानो॥ महादेव जाको महादेव मानो॥ ३८॥

श्रीशिव॥ नगस्वरूपिणी–अजन्मु है अमर्त्तुहै ॥ अशेषजंतु सर्न है॥ अनादि अंतहीनु है॥ जुनित्यही नवीनुहै॥ ॥ ३९ ॥ अरूप है अमेयहै॥ अमायहै अमेयहै॥निरीह निर्विकार है॥ सुमध्य अध्यहारहै॥ ४०॥ अकृत्त मै अखण्डित्वै॥ अशेष जीव मण्डित्वै॥ समस्त शक्ति युक्तहै॥ सुदेव देव मुक्त है॥ ४१॥

दोहा–ताकी पूजा करहु ऋषि, कृत्रिम देवगण छांड़ि॥ मनसा वाचा कर्मना, निपट कपट को खाँड़ि॥ ४२॥

वीरसिंहोवाच ॥ दोहा—देव अरूप अमेय हैं, कहै नि-रीह प्रकाश ॥ सर्व जीव मण्डित कहौ, कैसे केशवदास॥४३॥ ज्यों अकाश घट घटनिमें, पूरण लीन न होइ ॥ यों पूरण संदेहमें, रहै कहै मुनिलोइ ॥ ४४ ॥

वशिष्ठ—कहि प्रभु पूरण देवको, कैसे पूजन होइ ॥ हमैं सुनावो सुगम मग, ज्यों पूजै सब कोइ ॥ ४५ ॥

शिव ॥ दोधक—आनहु ज्योति हिये अविनाशी ॥ अच्छ निरंजन दीपप्रकाशी ॥ निश्चलवेष समाधि विहारै ॥ वासना अंग पतंगनि जारै ॥ ४६ ॥ शुद्धस्वभाव के नीर नहावै ॥ पूरण प्रेम समाधिहि लावै ॥ फल मूल चिदानँद फूलनि पूजै ॥ और न केशव पूजन दूजै ॥ ४७ ॥

दोहा—इहि पूजन जो पूजई, केशव अर्घ निमेष ॥ मनहु सदक्षिण बहु करै, राजसूय सविशेष ॥ ४८ ॥ इहई साधन शुद्धतप, इहई योग वियोग ॥ यहै अनन्यनि को मरमु, जानतहैं मुनि लोग ॥ ४९॥ इहि विधि पूजा हम करत, अनुदिन सुनि ऋषिराज ॥ कर्त्तुम कर्त्तुम अन्यव्या-करण भए सुर-राज ॥ ५० ॥ अखिल वासना जाति जरि, अखिल जन्मकी क्षिप्र ॥ पूजाशालग्रामकी, पूजा क्रम क्रम विप्र ॥ ५१ ॥ तीनिवर्ण पूजें शिला, प्रतिमा शूद्र प्रमान ॥ महादेव यह कहि भये, ऋषिको अंतरध्यान ॥ ५२ ॥

हरिगीतिका—तेहि दिवसते इहि भाँति पूजन पूजिकै दिन-राति ॥ जोई चहै सोई लहै कहि केशव सुबहुभाँति ॥ ६३ ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां विवेकजीव सम्बाद वर्णनोनामपंचदशःप्रभावः ॥ १५ ॥

---

दोहा—नृपति शिखीध्वज षोडशें, जीतेगो संसार ॥ निज तरुणी उपदेश ते, ताको गूढ़ विचार ॥ १ ॥ रानीके उपदेशते, ज्यों जीत्यौ नरनाथ ॥ त्यों अब बुद्धि विलासिनी, बल जीतहु गणनाथ ॥ २ ॥

जीव—राजा रानीकी कथा, कहो कृपा करि आजु ॥ जाते मेरे चित्तमें,उपजै बोध समाजु ॥ ३ ॥

विवेक—शात अतीते मनु सुमति,द्वापर पूर्व प्रवेश ॥ नृ-पति शिखीध्वज तब भये, केशव मालव देश ॥ ४ ॥ सुराष्ट्र देशाधिपत्तिकी, चूड़ाला इहि नाम ॥ कन्या सकल कलावती रूप शील द्युतिधाम ॥ ५ ॥

रूपमाला छंद—दामिनी चल चारु खंजन दाड़िमी फटि-जात ॥ चंद्रमा घटिजातुहै जिय फूल फुलि कुँभिलात ॥ को-किलाको कालिमा तनुमारबान अदृष्ट ॥ ह्वैगए दुख जासुकै यह जानियै जग इष्ट ॥ ६ ॥

दोहा—छातिनिछेद मुरारसम, डारतहै करि छार ॥ गए दिगंत निहंश, अरि ताके दुख तेहि बार॥७॥मुनिकन्यानि सँग

सीखियो,तिहिं सब प्राणायाम।।ताते पाई सिद्धि सब,पूरण काम अकाम ॥८॥ नृपति शिखीध्वज की भई, रानी रूप समान॥ तिनिसों मिलि तिनि भोगए, भूतल भोग विधान ॥ ९ ॥

चामर–एक काल एक आरसी विषे दुहूँ जने ॥ आपने मुखारविंद देखियौ प्रभासने ॥ कन्त को कछू प्रिया प्रभाव हीन देखियो॥नारि को महा प्रभा समेत देव लेखियो॥१०॥

राजा ॥ दोहा–रानी सुनि या बाल ते, तेरे तन इक रीति ॥ काहे ते तुम श्रीमती, रहो कहो करि प्रीति ॥११॥

रानी ॥ रूपमालाछंद–सृष्टिको जो प्रकाश नाश विलास जानत मित्त ॥ भोग योग अयोग के सुख दुःख मोहिं न चित्त ॥ नित्य वस्तु विचार है न जरा जुरा न कराल ॥ हों रहों तिनि ते सुनो पति श्रीमती सब काल ॥ १२ ॥

राजोवाच ॥ दोहा ॥ सुख है सुन्दरि धर्म फल, ताहि न सादर लेहु ॥ उदासीन के भाव में, मिलै माँझ दुखदेउ॥१३॥

रानी॥राजा कछू दुराइयै, जाके मन कछु और ॥ नारि-निके एकै शरन, पति सुनियै नृप मौर ॥ १४ ॥ कुबजे कल ही काहली, कुटिल कृतघ्न कुरूप ॥ सपने हूँ न तजै तरुणि कोढ़ीहू पति भूप ॥ १५ ॥

श्रीभागवते यथा श्लोक-दुःशीलोदुर्भगो वृद्धो जडो रुग्णोऽध-नोपि वा ॥ स्त्रीभिःपतिर्न हातव्यो लोके नरकभीरुभिः ॥१६॥

दोहा–पुनि तुमसे नृप नाथ शुभ, सुंदर भव गुण लीन॥ सब सुख दाता सर्वदा, एक विवेकविहीन ॥ १७ ॥

राजा—काहे ते तुम प्रीतमा, उदासीनमय जोग ॥ राजा ह्वै प्रभु करत हो, रंकनि केसो भोग ॥ १८ ॥ कालि जुकीने कर्म प्रभु, तेई कीजत आजु ॥ आजु राजु सोई करत,काल्हि करहु गे काजु ॥ १९ ॥

सवैया--ठाढ़ेहिं खैयतु बैठिहिं खैयतु खात परेहूँ महासुख पायो ॥ खातहिं खात सबै मरिजात सुखैबोई पीबो मेरे पुनि भायो ॥ आवत जातनिरे दिवि केशव कौनहिं कौन कहा नहिं खायो ॥ खैबो तऊ न उबीठतु है जग श्री जगदीश बुरे ढँग लायो ॥ २० ॥

दोहा--इहिविधि बीते काल बहु, लह्यो जुनहीं अलक्ष्य ॥ भक्षत हो प्रभु करभ, ज्यों फिरि फिरि भक्ष्याभक्ष्य ॥ २१ ॥ जोहीं जानो कर्म सब,सबै जगत के कंत ॥ आदिसरस मध्यम विरस, अति नीरसहै अंत ॥ २२ ॥ आदि अंत मध्यहुँ सरस, नित्य नएई भोग ॥ तिन्हहिं भोग जो भूप तुम, बूझि बूझि मुनि लोग ॥ २३ ॥ सुनि सुनि सुंदरि को वचन, भोगनि जानि अशर्म ॥ आरंभे नरनाथ तब, नित्य नएई कर्म ॥ २४ ॥

विवेक--तीरथ न्हाए विविध पुनि, ऊषर बल आरण्य ॥ अभय दान सो दान सब,दए नृपतिमणि धन्य॥२५॥ज्यों ए जम्बूद्वीपके, ऋषि ऋषीश सब विप्र ॥ जीते देश विदेश नृप, नृपनायक रति क्षिप्र ॥ २६ ॥ यज्ञ अशेष विशेष सो ताजि भजि सुर सुरनाथ ॥ निज मंदिर आए तबै, राजा

उत्तम गाथ ॥ २७ ॥ दीन दुखित कायर कुमति, सूम अनाथ अपार ॥ गुंग पंगु बहु मूढ़ जन, अंध लोग अविचार॥ ॥ २८ ॥ देश नगर अरु ग्राम के, कहा पुरुष कह बाम ॥ मनभायो पायो सबै, कीने सबै अकाम ॥ २९ ॥ मंत्री मित्र जु पुत्रजन, मुनिगण प्रथम बनाइ ॥ पीछे कीनो तिलक शिर, रानी सब सुखदाइ ॥ ३० ॥

राजा—मनसा वाचा कर्मना, रानी मन अवदात ॥ जोई मांगे सुन्दरी, सोई देहैं बात ॥ ३१ ॥

रानी—जीत्यो जम्बूद्वीप सब, शत्रु मित्र परिवार ॥ बुधि बल विक्रम साहसे, त्यों जीतो संसार ॥ ३२ ॥ दै वर राजा चित्त में, कीनो यहै विचार ॥ जो छाड़ों घर घरनि अब, तो जीतौं संसार ॥ ३३ ॥

सुन्दरी छन्द—सोइ रही जब सुंदरि जानी ॥ यामिनि में बहु जो मन मानी ॥ राज तज्यो सिगरी रजधानी ॥ जाइ महावन रैनि बिहानी ॥ ३४ ॥ मंदरके तट पर्णकुटी करि ॥ तामहिं दण्ड कमण्डलु को धरि ॥ माल हिये मृग चर्म धरचो तन ॥ दोइक तौ फल फूल के भोजन ॥ ३५ ॥

दोहा—स्नान करत पहिले पहर, कुसुम गहत युग याम ॥ तीजे पूजत देवफल, मूलनि चौथे याम ॥ ३६ ॥

दोधक—जागि उठी जबही निशि रानी ॥ पीबिनु सेज विलोकि डरानी ॥ प्रीतम की पनहीं जब देखी ॥ कोरिक युक्ति हिये महि लेखी ॥ ३७ ॥ मोकहँ छोड़ि गए नृप कान-

न ॥ ज्यों नलिनी तजि भौंर गजानन ॥ हों अब जाउँ जहाँ कहुँ भूपति ॥ है पत्नी कहँ पीव सदा गति ॥ ३८ ॥

दोहा–पत्नी पति बिनु दीन अति, पति पत्नी बिनु मन्द ॥ चन्दबिना ज्यों यामिनी, ज्यों यामिनि बिनुचंद ॥ ॥ ३९ ॥ पत्नी पतिबिनु तनु तजै, पितु पुत्रादिक काइ ॥ केशव ज्यों जलमीन त्यों, पतिबिनु पत्नी आइ ॥ ४० ॥ मनसा वाचा कर्मणा, पत्नी के पति देव ॥ अन्नदानतप सुरनि की, पतिबिनु निःफल सेव ॥ ४१ ॥ राज काज जिनिको लगैं, बोले मंत्री मित्र ॥ तिनके शिर सुख पाइकै, शोचे राज चरित्र ॥ ४२ ॥

चंचरीक–जोगके विलाश नारि जाइ कै अकाश सो ॥ देखियो प्रकाश ईश ऐनचर्म बाससो॥ मण्डियोदरीनिवासु आसुछाँडु सुंदरी॥ऐन नाभिलेप लाल ऐन की तुचाधरी ॥४३॥

दोहा–ईश कुमण्डल छाँड़िकै, लयो कमंडलु आनि ॥ जगदंडनि के दंड तजि, दारु दंड लै पानि ॥ ४४ ॥

विवेक–नरदेवी नरदेव पै, देव पुत्र के रूप ॥
गई प्रगट तिहि निकट तब, अवलोकी पटभूप ॥ ४५ ॥

हरिगीताछंद–अति गौर गूढ़ अनंग के अँग अंग रूप तरंग ॥ मुकुतानके उरहार लोचन श्वेत चारु सुरंग ॥ उपवीत उज्ज्वल श्वेत अम्बर बालवेष कुमार ॥ नरदेव आसन ते उठ अवलोकि देवकुमार ॥ ४६ ॥

दोहा–दीने आसन अर्घ नृप, कीने दीह प्रणाम ॥ बैठे दोऊ देव दुति, पूछि कुशल गुणग्राम ॥ ४७ ॥ प्रगटत परशुभ अपर शुभ, परशुराम से व्यक्त ॥ शोभित वेदव्यास से, सकल लोक व्यासक्त ॥ ४८ ॥

नाराच–शुकप्रकाश है हिये सुज्योतिरूप लीनहौ ॥ विचित्रबुद्धिअत्रिहो त्रिलोक शोक हीन हौ ॥ वशिष्ठ हौ कि निम्मि हौ कि आदिब्रह्म देवसो ॥ पराशरै पराश बुद्धि विज्ञ देव देवसो ॥ ४९ ॥

चंचरी–गर्गहो निशर्गभाव सर्व अप्रमान हो ॥ अंगिरा गिरा थिरा गिरीशके प्रमान हौ ॥ कश्यपू कि वश्यकै अदेव देव छंडियो ॥ जन्हु हो कि जन्हु भूवि शृज्य दुष्ट दण्डियो ॥ ५० ॥

गीतिका–यमदग्नि हो कि शमाग्नि उत्तम शुद्ध सन्तकमानियो ॥ सिंधु सोषि लयो सबै कि अगस्त्यए मन मानियो॥ मुनि मारकण्ड विहीन हो मुनि मारकण्ड बखानिये ॥ मतिश्रोत इंद्रिनि धोत गौतम केश मानकि मानिये ॥ ५१ ॥

दोहा–कैधों विश्वामित्र हो, संतत विश्वामित्र ॥ पूज्ये पूजक ते भए, जिनिके अमित चरित्र ॥ ५२ ॥ यद्यपि चतुरानन महा, चतुरानन करि हीन ॥ सोहतवेदव्यास से, नाहिं न मायहि लीन ॥ ५३ ॥ कैहो ऋषि ऋषिराज तुम, देव अदेव कि सिद्ध ॥ हमसों प्रकट सुनाइये, अपनो नाम प्रसिद्ध ॥ ५४ ॥

देवपुत्र ॥ तोमर–सुनिशुद्धमानस अंश ॥ नरदेवदेव प्रशंश ॥ सुरलोकते मतिधीर ॥ हम आइयो तवतीर ॥ ५५ ॥

दोहा–महादेवको पुत्र हौं, मानसीक सुनुराज ॥
कौन काज आए कहो, कानन में मुनि साज ॥ ५६ ॥

राजा ॥ रूपमालाछंद–जीति देश विदेश त्यों जग जीति बैशह काज ॥ हों शिष्यधुजनाममालवदेश को अधिराज ॥ जीति हो जग्‌ क्यों कहो गुरुके बिना उपदेश ॥ पक्रनाहिंन चक्षु भूपति ज्ञान को न प्रवेश ॥ ५७ ॥

दोहा–ज्ञान गुरू पै सीखियै, जब उपजै विज्ञानु ॥
तब अधिकारी होहुगे, भूपति जिय में जानु ॥ ५८ ॥

राजा ॥ तारकछंद–तुमहीं मुनि मित्र पितायुत मेरे ॥ सिखवो उपदेश सबै हित केरे ॥ जिहिते सब ज्ञान प्रयोग नि जानो ॥ अति श्रीपरमानँदको सुख मानो ॥ ५९ ॥

देवपुत्र ॥ दोहा–राजाएक कथा सुनो, सहसा कर्मविधान ॥ जाते सहसाकर्म सब, छाँड़ौ बुद्धि निधान ॥ ६० ॥

तारक–हुतो इक भूपके वारन नीको ॥ अतिसुंदरशूर मनोहर जीको ॥ तेहि ऊपर एक महावत सोहै ॥ जनु मेघ चढ़्यो मघवा मनु मोहै ॥ ६१ ॥ अधरात भए वनकी सुधिआई ॥ गजराज गिरयो जब ग्रीव कँपाई ॥ ६२ ॥

रूपमाला–छोड़ि जीवत ताहि खंभहि तोरि गौवन माँह ॥स्यो जंजीरनिसो इग्यो गिरिके गुहा गुरु माँह ॥ मुरछाहि जागे उठिगयो गजपाल राजदुवार ॥ संग लै चतुरंग सेनहिं आइगो तिहिवार ॥ ६३ ॥

दोधकछंद–देखितिन्हैं तरुके गणतोरे ॥ मारे मनुष्य

घने वन घोरे॥ जोर घटाइ गए नगरी लै॥ राखियो दीरघ खात दरीलै॥ ६४॥ आवै न जाइ तहाँ जन कौनो॥ लाजत लैरह्यो खातके कोनो॥ ६५॥

दोहा—सुख विलास सन्मान अति, तोई गए सुजान॥ भूषण भोजनहूँ मिटे, सबै राज सुखकाम॥ ६६॥

तारक—गजपाल सुतो गजको मनुजानै॥ खंभनहीं नृपमोह बखानै॥ शंकर होइ न वास न जानो॥ भूपति चित्त अदृष्ट न आनो॥६७॥ नाहिंने मोह समूल उखार्‌यो॥ नाहिंने शत्रु बड़ो मनु मार्‌यो॥ कानन माँझ सुवास न आए॥ कैसे अदृष्ट पै जात बचाये॥६८॥ केशव कैसहु कर्म के लीने॥ देशहिं जाहु जो योग विहीने॥ लोक करै उपहास तुम्हारे॥ रोके रहैं न बड़े अरु बारे॥ ६९॥

दोहा—ज्यों न होइ गज की कथा, सो कीजो नृपनाथ॥ ज्ञान विना वन घोर है, जौ लों लज्जा साथ॥ ७०॥ सुखही में दुख जीतिहो, घरही में वनमानि॥ क्रम क्रम होउ उदास नृप, तब सेवो वन आनि॥ ७१॥ सहसा कर्म न कीजई, सहसा ज्ञान विज्ञान॥ जब केवल हिंसा घटी, छाड़ि दये भव ध्यान॥ ७२॥ ताते राजा छाड़ि हठ, जैये अपने धाम॥ ज्ञान सीखि वन आइये, तब पूजे मन काम॥ ७३॥ एक कहों अज्ञान की, औरो कथा विचारि॥ तब कीजो विज्ञान को, संग्रह मन तम जारि॥७४॥एक हुतो धरणी धनिक सब सुख पूरणगेह॥छाँड़ि गयो वन गहवरनि, चिंतामणि संदेह७५

दोधक–संपति सुंदरि के सुख छाड़े ॥ जाइ महागिरि के पदमांड़े ॥ देखि मनै मन मोह्यो महाई ॥ चिंतामणि मग में तिहिपाई ॥ ७६ ॥

दोहा–चिंतामणि को पाइ कै, छूवै नहीं जु हाथ ॥ अनजानत ताके मते, छोड़िगयो नरनाथ ॥ ७७ ॥ कौनहुँ एक अभाग ते, चिंतामणि ते भागि ॥ पाई आगे काच मणि, सो लीनी पौ लागि ॥ ७८ ॥

दोधक–ता मणि हेतु कछू न विचारयो ॥ बालक ते बढ़ि यों धनडारयो ॥ निर्द्धन ह्वै करि वेंचन धायो ॥ पाईफजीहति वित्त न पायो ॥ ७९ ॥

दोहा–तैसे परमानंद लगि, राज तज्यो सुखकंद ॥ बड़ी फजीहति होइ ज्यों, सुक्खुन परमानंद ॥ ८० ॥ ताते तुम गृह जाहु नृप, सीखहु गुरु सों ज्ञान ॥ पुनि तुम सर्वस त्यागकै, जीतो जगत प्रमान ॥ ८१ ॥

राजा–हों नमुरयो वा बालते, कबहुँ कौनहूं कर्म ॥ अबहों कैसे मुरकिहों, राजपुत्र इहि धर्म ॥ ८२ ॥ राजाजी की शासना दान, प्रतिज्ञा भंग ॥ तोको करै मरै नहीं, श्वान सियार प्रसंग ॥ ८३ ॥ राजतज्यो सब बंधुजन, धन धरणी वर नारि ॥ और जो सर्वस त्याग है, मोसों कहो विचारि ॥ ८४ ॥

देवपुत्र–जाको राजा संग है, ताको तजि अनुराग ॥ पर्णकुटी खग मृगनि क्षिति, कैसो सर्वस त्याग ॥ ८५ ॥ यह सुनि राजा तजि गयो, पर्णकुटीतर खंड ॥ जाइ शिला तल

पौढ़ियो, मनमें बोधु अखंड ॥ ८६ ॥ देवपुत्र तहँई गयो जहँ राजा मतिवन्त ॥ देखि देवपुत्रहिं भयो, उर आनंद अनंत ॥ ८७ ॥

राजा—पर्णकुटी दै आदिमें, कीनो सर्वस त्याग ॥ छाँड़ो दंडकमंडलै, मृगज तुचा अनुराग ॥ ८८ ॥ छांड़ि छयो तिनहूँ तबै, महाराज मतिधीर ॥ देवपुत्र तहँई गयो, जहँ नृप धरे शरीर ॥ ८९ ॥

राजा—दण्ड कमंडलु मृगतुचा, एऊ तजे सुभाग ॥ दुख सुख क्षुधा पिपाश छिन, कैसे सर्वस त्याग ॥ ९० ॥

विवेक—देवपुत्र तहँई गयो, जहँ नृप द्वंद्वज हीन ॥ यथा लाभ सन्तोष हो, सर्वस त्याग प्रवीन ॥ ९१ ॥

देवपुत्र—जाते इंद्रिय व्याकुला, तासों तजि अनुराग ॥ तव कहिबो नरदेव मणि, साँचो सर्वस त्याग ॥ ९२ ॥

विवेक—जब लाग्यो देहे तजन, महाराज मतिधारि ॥ देवपुत्र तब बरजियो, बोल्यो वचन विचारि ॥ ९३ ॥

देवपुत्र—देहत्याग नहिं कीजई, कीजै चित्तहि त्याग ॥ चित्तत्यागते जानिबो, सांचो देही त्याग ॥ ९४ ॥

राजा ॥ दोधक—चित्त सरूप सु मोहिं सुनावो ॥ क्यों तजिये वहई समुझावो ॥

देवपुत्र—वासना चित्त सरूप है सांचो ॥ ताको अहंपद वीरज वाचो ॥ ९५ ॥

दोहा—चित्त अहंपदबीजको, कीजै पाश विनाश ॥ नृपवर तबहीं होइगो, सर्व्वस त्याग प्रकाश ॥ ९६ ॥

विवेक—इहि विधि सर्वश त्यागिके, भयो परमस पद लीन ॥ देवपुत्र उपदेश ते, सुनि प्रभु प्रगट प्रवीन ॥ ॥ ९७ ॥ तृष्णा कृष्णा षटपदी, भय भ्रमरनि मति मंडि ॥ को जाने कित उड़ि गई, हृदय कमलको छंडि ॥ ९८ ॥ राजश्री सुनि संपिनी, क्रोधादिक अहि लीन ॥ आवत उर गरुडध्वजै, कब ह्वैगई बिलीन ॥ ९९ ॥ अमित अविद्या राक्षसी, प्रेत सहित पाखंड ॥ राम निरंजन ररत मुख, उद-रिगई सतखंड ॥ १०० ॥

सुंदरी छंद—नैननि मीलनकै अघमोचन ॥ जाइ मि-ल्यो अपने पद सों मन ॥ संतत निश्चल ह्वैहि रह्यो तनु ॥ काढचउकीरि शिला तनुसों जनु ॥ १०१ ॥ सुंदरि ऐसिद-शा जब देखी ॥ आपने भाग दशा मनलेखी ॥ राज जगावन को मति कीनी ॥ सिंहनि नादनिसों मति भीनी ॥ १०२॥ कैसहुँ ध्यान विधान न छूटै ॥ अच्युत को रस अद्भुत लूटै ॥ देवज शामज शब्द सुनायो ॥ याक्रमहीं क्रम भूत-ल आयो॥१०३॥देवतनूज तहीं ढिग देख्यो॥मित्र मनो वच काय कै लेख्यो ॥ तेरे प्रसाद महाप्रभु पायो ॥ मो जयके यश भूतल छायो ॥१०४॥ और कछू अब जो उपदेशो ॥ पूरण ज्ञान महा मन लेशो॥जानिवे हों सुसबै अब जान्यो ॥

मोहिं मिटी सबकी पहिचानो ॥ १०५ ॥ आइ गए तबहीं सुरनायक ॥ संग लिये त्रिय को गणमायक ॥ सुंदरि नाचति वीन बजावति ॥ पंचमके सुर उत्तम गावति ॥ १०६॥ हाव विभाव प्रभाव करै सब ॥ मोह विधान थकी करि कै अब ॥ राजहि यों जग मोहन के रस ॥ क्योंकहि जात कहो तिन सों वस ॥ १०७ ॥

इन्द्र उ० ॥ साधु अगाधु चल्यो नृप नायक ॥ देवपुरी अब है तुम लायक ॥ भाँतिनि भाँतिनि भोग करो सब ॥ देवपुरी अभिलाष करौ अब ॥ १०८ ॥

राजा ॥ देवपुरी को देवको, को भोगी को भोग ॥ हम सों प्रगट सुनाइये, साधु असाधु जे लोग ॥ १०९॥ करि प्रणाम यह बात सुनि, इंद्र गए उठि धाम ॥ रानी मनसुख पाइयो, सफल भए मन काम॥११०॥देवज को तनु छाँड़िकै, चूड़ाला धरि रूप ॥ गई प्रगट जहँ शोभियै, भूतल भूषण भूप॥१११॥

राजा ॥ दोधक—रानि विलोकि कह्यो नृपसांई॥सुंदरिह्याँ किहि कारण आई ॥ पूजि सबै तुव चित्त की इच्छा ॥ और कछू अब देहि न शिच्छा ॥ ११२ ॥

रानी—जानु न देवजको वपु मेरो॥मैं प्रभु संग न छाड़िहौं तेरो ॥ मैं जुदई ढिठई तजि लाजा ॥ सोक्षमिवी विनती यह राजा ॥ ११३ ॥

राजोवाच ॥ नाराच—उधारि नर्कते सुधारि दिव्यलोक

तेदियो॥अलभ्य लाभ मोहिए अदृष्ट दृष्ट देखियो ॥ अशेष भावसों विशेष देवि सेव तैं करी ॥ भई न है न होइगी न तो समान सुंदरी ॥ ११४ ॥

दोहा—तो प्रसाद मैं जीतियो, सुंदरि सब संसार ॥ माँगि सुलोचनि और कछु, अपने चित्त विचार ॥ ११५ ॥

रानी—जग जीत्यो त्यों जीतियै, वैरी नरक अजीत ॥ लोक लोकगावै जगत,श्रीविदेहको गीत ॥ ११६ ॥ तेरो मत धरिहों उरसि, करों निषेध न हान ॥ अमल कमल लोचनि सदा, मन प्रतिबिंब समान ॥ ११७ ॥

विवेक॥मदिरा—बूड़ि गई वर लोक चतुर्दश भूतललै यश बेलिधई ॥ देखत देवि भली पति प्रेम पतिव्रतकी यह रीति नई ॥ लोक जिताई विलोकि जिताइ विदेहकी कीरति जीति लई॥लोक पुरंदर लैवह सुंदरि मंदरते निज देश गई ११८॥

दोहा—दशहजार वरषैं हराषि, कीनो भोग अशोक ॥ राजभार दै पुत्र शिर, गये निरंजन ओक॥११९॥ऐसे तुमहूं जीति जग, राज्य करो संसार ॥ मिलता अपने रूपको, लागत नाहीं बार ॥१२०॥भयो जीवजड़ शुद्ध अति, बहु विवेक उपदेश॥ तुम प्रताप जो शत्रु तुव, राजा वीर दिनेश ॥ १२१ ॥

वीरसिंह—पाइ शुद्धता जीव तब, कीनो कहा विचार॥ कहियै हमसों करि कृपा, सुनि समुझे संसार ॥ १२२॥ राजा

रानीकी कथा, कहै सुनै नर कोइ ॥ संपति पावै लोक इहि, मरे परमगति होइ ॥ १२३ ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां विवेक जीवसम्बाद वर्णनं नामषोडशः प्रभावः ॥ १६ ॥

---

दोहा—वेद सिद्धि सों जीवसों, सप्तदशैं सम्बाद ॥ अज्ञान ज्ञानकी भूमिका, वर्णत जाइ विषाद ॥ १ ॥ इहि उपदेश विवेकके, जीव भयो जब शुद्ध ॥ श्रद्धा शान्ती आइ जहँ, बैठे राज प्रसिद्ध ॥ २ ॥

श्रद्धा—हाथ भयो मन जीवको, जानाते बड़भाग ॥ अब विवेकसों जीवसों, बाढ़ैगो अनुराग ॥ ३ ॥

शान्ति॥रूपमालाछंद—दुष्ट जीवन को जहाँ प्रभु करत आसु विनाशु ॥ साधु लोगनि को जहाँ अवलोकियै वशुवाशु ॥ दाससेवत ईश को जहँ प्रेमसों दिन राति॥जानियै तहँ नित्य आनँद को उदै बहुभाँति ॥ ४ ॥

दोहा—दोऊ प्रभु जब एक रस, जानै शांतीऐन ॥ गई तबै हरि भक्ति पै, वेद सिद्धि को लेन ॥ ५ ॥ महाराज तुमको सखी, बोलत है करि प्रीति ॥ मनसा वाचा कर्मना, वेगि चलौ रसरीति ॥ ६ ॥

वेदसिद्धि—निष्ठुर प्रीतम त्यों सखी, क्यों करि हो अवलोक ॥ इत युवती जो जिनि दयो, मोहि विरहमय शोक॥७॥

देवी—यह अपराध अगाध सब, महामोह को जानि ॥
दोष कछू न विवेक को, काल वाल अनुमानि ॥ ८ ॥

शान्ती—पियदेवीहि उराहनो, ऐसे थल जिनि देहु ॥
तून कछू जानाति सखी, हों जानाति कै देहु ॥ ९ ॥

गीतिका—शील है कुलनारिको यह आपदा सहिलेइ ॥ काल काटै काल पै नहिं नेकु काटन देइ ॥ हाव भाव विभाव करि कै वश्यकै पतिलेइ ॥ जाइयै सुप्रोध पुत्रहि नित्य आनँद देइ ॥ १० ॥

दोहा—वेद सिद्धि हँसि उठि चली, शांती जननी साथ ॥
जहाँ विवेक विशेष मति, कहत जीव सों गाथ ॥ ११ ॥

शान्ती ॥ रूपमालाछंद—वेद सिद्धि करे प्रणामहिं ईश-नेकु निहारि॥मातु है यह ज्ञानदा अब चित्त माहँ विचारि॥ देवि सों जननीनिशों दिन दीह अंतर मानि ॥ मातु बंधति मोह बंधन देवि काटति जानि ॥ १२ ॥

केशव—मनहीं माँझ विवेक को, करै प्रणाम अशेष ॥
अवनत मुख बैठी अवनि,वेदसिद्धि शुभ वेष ॥ १३ ॥

जीव—माता कहिये दिवस बहु, कीने कहाँ व्यतीत ॥
वेद ग्रहनि मठ शठनि मुख, सुनि मुनि मानसमीत ॥ १४॥
तत्त्व तुम्हारो तब तहाँ, काहु शम दवो मात ॥ नहि नहिं द्राविड़ दाक्षिणी, अक्षर स्वच्छबचात ॥ १५ ॥

भुजंगप्रयात—धरें एनचर्मस्सदा देह सोंहैं ॥ जहाँ अग्नि

तीनो द्विजातीनि मोहैं॥ चहूँ ओर यज्ञ क्रिया सिद्धि धारी॥ चलेजात में वेद विद्या निहारी॥ १६॥

दोहा—मोसों बूझी बात तिनि, कौने हो तुमलीन॥ मैं उनको उत्तर दयो, सुनियै नित्य नवीन॥ १७॥

सरस्वतीछंद—नारायणादिक सृष्टि है जिनते प्रसिद्ध प्रवीन॥ निर्लेप निर्गुण ज्योति अद्भुत ताहि में मनदीन॥

दोधक—ज्योति निरीह निरंजन मानी॥ तामहिं क्यों ऋषि इच्छ बखानी॥ क्यों तिहिते भव भेदहि जानो॥ ईश अकर्त्तहि जो जिय मानो॥ १८॥

विवेक॥ दोहा—यज्ञहु की विद्या भई, निपट कुतर्कनि लीन॥ होम धूम ते मलिन तनु, यद्यपि हुती प्रवीन॥१९॥

रूपमालाछंद—ज्योति अद्भुत भावते भए विष्णु पूरक मानि॥ मायाहि त्यों अवलोकियो जग भयो मायकु जानि॥ जो कहों वह जानिये जड़ क्यों करै जग जोइ॥ पाइ चुम्बक तेज ज्यों जड़ लोह चेतन होइ॥ २०॥

दोहा—ताते यज्ञनिकी सखी, जानो जगत प्रकाश॥ जो फल दीजै ईश को, तौ तबहीं भव नाश॥ २१॥ यह सुनि तब हों उठि चली, ता यज्ञनि की सृष्टि॥ एक देश तिथि परिगई, मीमांसा मम दृष्टि॥ २२॥

रूपमालाछंद—कर्तृ कर्म विभाव को अधिकार भोजन पाइ॥ देखि अंगन सों मिली उपदेश देति बनाइ॥ मोहिं

पूछि उठी कहौ तुम कर्तृ कौन विचार ॥ मैं कह्यो उनसों वहै सब उत्तरनि को सार ॥ २३ ॥

दोहा–अन्ते वासिनि सुनतहीं, तन मन पायो मोद ॥ देखि परस्पर तब करयो, मेरो अति अनुमोद ॥ २४ ॥

हीर–एक जीव अंध एक जगतसाखि कहतहैं ॥ एक काम सहित एक नित्यकाम रहित हैं ॥ एक कहत परम पुरुष दंड दान लीनहै ॥ एक कहत संग रहित क्रिया कर्म हीनहै ॥ २५ ॥

दोहा–विदामाँगि तबहीं चली, हों तिनते अकुलाइ ॥ देखी विद्यातर्क की, बहुत शिष्ययुत जाइ ॥ २६ ॥

रूपमाला–एक विश्व विशेष वस्तु विकल्पना जिय जानि ॥ एकनाथ परायना अरु वाद वृद्ध बखानि ॥ एक थाप तु आपने परपच्छ दोष वितानि ॥ एक मायहि ईश सों कहैं एक चित्त प्रमानि ॥ २७ ॥

दोहा–तिनिमो बूझी देवि कहि, कौनहिं हौ तुम लीन ॥ यह सुनि मैं उत्तरदयो, उनको वहै प्रवीन ॥ २८ ॥ उन मोसों उपहाससों, बात विचारि कहीसु ॥ विश्वहोत परमानते निर्मितकारण ईशु ॥ २९ ॥ क्यों अविनाश अरूप सो, करिकै रूप प्रकार ॥ अविनाशी सो करत अब, युक्तायुक्त विचार ॥ ३० ॥

विवेक–एक तर्के विद्या सबै, यहौ न जानत मूढ़ ॥ मू-

ढ़ौ तौलौं शश्व सो, जौलौं शत्य न गूढ़ ॥ ३१ ॥ भ्रमही ते जो शुक्ति में, होति रजतकी युक्ति ॥ केशव संभ्रम नाश ते प्रगट शुक्ति की शुक्ति ॥ ३२ ॥ रजत जानि ज्यों शुक्ति में, भ्रमते मनु अनुरक्त ॥ भ्रम नाशे ते रजत हूँ, छीवत नहीं विरक्त ॥ ३३ ॥ अविकारी जगदीश है, भ्रमही ते सविकार ॥ केशव कारी रजनि में, सूझत सर्प विकार ॥ ३४ ॥

रूपमालाछंद–निकलंक है सुनिरीह निर्गुण शान्त ज्योति प्रकाश ॥ मानिहै मन मध्य ताकहँ क्यों विकार विलाश ॥ होति विष्णुपदी न म्लान कलिकल्मषादिक पाइ॥ राह छाह छुवै न श्यामल सूर क्यों कहिजाइ ॥ ३५ ॥

देव्यु ॥ दोहा–गहो गहो तब सबनि मिलि, मोसों कह्यो रिसाइ ॥ गई दण्डकारण्य हों, भाँतिनिते अकुलाइ ॥ ॥ ३६ ॥ लई राम रक्षा तबै, हों बचाइ मुनिसाखि ॥ कंठ लगाइ लई लपकि, गीता के गृह राखि ॥ ३७ ॥

गीतो ॥ अप्रमाण मन तुम करे, माता जे जग जन्तु ॥ नरक परहिं गे जन्म बहु, जिनको नाहीं अन्तु ॥ ३८॥ इहि विधि हों अपनी कथा, कहों कहाँ लगि ईश ॥ तुम अंतर्यामी सदा, जानत हौ जगदीश ॥ ३९ ॥ सुनि सुनि देवी के वचन, उर आयो कछु ज्ञान ॥ प्रश्न करी तब ज्ञान की जिहिं उपजै विज्ञान ॥ ४० ॥

जीवउवाच—ज्ञान ज्ञान की भूमिका, हमहिं सुनाउ सुजान ॥ सुनत नशै अज्ञान सब, जाते बाढ़े ज्ञान ॥ ४१ ॥

देवउ ॥ जीव जुजाग्रत एक अरु, दूजो जाग्रत जानु ॥ महाजुजाग्रत तीसरी, जाग्रत स्वप्न बखानु ॥ ४२ ॥ स्वप्न पाँचई है समुझि, स्वप्नो जाग्रत षष्ठ ॥ प्रभा सुषुप्ता सातई सुनो सदा मतिनिष्ठ ॥ ४३ ॥ सात भाँतिको मोह यह मिले अनेक प्रकार ॥ बाँधि महाप्रभु आनिये, सोहतुभाँति अपार ॥ ४४ ॥ सहित वासना गर्भ में, प्रथम मोह अज्ञान॥ बीजे जागत युक्त यह, ताको नित्य बखान ॥ ४५ ॥ गर्भ थंभ वरु आपनो, कहि जानत मन मोह ॥ महा जाग्रत ज्ञान है, पूर्व वासना छोह ॥ ४६ ॥ सोहों जाको यह सबै हों प्रभु ए सब दास ॥ महाजाग्रत मोह यह, वर्णतकेशवदास ॥४७॥ तन्मय ह्वै कै करत है, मन अभिलाष विलाश ॥ जानो चौथो नाम यह, जाग्रत स्वप्न प्रकाश ॥ ४८ ॥ समुझाये समुझै हिये, भूलि जाइ पुनि चित्त ॥ स्वप्न जाग्रत मोह की, छठी भूमिका मित्त ॥४९॥ आया पर नहिं जानई, कहै और की और ॥ यहै सुषुप्ता सातई, मोह कहत शिरमौर ॥५०॥ ज्ञान ज्ञानकी भूमिका, मैं वरणी सविशेष ॥ कहों ज्ञानकी भूमिका, सात सुनो शुभ वेष ॥५१॥ प्रथम शुभेच्छा जानवी, पुनि सुविचार न आन ॥ तीजी है तन मान सा, केशवराइ प्रमान ॥ ५२ ॥ चौथी सत्त्वापत्ति पुनि-

अशंशक्ति को जानि ॥ छठी अर्थ आभावना, सप्त तुर्यको मानि ॥ ५३ ॥ श्रवण मूढ़ जौ हौं रहों, बूझो शास्त्र सुसाधु॥ याही सों सब कहत हैं, शुभ इच्छातम बाधु ॥५४॥ इच्छायुत वैराग को, करै जु चित्त विचार ॥ सदाचारको वेदमत, यह विचारनाचार ॥ ५५ ॥ अति विचार ते होति है, इंद्रिय कर्म विरक्त ॥ सूक्षम रूप हिये धरे, तन मानसा प्रसक्त ॥५६॥ सूक्षम रूप प्रकाशते, महा शुद्ध मन होत ॥ शुद्ध सत्व हिय आवई, सत्वापत्ति उदोत ॥ ५७ ॥ केशव सत्वापत्ति ते, छूटि जात सब संग ॥ झूठो जानै जगतको, आसंशक्ति भुअंग ॥ ५८ ॥ रमै आतमा राम मन, दुख सुख भूलहि चित्त ॥ परइच्छा इच्छा करै, छठी भूमिका मित्त ॥ ५९ ॥ तुर्यावस्था सातई, जाते जीवनमुक्त ॥ ताते ऊपर होति है, अति विदेहता युक्त ॥ ६० ॥ सुनि विदेह की युक्ति जग, राज्य कर्‌यो प्रहलाद ॥ तैसे तुमहूं शुद्ध मन, राज्य करो अविषाद ॥ ६१ ॥

राजावीरसिंहोवाच—एक भूमिका दूसरी, तीजी आवै कोइ ॥ कालवश्य भयो बीचहीं, ताकी का गति होइ ॥ ६२ ॥

केशव ॥ रूपमाला—लोक लोक रमै विमान चढ़्‌यो बढ़्‌यो बहुरंग ॥ मेरु मंदर भूमिमें सुर सुंदरी बहु संग ॥ कर्म उत्पन्न है शुभ पंडितनिके गेह ॥ धर्म शास्त्र पढ़ै रटै बहु ज्ञानही सह नेह ॥ ६३ ॥

दोहा—केशव पूरण ज्ञान ते, परिपूरण विज्ञान ॥ चिदानंदके रूपसों, जाइ लगो मतिमान ॥ ६४ ॥

इति श्रीचिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां अज्ञान ज्ञान चतुर्दश भूमिका वर्णनं नाम सप्तदशःप्रभावः॥१७॥

---

दोहा—जीवउवाच—क्यों विदेह की रीति सों, राज्य करचो प्रहलाद ॥ देवी हमैं सुनाउ ज्यों, ज्ञान बढ़ै अविषाद ॥ १ ॥

देव्युवाच—हिरण्यकश्यपु हति प्रभु, जब भए अंतर्ध्यान ॥ उपज्यो उर प्रहलाद को, शोक विलास प्रमान ॥ २ ॥

प्रह्लाद उवाच—नमो नारायणाय यह, मंत्र बसो मम चित्त ॥ केशवदास अकाश ज्यों, सदा बसत सब चित्त ॥ ३ ॥ केशव अबहों विष्णु ह्वै, करों विष्णु की सेव ॥ विष्णु भये विनु विष्णुकी, सेवा निःफल देव ॥ ४ ॥

रूपमालाछंद—विष्णुह्वै पुनि विष्णु मूरति को हिये महँ आनि ॥ सर्व भावनि सर्वथा करि पूजियो हरिमानि ॥ राति द्योस मनो मई हरि सेव सो रतिमंडि ॥ राज काजनि छाँडिकै अरु और ग्रंथनि छंडि ॥ ५ ॥ देशके अरु ग्राम केशव लोग एक प्रकार ॥ विष्णु भक्त भए महाचित माहँ हीन विकार ॥ देवलोक प्रसिद्ध केशव ह्वै गई यह बात ॥ क्षीरसागर को गए सब देवता अवदात ॥ ६ ॥

देव०—दोधकछंद—हौ प्रभु देवनि के रखवारे ॥ देव वि-

दूषण मारनि हारे ॥ होत जुदैयत भक्त तुम्हारे ॥ देवनिपै तेइ जात न मारे ॥ ७ ॥

श्रीविष्णु–देव विषाद तजो जिय भारे ॥ भक्त सदा प्रहलाद हमारे ॥ दैयत भक्त अभक्त सदाई ॥ मोकहँ जानहु देव सहाई ॥ ८ ॥ श्री भगवंत जहाँ पगुधारे ॥ आपु तहाँ प्रहलाद विचारे ॥ विष्णुहिं देखतहीं सुख पायो ॥ पूरणकै बहुधा गुण गायो ॥ ९ ॥

प्रह्लाद ॥ रूपमालाछंद–नाथ नाथ विनाथ नाथ अनाथ नाथ सुसिद्ध ॥ देव देव विदेव देव अदेव देव प्रसिद्ध ॥ लोकपालकपालहो सबकाल काल मुरारि ॥ देहु जू वर विश्वनायक चित्त वृत्ति विचारि ॥ १० ॥

दोहा–सुरकुल कमल दिनेश सुनि, दितिकुल कमल हिमेश ॥ देहु देहु नाइकु निरखि, चित्त वृत्ति लवलेश ॥ ११॥ दास चित्त चातकहि प्रभु, बोलि उठे घनश्याम ॥ माँगि सुमति प्रह्लाद वरु, जासों तुमसों काम ॥ १२ ॥

प्रह्लादउवाच–सुनि सर्वग सर्वज्ञ निज, नित्य सत्य सुवेस ॥ सबते नीको होइ कछु, सो दीजै उपदेश ॥ १३ ॥

श्रीविष्णु ॥ परम भक्त प्रह्लाद सुनि, सरस विष्णुपद इष्ट॥ परमानँद मय देखि पुनि, परमानँद की सृष्टि ॥ १४ ॥

दे॰यु॰–विष्णुहि होत अदृष्ट पुनि, तबहीं श्रीप्रह्लाद ॥ पद्मासन सों बैठिकै, करि विचार अवदात ॥ १५ ॥

प्रह्लादउ०—जाहि विश्वमें हों नहीं, अरु ब्रह्मा परयन्त ॥ सबमेंहै सब बाहिरो, होतिहि रूप अनन्त ॥ १६ ॥

दोधक—चंचल जौन प्रमान जु देखो ॥ रूप न आपनो रूपक लेखो ॥ शब्द न गंध न है रस नीको ॥ हेरतु वारस लागत फीको ॥ १७ ॥ निर्ममशब्द सबै तन शोभै ॥ भूलिहुँ इंद्रिय लोभ न लोभै ॥ बाहर भीतर व्यापक जोहै ॥ एक निरीह निरंजन सोहै ॥ १८ ॥ मोमहिंहै जुहों जामें रहोंजू ॥ आपुहि आपने काम लहोंजू ॥ दूसरे और न जाकहँ बूझों ॥ एक चिदानँद रूप अरूझों ॥ १९ ॥

दोहा—चिदानंद संभोगमय, एक रूप अति शुद्ध ॥ अखिल दृष्टि ऊपर लसै, मेरी दृष्टि प्रबुद्ध ॥ २० ॥

दंडक—जाको नाहीं आदि अंत अमित अवाधि युत अकल अरूप अज चित्तमें अतुर है ॥ अमर अजर अज अद्भुत अवर्ण अग अच्युत अनामय सुरसना ररतु है ॥ अमल अनंग अति अक्षर असंग अरु अस्तुत अदृष्ट देखिवेको परसतुहै ॥ विधि हरि हर वेद कहत जोसि सोसि केशौराइ ताकहँ प्रणामहि करतुहै ॥ २१ ॥

दोहा—महामोह अहिराजसों, कोप कंचुकनि गात ॥ आवतहीं गरुड़ध्वजै, जान्यो नहीं बिलात ॥ २२ ॥ निपट अहंकृत पक्षिणी, मम उर पिंजर छाँड़ि ॥ कोजाने कित उड़ि गई, तृष्णा राजनि खाँड़ि ॥ २३ ॥

देव्युवाच ॥ दोहा–यहि विधि श्री प्रहलाद सब, केशव चित्त विचारि ॥ चिन्तत रूप समाधि वित, रहे शरीर विसारि ॥ २४ ॥

रूपमाला–गिरिशृंगसे प्रभु चित्त कारक चित्रियो जनु चित्र ॥ तहँ वर्ष पंच सहस्र वीति गए सुनो मखमित्र ॥

दोहा–भयो तबै पातालमें, महाराज कुलदेव ॥ भयो विष्णुके चित्तमें, कछू सोचको लेश ॥ २५ ॥

श्रीविष्णु ॥ तोटकछंद–प्रभुको प्रहलादहिलीन भए ॥ दिति सून सबै इहि पंथ रए ॥ निर्वेद भये दिवि देवनिको ॥ अस्तभयो शशि सूरजको ॥ २६ ॥ विनु सूरज क्यों भुवलोक लसें ॥ भुवलोकनसे सब लोक नसें॥ हम एक इहाँ केहि भाँति बसें ॥ अध ऊरधहूं जलजाल ग्रसें ॥ २७ ॥

दोहा–हमको देवी शासना, सुनियतहै इतिरीति ॥ रक्षहु जग आकल्पलों, दुष्ट अनेकनि जीति ॥ २८ ॥

देव्युउ० ॥ रूपमाला–चित्त मध्य विचारियो हरि सर्व देव समेत ॥ पक्षिराज चढ़े गए प्रहलाद भक्त निकेत ॥ चौंर ढारत सिंधुजा जय शब्द बोलत सिद्ध ॥ नारदादिक विप्र मान अशेष भाव प्रसिद्ध ॥ २९ ॥

श्रीविष्णुउ० ॥ दोहा–परमभक्त प्रहलाद तुम, संतत जीवनमुक्त ॥ देह त्याग यह काल सुनि, तुमको नाहीं युक्त ॥ ३० ॥ राजदयो आशिष दयो, नारायण सविशेष ॥ सूरज

शशि जौं लगि रहैं, तौलौं राज अशेष ॥ ३१ ॥ राज्य कर्‍यो प्रह्लाद यों, अहंकार को छाँड़ि ॥ त्यों तुमहूं या लोक में, राज्य करो अरि खांड़ि ॥ ३२ ॥

वीरसिंह—लीन परमपदसों हुती, पूरण दृष्टि विशुद्ध ॥ फिरि तब ह्वाँतें बूझिये, कैसे होहिं विरुद्ध ॥ ३३ ॥

केशव ॥ शुद्ध वासना रहति है, इहई बात प्रमान ॥ निज आतम सम सब लखत, नीचरु ऊंच महान ॥ ३४ ॥ वाते जीवनमुक्त सम, फिरत जगत सानंद ॥ चाहे तज्यो शरीर को तबहिं तजै नृपचंद ॥ ३५ ॥

इति श्रीविज्ञानगीतायां प्रह्लाद चरित्र वर्णनं नाम अष्टदशःप्रभावः ॥ १८ ॥

---

दोहा—उनईसेमें वर्णिवो, वलि को अतिविज्ञान ॥ ब्रह्म भक्त हरि भक्त को, कहिबो सबै विधान ॥ १ ॥ ज्यों साध्यो वलि आपुही, त्यों साधो विज्ञान ॥ कहियै माता करि कृपा वलि विज्ञान विधान ॥ २ ॥

देव्यु० ॥ सुंदरीछन्द—पुत्र विरोचनके वलि दानव ॥ वंदत ताहि सुरासुर मानव ॥ ख्यालहिं लोक विलोक लये सब ॥ एकहि छत्र त्रिलोक छए तब ॥ ३ ॥ भक्तिके वश्य करे हरि श्री हरु ॥ दैयतु भूतल स्वर्ग महाभरु ॥ राज्य अकंटक तीनिहुँ लोकनि ॥ दैयतवास विदेशके ओकनि॥४॥

दोहा—वरषै दशकोटिक करचो, भलो राज्य बलिराज ॥ धर्म्म चल्यो चौंहूँ चरण, तिहूँ लोक सुखराज ॥ ८ ॥

रूपमालाछन्द—रत्न शृंग सुमेरु के पर बैठिकै इक काल ॥ बुद्धि वृद्धि भई हिये महँ भाँति भाँति विशाल ॥ बलि राज ॥ भोग मैं बहु भोगए, तिहुँ लोक को करिसाज ॥ तृप्ति होति न चित्त में यह कौनु है सुखसाज ॥ ६ ॥

दंडक—चलिकै विमान दिशि दिशिजसु मढ़ि मढ़ि बाढ़ि बाढ़ि युद्ध जुरि बैरी बहु मारे हैं ॥ केशौदास भूषण विधान परिधान गान भामिनी सहित तिहुँ लोकनि विहारे हैं ॥ जल दल फल फूल मूल षट रस युत व्यंजन अनेक अन्न खाइके बिगारे हैं ॥ तदपि न भागी भूख चित्त न विशुद्ध होत सकल सुगंध दुरगंध कैकैडारे हैं ॥ ७ ॥

देव्यु० ॥ दोहा—यह विचारि गुरु पै गये, कीनें विविध प्रणाम ॥ बात आपने चित्त की, कहन लगे गुणग्राम ॥ ८ ॥

बलिराजो० ॥ तारक—सुनियै चितदै यह बात महागुरु ॥ सब दूरि करे सुरलोकनिके सुर ॥ अब मो भत लीने चले हर श्रीहरि ॥ विधि वश्यकरे बहु यज्ञनि को करि ॥ ९ ॥ भय भागि हरी निदरचो सुरनायक ॥ और है जीतिबे को कोइ लाइक ॥ कहियै सुकृपा करि ताहि करों वश ॥ अति सोधकरों जगती अपने यश ॥ १० ॥

शुक्र—है इक देश विशाल महामति ॥ सब देशनि ऊ-

पर देश महाअति ॥ सूरज सोमको अस्त उदोतु न ॥ नित्य प्रकाश निशानिशहोतु न ॥ ११ ॥ है न तहाँ सरिता गिरि कूप न ॥ भूमि अकाश न सिंधु सरूप न ॥ काम न क्रोध न लोभ न मोह न ॥ बंधन पाप अपाप प्रबोध न ॥ १२ ॥

दोहा—राजा है ता देशको, सब समान सर्वज्ञ ॥ अजित अनन्त अमेय है, जानत नाहिं न अज्ञ ॥ १३ ॥ ताके मंत्री एक है, कर्त्तम कर्त्तु समर्थ ॥ प्रगट अन्यथा करन अरु, जानत अर्थ अनर्थ ॥ १४ ॥

बलिराजोवाच—नाम कहा ता देशको, मंत्री को कहि आसु ॥ कौन धाम वा राजको, मोते अजित प्रकासु ॥१५॥

शुक्र ॥ रूपमाला—आनंदमय वह देश है तिहुँलोक को अतिइष्ट ॥ राजा तहाँ द्विबल पूरण सर्व भाइ निदिष्ट ॥ मंत्री प्रभाव प्रसिद्ध है इहि नाम अद्भुत भेष ॥ कर्त्तार पालक विश्वबालक युक्ति शक्ति अशेष ॥ १६ ॥ शासना जिनकी भवैं शशि सूर बासर राति ॥ शेषनाग सदा रहैं धरणीधरें इक भाँति ॥ मेड़ छाँड़ि सकैं न सिंधु बहै निरंतर बायु ॥ छ्वैसकै काल न बीच प्राणनि क्षीणता बिनु आयु ॥ १७ ॥

सवैया—केशवदास अकाशमें शब्द अकाशन शब्द प्रकाशु न जानतु ॥ तेज बसे तरु खण्डनि में तरु खंडनि तेजनि को पहिचानतु ॥ रूप विराजत चित्रनि में परि चित्रन रूप चरित्र बखानतु ॥ त्यों सब जीवनि मध्य प्रभाव सुमूढ़ न जीव प्रभाव न मानतु ॥ १८ ॥

दोहा—जाकी सत्ता ते लगतु, साँचो सो संसार ॥ जैवै को तादेव नृप, कीजै चित्त विचार ॥ १९ ॥

वलिराजो—जौं दई प्रभुता सबै प्रभु है कृपालु सुभाउ ॥ मोहिं देहु बताइ सो थल वेगिदै जिहि जाउ ॥ कौन भाँति सुजीतिये प्रभु दीजिये समुझाय ॥ मंत्र यंत्र तपादिते तेहि माहँ चित्तलगाय ॥ २० ॥

शुक्र॥दोहा—ब्रह्म भक्ति हरिभक्ति प्रभु, कैसे होहिं प्रसन्न॥ सोईमति उपदेशिए, मन क्रम वचन प्रसन्न ॥ २१ ॥ ब्रह्म भक्ति कीने नृपति, उपजि परे हरिभक्ति ॥ ताते पहिलेही तुम्हें, हों सिखऊँ द्विजभक्ति ॥ २२॥

दोधक—विप्रनि की सब सीख सुनो जू ॥ ब्राह्मण ब्रह्म समान गुनो जू॥ देहु सबै इक दुःख न दीजे ॥ आशिषसो चरणोदक लीजे ॥ २३ ॥ छाँड़ि अहंकृत विप्रनि पूजो ॥ भूतलमें एइ देव न दूजो ॥ काम सबै तेहि पूजन पूजें ॥ ब्राह्मण पावहु पूजन दूजें ॥ २४ ॥

रूपमाला—निग्रहानुग्रह जो करे अरु देइ आशिषगारि॥ सो सबै शिरमानि लीजै सर्व्वथा मनुहारि ॥ जानि उत्तमविष्णुजू भृगु को धर्‍यो उर तात ॥ सर्वभाव अजेयता तिन पाइयो यह बात ॥२५॥ पंगु ब्राह्मण गुंग अंध अनाथ राज कि रंक ॥ अज्ञ होहि कि विज्ञ भेद न मानिये करि शंक ॥ पू-

जियै मन वचन कर्मनि प्रेम पुण्यप्रमान॥ सावधान ह्वै सेइए सव विप्र ब्रह्मसमान ॥ २६ ॥

दोहा–कहै भागवत मै असम, गीता कहै समान ॥ अप्रमान कौनहिं करौं,कौनहिं करों प्रमान ॥ २७ ॥

शुक दोहा–दोऊ वचन प्रमाण हैं, अपनो विषयनि पाइ॥ इह जानो हरि भक्ति पर, समुझो सुख सुखदाइ ॥२८॥ गायत्री संयुक्त हैं,सबै विप्र हरि भक्त ॥ वेद पुराणनि में कहे,चारोवि-प्र अभक्त ॥२९॥ तिन्हैं छाँड़ि संपूजिये, वामन ब्रह्म सरूप॥ कबहूं भेद न मानियै, विप्र होत युगरूप ॥ ३० ॥ श्रुति स्मृति शास्त्रनि सुनि समुझि,कर्म करै प्रतिकूल ॥ हरि पद विमुख जो विप्रहैं, नरकनि को अनुकूल ॥ ३१ ॥ पति संगा अपवित्र नृप, तिनिहूं को हित हेरि ॥ स्मृतिश्रुति शास्त्रनि करत हैं, ताकी निन्दा टेरि॥३२॥चारि कर्म युत विप्र कुल, जो कैसोई होइ॥सबही को गुरु सर्वदा,सबते पावन सोइ३३॥

वलिराजो॥ चारि कर्म ते कौन है, तिन ते होत अभक्त ॥ हम सों कहि समुझाइयै, जिय में ह्वै अनुरक्त ॥ ३४ ॥

शुक–हरि को हिय जानै नहीं, द्विजकर्मनि अनुरक्त ॥ जनक जननि कहँ देतदुख, माठा पत्य अभक्त ॥ ३५ ॥ इ-नको तूर न छाड़ियै, कीजै द्विज आशक्ति ॥ त्रिविध पाप मिटि जाहिं उर, उपजि परे हरिभक्ति ॥ ३६ ॥ अकल अ विद्या रहित है, श्रद्धायुत हरिभक्त ॥ साधो नवधा अंग सों, तजि सबसों आशक्त ॥ ३७ ॥ नव रस मिश्रित साधि नृप

नवधा भक्ति प्रमानु ॥ दानव मानव देवगण, भक्त कमल हरिभानु ॥ ३८ ॥ जीतहुँ अद्भुत श्रवण सों, सुमिरण करुणा जानि ॥ सहित युगुप्सा दासता, पाद भजन भय मानि ॥३९॥ वंदन वीर शृँगार सों, अर्चन सख्यसहास॥ रौद्र कीर्त्तन सम सहित, आत्मनिवेद प्रकाश ॥ ४० ॥

रूपमालाछन्द–दीन स्मर दीन वत्सल नाम नाम निदान ॥ कर्म अद्भुत भाव सों सुनि नित्य वेद पुरान ॥ छाँड़ि मानज मानसो उपमा न कीजै दास ॥ पाद सेवहु ब्रह्म को तजि सर्व भावनि त्रास ॥ ४१ ॥

दोहा–कीरति पठि नीरस कहै, रुद्र रूप मनु जीति ॥ मन जीते उर उपजि है, परब्रह्म सों प्रीति ॥ ४२ ॥

रूपमालाछन्द–काम क्रोधहि जीति कै मद लोभ मोह निवारि ॥ मित्र ज्यों हँसि मग्न आनँद अर्चि साजि शृँगारि ॥ रूप संवर संदि सों बहु आपुयो अनयास ॥ पाइ पूरण रूपको रमि भूमि केशवदास ॥ ४३ ॥

देव्यु० ॥ दोहा–शुक्राचारज के कहे, बलि साधी सब रीति ॥ शुद्ध भयो मन सर्वथा, बढ़ी ब्रह्म सों प्रीति ॥ ४४ ॥ तैसे तुमहूँ छाँड़ि भ्रम, होउ ब्रह्म सों लीन ॥ पावहु परमानंद ज्यों, संतत नित्य नवीन ॥ ४५ ॥

इति श्रीचिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां बलिचरित्र वर्णनंनाम एकोनविंशतितमः प्रभावः॥ १९॥

दोहा–सृष्टि वीज के वीज को, ताके वीजहि जानि ॥
॥ जीव३० ॥ कौन वीज ता वीजको, ताको वीज बखानि ॥ १ ॥

देव्यु–युक्त शुभाशुभ अंकुरनि, बीज सृष्टि को देहु ॥
भावाभाव सदानिमें, सुख दुखदा इह गेहु ॥ २ ॥

चंचरी–वीज देह को विदेह चित्त वृत्ति जानिए ॥ जाहि मध्य स्वप्न तुल्य सम्भ्रमादि मानिए ॥ दोइ वीज चित्तके सुचित्त है सुनो अबै ॥ एक प्राणस्पन्द है द्वितीय भावना सबै ॥ ३ ॥

रूपमालाछंद–चंद सूरहि चंद कै मग सुष्मनागतदीश ॥ प्राणरोधन को करै जेहि हेत सर्व ऋषीश ॥ चित्त शोधन प्राण रोधन चित्त शुद्ध उदोत ॥ व्याधि आदि जरे जरा युत जन्म मरण न होत ॥ ४ ॥

पादाकुल–यद्यपि तीरथ नीरनिसेवहु ॥ सकल शास्त्र मय देवनि देवहु ॥ यद्यपि चित्त प्रबोध न वोधिय ॥ तद्यपि चित्त निरोधन रोधिय ॥ ५ ॥ यद्यपि ज्ञान वियोग धरा बढ़्यो ॥ तबहूँ सोदर साथ सदा बढ्यो ॥ यद्यपि जर्जद शेष बखानिय ॥ तबहूं चित्त सुमित्त न मानिय ॥ ६ ॥

दोहा–दोइ वीज हैं चित्त के, ताके वीजनि जानि ॥ सो संवेद बखानिये, केशवराइ प्रमानि ॥ ७ ॥ वीजु सदा संवेद को, संविद वीज विधान ॥ संविज अरु संघात को छाँड़त हैं मतिमान ॥ ८ ॥ संविद को वितु बीज है, ताके

सत्ता होइ ॥ केशव राइ बखानियै, सो सत्ता विधि दोइ ॥ ॥ ९ ॥ एक सु नाना रूप है, एक रूप है एक ॥ एक रूप संतत भजो, तजियै रूप अनेक ॥ १० ॥ एक काल सत्ता कहै, विमति चित्त को ताहि॥एक वस्तु सत्ता कहै, चित सत्ता चित चाहि ॥ ११ ॥ ताकों बीजु न जानिये, जाकी सत्ता साधु ॥ हेतु जु है सब हेतु को, ताही को आराधु ॥ १२ ॥

सुंदरीछंद–संगुवे अर्थ अनर्थ बढ़ावत ॥ संगुवे वस्तु विचार पढ़ावत ॥ संगुवे भुक्त लताकहँ वारण ॥ ताते करौं प्रभु संगु निवारण ॥ १३ ॥

जीवउ०॥ दोहा–संशय तृणचपदाहिकै, देवि सुनो सुखदाइ॥ संग कहावतु है कहा, कहि माता समुझाइ॥१४॥

दोधकछंद–एक सुराज सुसंगु कहावै ॥ एक संग इह देह कहावै ॥ और वासना संग तजो जू ॥ जीवनमुक्त प्रभाव भयो जू ॥ १५ ॥

दोहा–नशे वासना गंधको, संग सबै नशि जात ॥ निशा नशे नशि जात ज्यों, निशिचरको संघात॥ १६ ॥

जीव–महामोह तम चंदके, तिनकी संगति ज्योति ॥ ता देही को देहकी, कहो कौन गति होति ॥ १७ ॥

देव्युवाच–संगनशै जिहि भाँति ज्यों,उपजै पाप अपाप॥ तिनि सों लिप्ति न होहिं ते, ज्यों उपलनि को आप ॥ १८॥

वीरसिंह—वेद कहै शिव सो सदा, सब विधि जीवनमुक्त॥ कहि केशव कैसे भयो, ब्रह्म दोष संयुक्त ॥ १९ ॥

केशव—अकस्मात जो अशुभ शुभ, उपजि परे कहुँ आनि ॥ तौ वह लिप्त न होइ जो, शिव कीनो यह जानि२०॥

वीरसिंह—महाप्रलय करतार को, कैसे बंधन होइ ॥ हम सों कहि समुझाइये, कहिय दोष क्यों होइ ॥ २१ ॥

केशव ॥ रूपमालाछंद—ईशको जगदीशको यह शासना सब काल ॥ मारि आशु अधर्म को करि धर्म को प्रतिपाल॥ पाप को तिहि हेत ते तिनि कर्‍यो आशु विनाश ॥ धर्म को जग मध्य में सुनि कीन पुंज प्रकाश ॥ २२ ॥

दोहा—दुहूं भाँति की शासना, मनोभाव भयमानि ॥ जौ न मानिये सर्वथा, प्रभु को देहु बखानि ॥ २३ ॥ प्रभु को कह्यो करै न यह, अधिकारीनि अधर्म ॥ ताते राखे लोक में, लोकाधिप को धर्म ॥ २४ ॥ देव जुरायो ईशको, रूप सुताहि प्रकाश॥तेहीते संसार को, ह्वैहै आशु विनाश २५॥ जैसे देवनि देवमणि, करत यदपि जगदीश ॥ तैसे अपने रूप को, जतन करो तुम ईश ॥ २६ ॥

जीवउ०—जो हरि भक्ति वियोग की, कैसे साधत साधु॥ कैसो तिनको रूप है, कहियै देवि अगाधु ॥ २७ ॥

देव्यु ॥ रूपमालाछंद—एक जीव प्रवृत्त एक निवृत्त जानि सुजान ॥ सर्व सों अपवर्ग सों रत होत हेत बखान ॥ हैं

कहाँ अपवर्ग केशव नित्य संश्रृति लोक ॥ स्वर्ग भोगनि भोगवै जगते निवृत्ति विलोक ॥ २८ ॥ स्वर्ग नर्कनि जात आवत को फजीहति होइ॥ आइये जिहि लोक ते नहिं जीव चारै कोइ ॥ आगिले मरिहैं मरत अब पाछिले परतच्छ ॥ मेटिये मरिबो बखानु निवृत्ति ये मतिअच्छ ॥ २९ ॥

दोहा—क्यों तजिये कुल राग अरु, क्यौं तजिये संसार॥ या बिचार ते होति है, प्रथम भूमिका चार ॥ ३० ॥

रूपमालाछंद—लोभ दंभ मदादि मान विमोह क्रोध विहीन ॥ वेद भेद विचार धारण ध्यान कर्महि लीन ॥ वस्तु सिद्ध प्रसिद्ध साधन साधिबे कहँयुक्त ॥ भूमिका यह दूसरी जब होइ जी अनुरक्त ॥ ३१ ॥

त्रिभंगीछन्द—निर्दै वहु बारनि करि निर्द्धारनि वस्तु विचारनि संसारनि ॥ फल फूल अहारी विपिन विहारी तजि विविचारी मतिवारनि ॥ तजि दुख सुख साथनि नाथ अनाथनि गुण गण साथनि श्रीनाथनि ॥ भ्रम भार अमीतनि मोह वितीतनि इंद्रिय जीतनि दिन बीतनि ॥ ३२ ॥

दोहा—पाइ तीसरी भूमिका, केशव होत प्रबुद्ध ॥ असंसंभ द्वै भाँति के, मो पै सुनि मति शुद्ध ॥ ३३ ॥

एक होइ साधारणे, दूजो संश्रृति जानि ॥ तिनके रूप प्रकार अब, तुम सों कहो बखानि ॥ ३४ ॥

रूपमालाछंद— भोगता करता न हों अब वाध वाधक

होन ॥ व्याधि आधि वियोग योग अभोग भोगनि कोन ॥ संपदा विपदा सबै सुख दुःख आवत जात ॥ एक पूरब कर्म ते भ्रमिये न कौनहुँ जात ॥ ३५ ॥

दोहा—इहसाधारण जानिबो, असंसंगु इत्यादि ॥ कहीं दूसरो चित्त दै, सुनिये देव अनादि ॥३६॥ चारि चहूं भीतर जजो, अधऊरधन दिशानि ॥ नाहीं अर्थ अनर्थ में, ना जड़ अजड़नि मानि ॥ ३७ ॥ जाकी प्रभा प्रकाशिये, अस्ति अनंत असाधु ॥ सबते न्यारो सर्वदा, असंसंगु सो साधु ॥३८॥

विजय—चित्त सुनाल के अग्रलसे बहु कंठव कष्ट विलास विलासे ॥ कारण कोमल पल्लव केशव दास संतोष सुबासनि वासे ॥ भूत असंग की तीसरि भूमि मिले अलि अद्भुत संशृतिनासे ॥ भूप विवेक हिए सरसी महँ मित्र विचार प्रकाश प्रकाशे ॥ ३९ ॥

दोहा—प्रथम भूमिका अंकुरै, दूजी होत प्रकाश ॥ फले तीसरी भूमिका, फल अद्भुत अविनाश॥४०॥ भासतुहै अद्वितीय उर, द्वैतनुसे अकुलाइ ॥ लोक विलोके स्वप्नवत, भूमि चतुर्थीपाइ ॥ ४१ ॥ तृतिया जाग्रत सम लसै, चौथी स्वप्न समान ॥ जानि सुषुप्तक पाचईं, भूमि विभाग प्रमान ॥४२॥ छूटि जातहै आपुते, ग्रंथि सुसब अनयास ॥ जीवन मुक्त दशालसै, छठी भूमि भ्रम नास ॥ ४३ ॥ सुवद सप्तमी भूमिका, निश्चल चित्त विलास ॥ चित्रदीपकी ज्योति तब

पूरण परम प्रकास ॥ ४४॥ अंतर बाहिर हीनहै, पूरण बाहिर अंत ॥ जल थल घट आकाश ज्यों, पूरण पूरणवन्त ॥ ४५ ॥ पाइ सप्तमी भूमिका, भक्ति न होत विदेह ॥ देवरूप स्वच्छंद जग, रहत विपिन अरु गेह ॥ ४६ ॥

जीव–हमको देवीकरि कृपा, कहो देवको नाम ॥ जिनको करि उच्चार मुनि, पल पल करत प्रणाम ॥ ४७ ॥

देव्यु ॥ भुजंगप्रयात–कहैं एक तासों शिवे शून्यएकै ॥ कहैं काल एकै महाविष्णु एकै ॥ कहैं अर्थ एकै परब्रह्म जानो प्रभा पूर्ण एकै सदा शून्य मानो ॥ ४८ ॥

दोहा–एक आतमा कहतहैं, एक कहैं चित भक्त ॥ इहि विधि नाना नाम जग, लसत सबै अनुरक्त ॥ ४९ ॥ अमित अमेय अरूपके, ऐसेहैं सबनाम ॥ मुनि भक्तनिहे गहि लए महाराज गुणग्राम ॥ ५० ॥ भक्ति योगकी भूमिका,इहिविधि साधन साधु॥होत पार संसारके, यदपि अनंत अगाधु॥५१॥

सवैया–पाइ पदारथ कुंभ निरै दिवि सुंडि त्रिधा वरुनी जनिऐजू ॥ कर्म अकर्म दियो बन जीभ पियास क्षुधा भवमें भनिऐजू ॥ लोक विभेदति वासना वासु दरी मनु दीरघमें गनिऐजू ॥ इच्छगजी मदमत्त बनी तनमें शर धीरजसों हनिएजू ॥ ५२ ॥

दोहा–जीवन इच्छहि छुरित मन, आवत कब जबदीन॥ इच्छा तजि जे चलतहैं,परम इच्छ परवीन ॥ ५३ ॥ तजे न

करिबो कर्म को,जब लगि जगत प्रकाश ॥ ह्वै जैहै जब एकता सहजै कर्म विनाश ॥ ८४ ॥

इति श्रीचिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां योगसप्त भूमिका वर्णनं नाम विंशातितमःप्रभावः ॥ २० ॥

---

दोहा—एकवीशमें वर्णिबो, महामोह परिहार ॥ उत्तर मनुको सृष्टिको, राम नाम निस्तार ॥१॥ अहंकार द्वै भाँति है, ताहि तजों केहि भाव ॥ कहो देव तुम करि कृपा, उपजै ज्ञान प्रभाव ॥ २ ॥

देवऊ०—तीनि भाँति त्रैलोक्य में, अहंकारके भेव ॥ द्वैशुभ संतत समुझिये, अशुभ तीसरो देव ॥ ३ ॥

रूपमाला—हों अरूप अमेय हों जड़ चेतनादिहु अंत ॥ शोभिए जग मध्य हों जग्र मोहिं मांझ लसंत ॥ भोगता करता न हों अब टोहिये सु उपाउ ॥ हों भयो जिहिते सुहों कि रहौं कि देहु कि जाउँ ॥ ४ ॥

अथ अशुभ ॥ देश ग्राम पुरीन को पति बड़ो है सुनरेश ॥ पुत्र मित्र कलत्र को प्रभु हों भलो शुभ वेश ॥ सूर हों सर्वज्ञ हों बलवान हों धनवान ॥ मोहिं पूजहु मो विना जग और को भगवान ॥ ५ ॥

दोहा—आदि अहंकृत द्वै भले, परमानन्द निकेत ॥ अहंकार जो तीसरो, सोई बंधन हेत ॥ ६ ॥ सात्विक राजस

तामसै, एकहोत गति धीर ॥ तजियै राजस तामसै, सतगुण भजिये वीर ॥ ७ ॥ सब मेरोई रूप है, सब को हों हितवन्त ॥ अहंकार कासों करों, तजि पूरण भगवन्त ॥ ॥ ८ ॥ जहों अहं मम जीतिहो, अखिल लोकमणिमित्र ॥ धूम धोर हरिसे तहीं, देखो अमित चरित्र ॥९॥ सकललोकए बसत हैं, अहंकार आधार ॥ ताहि नशतहीं नशत ज्यों, पटु प्रवोध भ्रमभार ॥ १० ॥

तारक—कबहूं यह सृष्टि महाशिव ते सुनि ॥ कबहूँ विधि ते कबहूँ हरिते गुनि ॥ कबहूँ विधि होत सरोरुह के मग ॥ कबहूँ जल अंबर ते कहिये जग ॥ ११ ॥ कबहूँ धरणी पल में मय पाहन॥कबहूँ जलमय मृण मै अरु कंचन॥१२॥ हरते विधि हैं कबहूँ विधिते हर ॥ हरते हरि जू कबहूँ हरि ते हर ॥ १३ ॥

दोहा—करियै करता मारियै, कबहूँ मारनिहार ॥ कबहूँ पालक पालियै, बिना नियम संसार ॥१४॥ पालक संहारक रवन, भक्षक भक्ष अपार ॥ सबहींको सब जानियै, बिना नियम संसार ॥ १५ ॥ पालक संहारक रचक, भक्षक रक्ष अपार ॥ सबही सबको होतहै, को जानै कै बार ॥१६ ॥ बड़ी फजीहति जगतकी, भाँति अनेक अरूप ॥ एक रूप तवते जुहै,अच्युत रूप अनूप ॥ १७ ॥

नृपवीरसिंह–ऐसोई जो जीवहै, अज निरीह निर्लेप ॥ कोजग वद्ध अवद्धहै, कीजै भ्रम विच्छेप ॥ १८ ॥

केशव–जगको कारण एक मन, मनको जीत अजीत ॥ मनको मन सुनि शत्रुहै, मनहींको मन भीत ॥ १९ ॥ मनको रूप अरूपहै, जैसोहै आकाश ॥ बढ़त बढ़ाए बुद्धि के, घटत घटाए आस ॥२०॥ मनकी दीन्हीं गांठि प्रभु, मनहीं पै छुर आउ ॥ ज्यों मल मलहीं धोइए, विषहीं विष सु उपाउ॥२१॥

वीरसिंह–संतत जीव चिदंश जग, पाप पुण्यके भोग ॥ कहो कौन को होत है, ज्यों समुझैं सब लोग॥ २२ ॥

केशव–जोई करै सुभोगवै, यह समुझो नृपनाथ ॥ स्वर्ग नर्क बंधन मुकुत, मानो मनकी गाथ ॥ २३ ॥

वीरसिंह–अंग भंग है देह को, पीड़ित देखिय देह ॥ मनको कैसे मानियै, मेटो यह संदेह ॥ २४ ॥

केशव मिश्र–जिनि जिनि अंगनि सों मिलै, करत शुभाशुभ चेतु ॥ भोग करत तिनहीं मिल्यो, सह संगति को हेतु ॥ २५ ॥ हरे हरे मनु ऐंचि कै, कीजै मन को हाथ ॥ इंद्रिय सर्प समान हैं, गारुड़ मन के साथ ॥ २६ ॥

सवैया–फूलत हो मुख देखि न भूलहु लाभु यहै भली बात सिखावो ॥ जौं ललकै अपमारग को मनु तौ दुखदै सतमारग लावो ॥ मूढ़न साथ परे फिरि हाथ न आई है नाथन माथ नशावो ॥ नो कुल को अवलोकि कै केशव बालन ज्यों मन क्यों न पठावो ॥ २७ ॥

दोहा—कौन तजै मन संग जो, कौन संग मन होइ ॥ सदा जीव उन संग है, जग परिपूरण सोइ ॥ २८ ॥

रूपमालाछन्द—जीव सों चिद्रूप सों, इतनो सुअंतर जानि ॥ विष्णु सों अरु जीव सों तितनो महामति मानि ॥ जीव सों मनसों तितो मनु सों विकलपनि जानि ॥ संकलपसों अरु सृष्टि सों तितनो विशेष बखानि ॥ २९ ॥

दोहा—क्रम क्रम सब को छाँड़ियै, ममता प्रभु मति युक्त ॥ अहंकार परिहार कै, हूजै जीवनमुक्त ॥ ३० ॥

जीवउ०—हम सों कहि समुझाइये, जीवनमुक्त विदेह ॥ जाहि सुने ते होइगो, शुद्ध भाव इहि देह ॥ ३१ ॥

देव्यु ॥ जीवनमुक्त लक्षण ॥ सवैया—लोक करै सुख दुःखनि कै जिनि राग विरागनि या महँ आने ॥ डारै उपारि समूल अहंतरु कंचन कांचन जो पहिचाने ॥ बालक ज्यों भवै भूतल में भव आपुनसे जड़ जंगम जाने ॥ केशव वेद पुराण प्रमाण तिन्हैं सब जीवनमुक्त बखाने ॥ ३२॥

विदेह लक्षण ॥ सवैया—देखतहूँ अनदेखतहूँ लिपि रूपक सेन सरूप को धावै ॥ आपु अनिच्छ चले परइच्छ को केशवदास सदापति पावै ॥ कर्म अकर्मनि लीन नहीं निज पायज ज्यों जल अंक लगावै ॥ ह्वै अति मत्त चिदानँद मध्यनि लोग सदेह विदेह कहावै ॥ ३३ ॥

हरिगीती—जीवन मुक्त विदेह के सुनि सकल लक्षण जानि-

ये ॥ छाँड़ि जगत मिथ्या सकल महात्यागी मानिये ॥ लोभ मोह मद काम क्रोध की कामना उपजै उरें॥ लोक अलोक विलोकत जे सब साधना समेत गुरे॥ सुनिये कछू अरु देखिये वाणी वस्तु बखानिये ॥ छाड़े जु मानि मिथ्या जगत महा-त्यागी मानिये ॥ ३४ ॥

केशव ॥ दोहा—यह सुनि सब झूठो लग्यो, दयो परमपद वित्त ॥ उपजी विद्या बोधमय, भूंलि गयो सुतमित्त ॥ ३५ ॥

नाराच—नशी कुबुद्धि राति निन्द कल्पना समेतहीं ॥ विमोह अंधकार गो पतालके निकेतहीं ॥ विभाति ज्ञान नित्यके विनोद लोभहे भयो ॥ प्रबोधको उदै विलोक ज्योतिवन्त ह्वैगयो ॥ ३६ ॥

दंडक—जैसे भट साजि सैन हाथलै हथ्यार रण भारे भारे अरिगण जीति जीते मनको ॥ मारतंडमंडलको भेदत अखंड मति भूलि जात पुत्र मित्र सब देवगनको ॥ तैसे सत संग श्रद्धा विवेक वैराग बुद्धि छाड़िके धरेई वेद सिद्धि सो साधनको ॥ केशौदास हरिकी भगतिके प्रसाद भयो जीवन मुकुत मिलि आतमाके जनको ॥ ३७ ॥

दोहा—जैसे बंधन हेत तन, क्षेत्र छुरिनिसे मारि ॥ बंधन काटे बंदि के, छूटे भगति विसारि ॥ ३८ ॥ तौलों तम राजै तमी, जौलौं नहिं रजनीश ॥ केशव ऊगे तरणिके, तसुन तमीन तमीश ॥ ३९ ॥ ऐसोह्वै जग में रहै, सबसों वैर

न नेह ॥ छाँड्यो चाहै जगत को, तबहीं छाड़े देह ॥ ४० ॥ यहि विधि सों हरिभक्ति करि, साधु होत सब भक्त ॥ सबै ब्रह्मचारी गृही, दान प्रशस्त विरक्त ॥ ४१ ॥

वीरसिंह—ऐसी ह्वै है जब दशा, तब तौ अति बड़भाग ॥ कौन भाँति बनवास बिन, घरहीं हरिसों राग ॥ ४२ ॥

केशव॥सवैया—निशि वासर वस्तु विचारहि कै मुख सांचु हिये करुणा धनु है ॥ अघ निग्रह संग्रह धर्म कथानि परिग्रह साधुनिको गनु है ॥ कहि केशव भीतर योगजगै अति बाहिर भोगनिसों तनु है ॥ मन हाथ सदा जिनके तिनके वनहीं घरहै घरही वनु है ॥ ४३ ॥

वीरसिंह ॥ दोहा—कठिन रीति यहऊ कही, घरहीं माँझ विरक्ति॥हमसनि पर ज्यों होइ त्यों, कहियै श्रीहरिभक्ति ४४॥

केशवमिश्र ॥ चंचरी—आदि देव पूजि पुंज रामनाम लीजई ॥ न्हान दान धर्म कर्म छद्म छाँड़ि कीजई॥सत्य बोलियै सदा विपत्ति संपदानि सो ॥ राज राज वीरसिंह चित्त शुद्ध होइ सो ॥ ४५ ॥

वीरसिंह॥दोहा—राम नाम को तत्त्वसब,हम सों कहो अशेष ॥ चित्त हमारो सुनतही, शुद्ध होत सविशेष ॥ ४६ ॥

केशवमिश्र—ऋषि वशिष्ठ सों विनय कै, बूझेहु हे मुनि मग्न ॥ राम नाम महिमा सुनहु, वीरसिंह शत्रुघ्न ॥ ४७ ॥

शत्रुघ्नउवाच–कहो वशिष्टकुल इष्ट मति, राम नाम को भेद ॥ जाहि सुने ते जाइगो, सबै चित्त को खेद ॥ ४८ ॥

वशिष्ठ उवाच–जब वेद पुराण नसैहैं ॥ जप तीरथ मध्य-बसैहैं ॥ सो उपदेश जुमारि किवारे ॥ तब कलि केवल नाम उधारे ॥ ४९ ॥

दोहा–मरणकाल कोऊ कहै, पापी सों भयभीत ॥ सुख-ही हरिपुर जाइगो, गावै सब जग गीत ॥ ५० ॥ राम नाम के तत्त्व को, जानत को न प्रभाउ ॥ गंगाधरके धरनिधर वाल्मीकि मुनिराउ ॥ ५१ ॥

केशवमिश्र–वीरसिंह नृपसिंह मणि, मैं वरणी हरिभक्ति ॥ जाहि सुने सहसा सुमति, ह्वै हैं पापविरक्ति ॥५२॥ जीत्यो मोह विवेक ज्यों, पाइ बोध को भेव ॥ त्यौंतुम जीतौ शत्रु सब, राजवीरसिंहदेव ॥ ५३ ॥

भुजंगप्रयात–लहै संपदा आपदा को नसावे ॥ सदा पुत्र पौत्रादिकी वृद्धि पावै ॥ पढ़ै बुद्धि वैराग्यकारी अभीता ॥ सुनावै सुनै नित्य विज्ञानगीता ॥ ५४ ॥

दोहा–सुनि सुनि केशव राइ सों, रीझि कह्यो नृपनाथ ॥ माँगि मनोरथचित्त के, कीजै सबै सनाथ ॥ ५५ ॥

केशवमिश्र–वृत्ति दई पुरुखानि की, देऊ बालनि आसु॥ मोहिं आपनो जानि कै, गंगा तट देउ बासु ॥५६॥ वृत्ति दई

पदवी दई, दूरि करो दुख त्रास॥ जाइ करो सकलत्र श्रीगंगा तट वस बास॥ ८७॥

इति श्रीमिश्रेकशवदासविरचितायां चिदानंदमग्नायां विज्ञानगीतायां एकविंशःप्रभावः ॥ २१ ॥

---

दोहा॥ अंक व्योम वसु भू वरष, पौष पक्ष उजियार॥ तिथि त्रयोदशी पूर्ण भा, शुभ गीता बुधवार॥ १॥ विदित देशका[1]रूषमें, छत्रधारि अवनीश॥ लेखत भयो वसंतऋतु आयसु लय निज शीश॥ २॥

[1] मलद

इति विज्ञान गीता समाप्ता॥

---

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.
खेमराज श्रीकृष्णदास
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-मुम्बई.

# जाहिरात।

# याज्ञवल्क्यस्मृति पद योजना

# मिताक्षरा भाषाटीका।

उक्तधर्मशास्त्र सम्बन्धी ग्रंथ महर्षि याज्ञवल्क्यजीने न्यायधर्म पूर्वक संसारकी मर्य्यादा स्थितीके हेतु तीनकाण्डोंमें रचनाकिया है. आचाराध्यायमें समस्त आचारविचारों की परिपाटी और जाति प्रबन्ध और उनका धर्म, व्यवहाराध्यायमें समस्त व्यवहारोंकीव्यवस्था तथा दीवानी फ़ौजदारी मुक़द्दमोंका नीत्यनुसार दण्डादण्ड निर्णय और प्रायश्चित्ताध्यायमें ब्रह्महत्यादि प्रायश्चित्तोंके निवारणार्थ विधि वर्णनकी है, इन्ही प्रमाणिक ग्रंथोंके आशयसे ताज़ीरात तथा सब प्रचलित ऐक्ट निर्मित होकर राजशासनमें परमलाभ दे रहे हैं और अब भी कचहरियोंमें उक्त ग्रंथ प्रमाणिक माना जाताहै, किन्तु यह ग्रन्थ केवल संस्कृतहीमें होनेके कारण सर्व साधारणको लाभ नहीं पहुँचासकताथा इसके गूढ़ाशय तथा न्याय रीतिको वेही लोग समझते थे कि जिन्होंने संस्कृतमें भलीभांति अभ्यास किया है. अतएव हमने उपरोक्त अभावको दूर करनेके निमित्त इस ग्रन्थकी टीका सरलहिन्दुस्थानी भाषामें पं०मिहिरचन्दजी (जोकि धर्मशास्त्रके अखण्डज्ञाताहैं) के द्वारा बनवाकर सुन्दर टैपके नवीन अक्षरोंमें छापकर प्रकाशित कियाहै टीकाकार महाशयने टीका भी ऐसी सरलकी है कि जिसको बहुतही थोड़ा पढ़ाहुआ मनुष्य भलीभांति समझकर न्यायानुसार कामकर सकताहै—और जो महाशय संस्कृताभ्यासीहैं उनको भी इस ग्रन्थकी टीका बहुतलाभ पहुँचा सकतीहै कारण कि प्रत्येक श्लोकका प्रथम पदच्छेद किया गयाहै तत्पश्चात् उनपदोंकी योजना कीगई है उसके पीछे तात्पर्य और उसका भावार्थ लिखा गयाहै, जिससे कठिनसे कठिन श्लोक और गूढ़सेगूढ़ अभिप्रायका आशय दर्पणवत् झलक उठाहै गूढ़ाशयोंके प्रगट करनेके निमित्त टिप्पणी भी कीगई है विशेषतः यहहै कि टीकाकारने तात्पर्य्यार्थमें अन्यान्य स्मृतियोंके उदाहरणों से श्लोकार्थ पुष्ट कियाहै जिससे अन्य ग्रंथके देखनेकी आवश्यकता नहीं रहती, उक्त न्यायधर्मोपयोगी पुस्तक समस्त राजा महाराजाओं तथा सेठ साहूकारों और सब गृहस्थोंको अवश्य अपने पास रखनी चाहिये, प्रायः शासनाधिकारी महाराजाओंको तो अवश्यही अपने कर्मचारियोंकेपास रखना योग्य है, इससे न्यायधर्मपूर्वक राज्य अतुल कीर्त्तिको प्राप्त होगा, यद्यपि ऊपरके अलंकारोंके मिश्रित करनेसे ग्रंथ बृहत् होगयाहै तिसपर भी मूल्य

# जाहिरात।

केवल ६ छः रु० रक्खागयाहै, उत्तम जिल्दबंधी है, आशा है कि सज्जन पुरुष शीघ्र उक्त ग्रंथके गुण ग्रहण करके मेरे परिश्रमको सफल करेंगे ॥

## श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत सटीक रामायण

### श्रीयुतपं० ज्वालाप्रसादकृतसंजीवनीटीका ॥

लीजिये महाशय! कविशिरोमणि तुलसीदासजीकी अपूर्व कविताका अक्षरार्थ भाषामृत भी लीजिये, सम्पूर्ण क्षेपकोंसहित और श्रुतिस्मृतिपुराणोंके अद्भुत दृष्टांतों सहित जिसमें सम्पूर्ण शंका समाधानका विवरण है, तुलसीदासजीका समग्र जीवनचरित्र, माहात्म्य, चतुर्दश वर्ष वनवासका तिथिपत्र और अष्टम रामाश्वमेध लवकुशकाण्ड भी अक्षरार्थ सहित सम्मिलितहै, गूढ़ार्थ, अक्षौहिणीकी संख्या, प्रश्नावली, भजनमाला, प्रभाती आदिके सिवाय परम मनोहर फोटोग्राफके विचित्र चित्र भी हैं, सूर्य्यवंशका वृक्ष और हनुमानूजीकी चित्रित प्रतिमाहै इन सबके सिवाय कठिन २ शब्दोंका बड़ा कोश भी लगाया गयाहै. ऐसी रामायण आजपर्य्यन्त अन्यत्र कहीं नहीं छपी देखतेही तन मन प्रसन्नहोगा मूल्य ८ रु० है जिल्द चित्रित सुनहरी परम मनोहर है ॥

## श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण.

### संस्कृत मूल और भाषाटीका सहित खुलापत्रा ॥

कविकुलतिलक आदिकवि महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण समग्र ग्रंथ माहात्म्य और अनुक्रमणिका टिप्पणी शंका समाधानसहित परमपुष्ट मोटे और चिकने कागजपर सुवाच्य मनोहर अक्षरोंमें छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुतहै-हिन्दोस्थानमें आजपर्य्यंत इसका ऐसा भाषानुवाद नहीं हुआथा इसकी टीका अत्युत्तम परम सुगम और ललित मनरंजन शब्दोंमें विद्वद्वर शिरोमणि श्रीयुत पं० ज्वालाप्रसाद मिश्रजीने अत्यन्तही उत्तम की है पद पदका अर्थ दर्पणवत् झलकायाहै सकल गुणआगरी नागरीकी पूरी लालित्यता सर्वांगरूपसे दरशायी है यह बालसे वृद्धतकको परमोपयोगी है कथा बांचनेवाले विद्वानो को इससे बहुतही लाभ प्राप्त होवेगा केवल अक्षरमात्रका बोध होनेसेही सज्जनजन इस रामायणका पारायण सहजमें कर सकैंगे और कथा बाँचकर धन यश लक्ष्मीके भागी होंगे ऐसा सुंदर मनोहर रमणीक ग्रंथ होनेपर भी सबके सुगमार्थ आश्विनशुदी १०तक

# जाहिरात।

मूल्य २० रु० ही रक्खा गया है डाक महसूल ३ रु० कुल २३ रु० भेज देनेपर समग्र ग्रंथ उनके मकानपर पहुँच जायगा पश्चात् मूल्य अधिक होगा ग्रन्थकी अद्भुत छबि और आन्तरिक विद्वता देखकर ग्राहकगण परम प्रसन्न होंगे ॥ ग्रंथ संख्या अ० ९०००० होगी.

# रामरसायन।

लीजिये पाठक! यह परमप्यारी रसिकबिहारीजीकी अलौकिक काव्यरचनाका बहुतही सुंदर ग्रंथ लीजिये. देखिये समग्र ग्रंथ परमरोचक दोहा, चौपाई, सोरठा इत्यादि छंदोंमें वर्णित है और सम्पूर्ण, ग्रंथ राम कथासे विभूषित है रामकथामृताभिलाषियोंको तो अत्यन्तही सौख्यप्रद है रामजन्म, राम विवाह, वन गमन, सीताहरण रामरावण संग्राम, रामराज्य, रामाश्वमेध, वैकुंठ गमन इत्यादि कथायें अत्यन्त विस्तारपूर्वक वर्णितहैं. मूल्य डाकव्ययसहित ४ रु०.

## मनुस्मृति.

### पं०केशवप्रसादप्रोफेसर आगरा कालेज कृत भाषाटीका सहित।

इस उत्तम ग्रंथका सान्वयभाषा अत्युत्तम हुआहै यह पुस्तक हिंदूमात्रको परमोपयोगी है, राजा महाराजा भी इसके अनुसार धर्म्म पूर्वक शासन करते हैं यह ग्रंथ देखनेहीके योग्यहै भाषा अत्यन्त सुगम और रसीलीहै. कीमत २॥ रु० और रफ कागजकी २ रु०

## पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

## खेमराज श्रीकृष्णदास

### श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखाना–मुम्बई.